BNHN401AET

आधुनिक हिन्दी काव्य

एन ई पी - 2020 पाठ्यक्रम पर आधारित

भारतीय भाषा हिन्दी (ILH- 2)

बी.ए. / बी. कॉम./ बी. एससी

(चतुर्थ सेमेस्टर के लिए)

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

Copyright © 2025, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
All right reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing form the publisher (registrar@manuu.edu.in)

Course : Adhunik Hindi Kavya
First Edition : August 2026
Copies : 1000
Price : 110/- (The price of the book is included in admission fee of distance mode students)

Course Coordinator

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Editorial Board/Editors

Prof. RishabhaD eo Sharma
Former Head, P.G. and Research Institute,
Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha,
Hyderabad
Consultant (Hindi), CDOE, MANUU

Prof. Shyamrao Rathod
Professor, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

Dr. Gurramkonda Neeraja
Associate Professor, PGRI,
DB Hindi Prachar Sabha, Chennai

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, CDOE, MANUU

Dr. Wajada Ishrat
Assistant Professor)Hindi(
CDOE, MANUU

Dr. L. Anil
Assistant Professor (Cont.)
CDOE, MANUU

Production

Prof. Nikhath Jahan, Professor (Urdu), CDOE, MANUU

Mr. P Habibulla, Assistant Registrar, Purchase & Stores Section, MANUU

Dr. Mohd Akmal Khan, Assistant Professor (C), CDOE, MANUU

Mohd Abdul Naseer, Section Officer, CDOE, MANUU

Shaik Ismail, UDC, CDOE, MANUU

Syed Faheemuddin, LDC, Purchase & Stores Section, MANUU

On behalf of the Registrar, Published by:

Centre for Distance and Online Education

Maulana Azad National Urdu University
Gachibowli, Hyderabad-500032 (TG), India
*Director:*dir.dde@manuu.edu.in*Publication:*ddepublication@manuu.edu.in
Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in
CRC Prepared by Dr. L. Anil, Faculty of Hindi, CDOE, MANUU
Printed at : Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

विषयानुक्रमणिका

संदेश		कुलपति	5
संदेश		निदेशक	6
भूमिका		पाठ्यक्रम–समन्वयक	7
क्र. सं.	**इकाई**	**लेखक**	**पृ.सं.**
1	सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय	डॉ. अनुज कुमार	9
2	जलियाँवाला बाग में बसंत	डॉ. अनुज कुमार	28
3	महादेवी वर्मा : एक परिचय	डॉ. आदित्य विक्रम सिंह	47
4	गीति काव्य	डॉ. आदित्य विक्रम सिंह	60
5	रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	71
6	रश्मिरथी	डॉ. सुपर्णा मुखर्जी	88
7	केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय	प्रो. गोपाल शर्मा	101
8	बसंती हवा	प्रो. गोपाल शर्मा	115
	परीक्षा प्रश्न पत्र का नमूना		128

लेखक विविरण

डॉ. अनुज कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, नागालैंड विश्वविद्यालय, कोहिमा	Dr. Anuj Kumar, Assistant Professor, Nagaland University, Kohim
डॉ. आदित्य विक्रम सिंह, प्राध्यापक (हिन्दी), क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल	Dr. Aditya Vikram Singh, Lecturer (Hindi), Kshetriy Kshiksha Sansthan, Bhopal
डॉ. सुपर्णा मुखर्जी, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, भवन्स विवेकानंद डिग्री कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद.	Dr. Suparna Mukharjee, Lecturer, Bhavan's Vivekananda College, Sainikpuri, Hyderabad
प्रो. गोपाल शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विज्ञान विभाग, अरबा मींच विश्वविद्यालय, इथोपिया	Prof. Gopal Sharma, Former Professor and Head, Dept. of Linguistics, Araba Minch University, Ethiopia

प्रूफ रीडर (Proof Readers) :

1. डॉ. एल. अनिल, असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
2. डॉ. वाजदा इशरत, असिस्टेंट प्रोफेसर, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद
3. डॉ. आफ़ताब आलम बेग, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, हैदराबाद

मुख पृष्ठ (Title Page) : श्री. इब्राहीम अकरम सिद्दीकी

संदेश

मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है जिसे NAAC द्वारा ग्रेड A+ प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य है, 1. उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार, 2. उर्दू माध्यम में व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सरल भाषा में उपलब्ध कराना, 3. पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा माध्यमों के द्वारा शिक्षा प्रदान करना, 4. महिलाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। ये विशेषताएँ इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग और विशिष्ट बनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मातृभाषाओं और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने पर विशेष बल दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान प्रसार का मुख्य उद्देश्य यह है कि उर्दू जानने वाले समुदाय को समकालीन ज्ञान और विभिन्न विषयों तक सहज पहुँच मिल सके। लंबे समय तक उर्दू में पाठ्य सामग्री की कमी रही है। अब उर्दू विश्वविद्यालय के पास उर्दू में 350 से अधिक पुस्तकों का भंडार है, और यह संख्या हर सेमेस्टर के साथ बढ़ती जा रही है।

उर्दू विश्वविद्यालय को यह गर्व है कि वह राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुसार मातृभाषा/घरेलू भाषा में सामग्री उपलब्ध कराने के राष्ट्रीय मिशन का हिस्सा है। इसके परिणामस्वरूप, उर्दू भाषी समुदाय अब अद्यतन ज्ञान, उभरते हुए क्षेत्रों की जानकारी और मौजूदा विषयों में नवीन ज्ञान प्राप्त करने में पिछड़ा हुआ नहीं रह गया है, क्योंकि अब उर्दू में पढ़ने योग्य सामग्री उपलब्ध है। इन ज्ञान क्षेत्रों से संबंधित विषय-वस्तु की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति एक नई जागरूकता उत्पन्न की है, जो उर्दू जानने वाले समुदाय की बौद्धिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु, विश्वविद्यालय का दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र संबंधित विषयों में स्व-अध्ययन सामग्री तैयार करना सुनिश्चित करता है। विश्वविद्यालय दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा के छात्रों को यह स्व-अध्ययन सामग्री नि:शुल्क प्रदान करता है। यही सामग्री ज्ञान प्राप्त करने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए नाममात्र मूल्य पर भी उपलब्ध है। शिक्षण तक पहुँच को और अधिक व्यापक बनाने के उद्देश्य से उर्दू/हिंदी/अंग्रेज़ी/अरबी में स्व-अध्ययन सामग्री(eSLM) विश्वविद्यालय की वेबसाइट से नि:शुल्क डाउनलोड की जा सकती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि संबंधित संकाय के परिश्रम और लेखकों के पूर्ण सहयोग से चारवर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए.(आनर्स), बी. एस. सी.(आनर्स) और बी.काम. (आनर्स) पाठ्यक्रमों के लिए पुस्तकों के प्रकाशन की प्रक्रिया बड़े पैमाने पर आरंभ हो चुकी है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को सुविधा प्रदान करने हेतु स्व-अध्ययन सामग्री(Self-Learning Material) की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरा विश्वास है कि हम अपनी स्व-अध्ययन सामग्री के माध्यम से एक व्यापक समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा कर सकेंगे और इस विश्वविद्यालय के उद्देश्य को सफलतापूर्वक निभाते हुए देश में अपनी उपस्थिति को सार्थक सिद्ध कर पाएँगे। मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए हृदय से बधाई देता हूँ और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

वर्तमान युग में दूरस्थ शिक्षा को पूरी दुनिया में एक बहुत ही प्रभावशाली और उपयोगी शिक्षा प्रणाली के रूप में मान्यता प्राप्त है और बड़ी संख्या में लोग इस शिक्षा प्रणाली से लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय ने भी उर्दू भाषी जनसंख्या की शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थापना के समय से ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय की स्थापना 1998 में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के साथ हुई थी और नियमित कार्यक्रमों की शुरुआत 2004 से हुई, इसके पश्चात विभिन्न विभागों की स्थापना की गई।

भारत में शिक्षा प्रणाली को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र (Centre for Distance and Online Education) के तहत चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम, जो ओपेन और दूरस्थ शिक्षा मोड में हैं, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो द्वारा अनुमोदित हैं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग – दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो ने दूरस्थ और नियमित शिक्षा के पाठ्यक्रमों को समन्वित करने पर जोर दिया है, ताकि दूरस्थ शिक्षा के छात्रों के स्तर को बढ़ाया जा सके। चूंकि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय एक ड्यूल मोड विश्वविद्यालय है, जो दूरस्थ और पारंपरिक दोनों प्रकार की शिक्षा प्रदान करता है, इसलिए UGC-DEB के दिशानिर्देशों के अनुरूप अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम (CBCS) लागू किया गया और स्नातक एवं स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के लिए नई स्व-अध्ययन सामग्री तैयार की गई है।

दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र फिलहाल उन्नीस (19) कार्यक्रम चला रहा है, जिनमें स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कार्यक्रम शामिल हैं। इसके साथ ही, तकनीकी कौशल आधारित कार्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। इस केंद्र ने अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) के अनुसार जुलाई 2025 से 4-वर्षीय स्नातक (4YUG) कार्यक्रम प्रारंभ किया है। ऑनर्स कार्यक्रम B.A., B.Sc. और B.Com राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (NCF) के अनुसार डिजाइन किए गए हैं, जो छात्रों को ऑनर्स डिग्री प्राप्त करने में सहायता करेंगे। वर्ष 2025-2026 से MBA कार्यक्रम ODL मोड में शुरू किया गया है।

छात्रों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बैंगलोर, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, पटना, रांची तथा श्रीनगर) और 6 उप-क्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, वाराणसी तथा अमरावती) का एक विशाल नेटवर्क स्थापित किया गया है। इसके अलावा, विजयवाड़ा में एक विस्तार केंद्र भी स्थापित किया गया है। इन क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय केंद्रों के अंतर्गत 157 से अधिक लर्नर सपोर्ट सेंटर (LSCs) और बीस कार्यक्रम केंद्र एक साथ संचालित किए जा रहे हैं, ताकि छात्रों को शैक्षणिक और प्रशासनिक सहायता प्रदान की जा सके। दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र अपनी शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों में ICT का पूर्ण उपयोग करता है, और अपने सभी कार्यक्रमों में प्रवेश केवल ऑनलाइन मोड से ही प्रदान करता है।

छात्रों के लिए स्व-अध्ययन सामग्री (SLM) की सॉफ्ट कॉपी दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र की वेबसाइट पर उपलब्ध कराई जाती है और ऑडियो व वीडियो रिकॉर्डिंग के लिंक भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा ई-मेल और व्हाट्सएप समूहों की सुविधाएँ छात्रों को प्रदान की जा रही हैं, जिनके माध्यम से पाठ्यक्रम पंजीकरण, असाइनमेंट, काउंसलिंग, परीक्षाओं आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं के बारे में छात्रों को सूचित किया जाता है। नियमित काउंसलिंग के अलावा, पिछले दो वर्षों से छात्रों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त ऑनलाइन रेमेडियल काउंसलिंग की सुविधा भी प्रदान की जा रही है।

आशा है कि दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र शैक्षिक और आर्थिक रूप से पिछड़ी आबादी को समकालीन शिक्षा की मुख्यधारा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) के अनुसार शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रमों में बदलाव किए गए हैं, इससे ओपेन और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी।

प्रो. मोहम्मद रज़ाउल्लाह खान
निदेशक,
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र

भूमिका

'**आधुनिक हिन्दी काव्य**' शीर्षक यह पुस्तक मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के बीए (हिन्दी) तृतीय सत्र के भारतीय भाषा (आईएल) के दूरस्थ शिक्षा माध्यम के छात्रों के लिए तैयार की गई है। इसकी संपूर्ण योजना विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशों के अनुसार नियमित माध्यम के पाठ्यक्रम के अनुरूप रखी गई है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन कालों में बाँटा जाता है - आदि, मध्य और आधुनिक। आदिकाल एक तरह से अपभ्रंश से हिन्दी की ओर प्रस्थान का काल है, जबकि मध्यकाल हिन्दी के चहुँदिश विस्तार और प्रसार का काल है और आधुनिक काल मध्यकालीन रूढ़ियों से मुक्त होकर व्यापक जन-गण के साथ जुड़ाव का काल। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में पूरे भारत में नवजागरण के परिणामस्वरूप आधुनिक बोध का उदय हुआ। यह आधुनिक बोध ही आधुनिक काल के केंद्र में है। प्रस्तुत पुस्तक में आधुनिक काल के मुख्य चार कवियों और उनकी कविताओं का अध्ययन अभिप्रेत है।

प्रस्तुत पुस्तक दो खंडों के तहत कुल 8 इकाइयों में सोपानबद्ध ढंग से नियोजित है। पहले खंड में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान तथा छायावादी काव्यधारा की आधुनिक मीराँ कही जाने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा और दूसरे खंड में राष्ट्रकवि डॉ. रामधारी सिंह दिनकर और प्रगतिवादी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व और काव्य पर समीक्षात्मक और व्याख्यात्मक इकाइयाँ शामिल की गई हैं।

इस सामग्री के अध्ययन से छात्रों को बीसवीं शताब्दी के हिन्दी काव्य के विकास को समझने की योग्यता प्राप्त होगी। साथ ही, वे यह भी जान सकेंगे कि इस पूरे समय में हिन्दी कविता और समाज का आपसी रिश्ता कैसा रहा। इसके अलावा, वे इन इकाइयों को पढ़कर हिन्दी भाषा के विविध रूपों, बोलियों, शैलियों और काव्यात्मक प्रयोगों की विविधता को भी भली प्रकार आत्मसात कर सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक की सारी सामग्री मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए सरल, सहज और सुबोध भाषा में तैयार की गई है। इस सारी पाठ सामग्री को तैयार करने में हमें जिन विद्वान इकाई लेखकों, संपादकों, ग्रंथों और ग्रंथकारों से सहायता मिली है, उन सबके प्रति हम कृतज्ञ हैं।

डॉ. आफताब आलम बेग
पाठ्यक्रम समन्वयक

आधुनिक हिन्दी काव्य

इकाई 1 : सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय

रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ – सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय
1.3.1 जीवन परिचय
1.3.2 व्यक्तित्व
1.3.3 काव्य की प्रेरणाएँ
1.3.4 रचना यात्रा एवं कृतियाँ
1.3.5 काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ
1.3.6 छायावादोत्तर हिंदी कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्व
1.4 पाठ का सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो ! सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक युगीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न एक ख्याति प्राप्त एवं लोकप्रिय रचनाकार हैं। आधुनिक हिंदी काव्य जब अपनी करवटें बदल रहा था, तब जिन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा जन-जीवन के अंतर्मन में देश प्रेम की भावना क जगाते हुए उनमें एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति का संचार किया, उनमें सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। अतएव उनका अप्रतिम योगदान स्मरणीय है। इनके द्वारा सृजित कृतियाँ हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान रखती हैं।

1.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सुभद्रा कुमारी चौहान के जीवन से परिचित हो सकेंगे।
- उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
- तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों से परिचित हो सकेंगे।
- सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यगत विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।
- उनकी राष्ट्रीय भावना से परिचित हो सकेंगे।

1.3 मूल पाठ - सुभद्रा कुमारी चौहान : एक परिचय

1.31. जीवन परिचय

स्वतंत्रता संग्राम की वीरांगना, संघर्षशील महिला, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला, राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त1904 , ईको नागपंचमी . के दिन उत्तर प्रदेश के प्रयाग जिले के निहालपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह और माता का नाम धिराज कुँवर था। सुभद्रा जी की चार बहिनें और तीन भाई थे। उनकी एक बड़ी बहन के देहावसान बाल्यकाल में ही हो गया था। तीनों भाई उनसे बड़े थे। सबसे बड़ी भाई रामऔतार सिंह थे। किंतु वे दीर्घकाल तक नहीं रह पाए। दूसरे भाई का नाम ठाकुर राज बहादुर सिंह था। वे मध्यभारत के अजयगढ़ राज्य में सेशंस जज थे। तीसरे भाई ठाकुर रामप्रसाद सिंह थे, जिन्होंने असहयोग आंदोलन में सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। वे सुभद्रा जी के जीवनकाल में ही बड़े भाई के समान दिवंगत हो गए थे। उनकी तीन बहनों के नाम सुंदर, रानी और कमला थे। इनकी शादी क्रमशः कानपुरबाँदा और , बनारस में हुई थी। इस प्रकार सुभद्रा जी को अपने जीवनकाल में अपनी तीनों बहनों और एक भाई का भरपूर स्नेह प्राप्त हुआ। इन सभी के अतिरिक्त उनकी एक चचेरी बहन भी उनके साथ निवास करती थी। उनका नाम गोमती था तथा सुभद्रा जी की वे हमउम्र थीं। सुभद्रा जी को मातृ बहनों का-पितृ प्रेम के अलावा अपने भाई-भरपूर प्रेम प्राप्त हुआ। सुभद्रा जी के बाल्यकाल में सामाजिक स्थितियाँ सामान्य नहीं थीं। तत्कालीन समाज अनेक जड़ परंपराओं से जकड़ा हुआ था। आठ ,नौ वर्ष की लड़कियों को घर से बाहर निकलने नहीं दिया जाता था-परंतु सुभद्रा जी के बड़े भाइयों ने घर की लड़कियों को स्कूल जाने दिया। सुभद्रा जी पाँचवीं,सातवीं कक्षा में थीं-तभी 1919 ईमें उनका विवाह ठाकुर लक् .ष्मण सिंह से हुआ। ठाकुर लक्ष्मण सिंह भी एक देशभक्त व्यक्ति थे। अतः उन्होंने सदैव सुभद्रा जी को प्रोत्साहन और सहयोग दिया। अपने पिता, ठाकुर रमानाथ सिंह की देख रेख में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कास्थवेट गर्ल्स कॉलेज प्रयाग से हुई। ,

सुभद्रा जी की पाँच संतानें थीं। सुधा, अजय, विजय, अशोक और ममता। किसी युग का साहित्य उस युग के मानवीय भावों, विचारों और आकांक्षाओं का प्रकटीकरण होता है और मनुष्य के विचार तथा आकांक्षाएँ उस युग की परिस्थितियों के अनुसार ही बनती हैं। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण भी कहा गया है। सुभद्रा जी का समकालीन समाज परतंत्रता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था, हताशा एवं निराशा से भरा हुआ था। वह जन-जागृति, देश-प्रेम की अभिव्यक्ति और विदेशी शासन के प्रति आक्रोश का युग था। संपूर्ण भारतवर्ष में स्वतंत्रता प्राप्ति की लहर दौड़ पड़ी थी। सुभद्रा जी के व्यक्तित्व के अनेक पक्ष हैं जिनमें से एक पक्ष दृश्य, एकनिष्ठ और समर्पित वीरांगना का भी है। यह ध्यान देने योग्य है कि अप्रैल 1919 में जलियाँवाला बाग हत्याकांड हो चुका था।

विदेशी अधीनता से ग्रस्त एवं त्रस्त समाज के शांत करुणाद्र रोदन से अभिभूत सुभद्रा जी ने 1921 में गांधी जी के असहयोग आंदोलन को संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचारित किया। इस तरह वे स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाली प्रथम महिला के रूप में चिह्नित की गईं। उन्हें जेल भी जाना पड़ा, वे दो बार जेल गईं। अपनी इसी सामाजिकसांस्कृतिक प्रतिबद्धता को उन्होंने अपनी-रचनाओं में स्थान दिया एवं अपनी कविताओं के माध्यम से स्वाधीनताआंदोलन को प्रेरित किया। स्वतः उनका नाम छायावादोत्तर कविता जगत में अग्रिम पंक्ति में रखा जाता है। 15 फरवरी,1948 में एक कार दुर्घटना में उनका आकस्मिक निधन हो गया। वे तब मात्र तैंतालीस वर्ष की थीं।

सम्मान

'मुकुल' काव्य संग्रह एवं 'बिखरे मोती पर 'सुभद्रा कुमारी चौहान को 'सेकसरिया' पुरस्कार प्राप्तहुआ। उनके राष्ट्रप्रेम की भावना का सम्मान करते हुए डाक विभाग ने 1976 में एक डाक टिकट भी जारी किया तथा भारतीय तट-रक्षक सेना ने 28 अप्रैल,2006 को एक नवनियुक्त तट-रक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान नाम से अभिहित किया था। 27नवंबर, 1949 में जबलपुर के निवासियों ने चंदा इकठ्ठा करके नगरपालिका प्रांगण में सुभद्रा जी की आदमकद प्रतिमा लगवाई।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान को भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला क्यों कहा जाता है?
- सुभद्रा कुमारी चौहान को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

1 3.2.व्यक्तित्व

सामान्य रूप से !छात्रोव्यक्तित्व के दो पक्ष होते हैं - बाह्य और आंतरिक। व्यक्तित्व एक निजी उपादेयता है, किंतु उसका निर्माण अनेक कारकों की देन है। इनमें परिवार, समाज, संस्कृति, धर्म आदि कुछ प्रमुख कारक हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य के आधार पर उनके व्यक्तित्व का यदि आकलन करें तो पाएँगे कि एक सरल सहज प्रवाहमयता उनकी रचनाओं में विद्यमान है। यह सहजता उनके व्यक्तित्व का भी अभिन्न अंग है। जीवन की समस्याओं के प्रति उनकी चिंता और उसकी अभिव्यंजना उनके बहिर्मुखी एवं स्पष्टवादी होने का परिचायक हैं। विलियम वड्र्सवर्थ के शब्द को उधार लें तो 'भावों के उच्छवास'सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य और व्यक्तित्व दोनों को न्यायोचित ठहराया जा सकता है। वे जीवन के मौलिक उद्वेगों का संपुंज थीं। तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में रहने के बावजूद उनका परिवार व्यापक सोच का हिमायती था। इसका सकारात्मक प्रभाव हमें सुभद्रा जी के व्यक्तित्व में दिखता है। वे रूढ़िवादी समाज के खिलाफ एक सशक्त स्वर बनकर अपने समय में उभरीं और उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि कुप्रथाओं का सदैव विरोध किया। इसी तरह वे पर्दा प्रथा की भी विरोधी थीं। पर्दा प्रथा के विरोध की वे स्वयं मिसाल थीं। उनकी-कविताओं एवं कहानियों के माध्यम से हम जान सकते हैं कि वे नारी के स्वतंत्र अस्तित्व के पक्ष में थीं। उनके कहानी संग्रह

'बिखरे मोती' के विनीत निवेदन में सुभद्रा जी ने लिखा था " -रूढ़ियों और सामाजिक बंधनों की शिलाओं पर अनेक निरपराध आत्माएँ प्रतिदिन चूर चूर हो रही हैं।-किंतु उनके हृदयबिंदु जहाँ - तहाँ मोतियों के समान बिखरे पड़े हैं। मैंने तो उन्हें केवल बटोरने का ही प्रयत्न किया है। मेरे इस प्रयत्न में कला का लोभ है और अन्याय के प्रति क्षोभ भी।) "नई ज़मीन की तलाश ।(251 .पृ , के निवेदन म 'उन्मादिनी' संग्रह-इसी प्रकार कहानीेां भी वे स्त्री के चहुँमुखी विकास का समर्थन करते हुए दिखाई देती हैं" - स्त्री के हृदय को पहचानो और उसको चारों ओर विकसित होने का अवसर दो, यह न भूल जाओ कि उसका अपना भी एक व्यक्तित्व है।) "नई ज़मीन की तलाश, पृ । सुभद्रा जी की दृढ़(251 .धारणा थी कि विवाह के बाद भी नारी का अस्तित्व स्वतंत्र रहता है। इस कथन को उन्होंने विवाह के बाद चरितार्थ भी किया। अपने पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्रसेवा में ल-गा दिया।

एवं अवसर प्रदान कि यदि उचित माहौलए जाए एवं लालनपालन में लैंगिक भेद न हो - तो एक व्यक्तित्व कासंपूर्ण विकास हो सकता है। सुभद्राकुमारी चौहान इसका अन्यतम उदाहरण हैं। 'मुकुल' काव्य' संग्रह के-परिचय' में श्री प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त' लिखते हैं सुभद्रा" -कुमारी के पिता बड़े उदार विचारों वाले और प्रतिष्ठित पुरुष थे। उन्हें स्वभाव से ही कविता और संगीत से विशेष प्रेम था। उनकी इस सुरुचि का बालिका सुभद्रा पर भी विशेष प्रभाव पड़ा। बचपन से ही इन्हें प्राकृतिक दृश्यों को देखने, सृष्टि के सौंदर्य पर विचार करने और तितलियों तथा फूलों के पीछे दौड़नेलिखने का शौक भी इन्हें छोटी उमर से ही -फिरने का व्यसन सा हो गया था। पढ़ने-) "इनके कवि जीवन का भविष्य इन्हीं पात्रों में छिपा हुआ था।...थापरिचय(5 .पृ ,मुकुल ,। उनका महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि स्त्रियों की भागीदारी स्वतंत्रता आंदोलन एवं साहित्य के क्षेत्र में विरल थी। स्त्री की भागीदारी की जहाँ तक बात उठेगी, हम संभवतः उन्हें साहित्य के क्षेत्र में प्रवर्तक के रूप में स्मरण करेंगे। बकौल कमलाकांत पाठक" -सुभद्रा जी दृढ़ और निष्ठावान महिला थीं। मानवता के श्रेष्ठतम गुण उनके व्यक्तित्व में कूट-कूट कर भरे हुए थे। .... ओज और साहस को वे मानवता के पोषक उपकरण समझती थी। ममत्व और प्रेम की कोमलता उनकी मानवता का ही शृंगार थीं। ... त्याग और बलिदान की भावना उनकी मानवतावादी जीवन दृष्टि की विकसित अवस्था को ही लक्षित करती हैं।) "कमलाकांत पाठकसाहित्य और राष्ट्रीय -सुभद्रा , (22-20 .पृ ,कविता।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा जी नारी के किस तरह अस्तित्व के पक्ष में थीं?
- सुभद्रा जी कैसी कवयित्री के रूप में वे स्थापित हो चुकी थीं?

13.3. काव्य की प्रेरणाएँ

काव्य ,प्रेरणा के कई कारक हो सकते हैं। पारिवारिक-सामाजिक ,सांस्कृतिक , ' प्रेम आदि कुछ कारक हो सकते हैं।-राष्ट्र ,साहित्यिकस्वतंत्रता संग्राम की प्रथम कोकिला 'के नाम से संबोधित राष्ट्रभक्त कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान को सर्वप्रथम काव्य की प्रेरणा

परिवार से ही मिली। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका हैसुभद्र ,ा जी के पिता जी का कविता और संगीत के प्रति अतिरिक्त रुझान था। इसलिए उन्होंने सुभद्रा जी में भी सृजन करने की क्षमता को पहचान लिया था तथा उनकी इस क्षमता को समय रहते प्रोत्साहित भी किया। कविताओं के प्रति रुचि बाल्यकाल में ही हो शुरू हो चुका था। गणित की पुस्तक में कविताएँ लिखने वाली सुभद्रा की शिकायत जब शिक्षकों द्वारा उनके पिताजी को की गई तो वे क्रोधित होने के बजाए हर्ष से भर गए। 9 वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने काव्यरचना के प्रति अपने -रुझान को स्पष्ट कर दिया था। अपनी कविताओं में राष्ट्र प्रेम के प्रति आह्वान की प्रेरणा उन्हें गांधी जी से मिली। इस तरह साहित्य सृजन के नेपथ्य में देशप्रेम भी रहा। विवाह के बाद उनके पति लक्ष्मण सिंह के देशभक्ति के प्रति राग को और धार देने का काम सुभद्रा जी ने किया। उन्होंने भी कदम-कदम पर सुभद्रा जी का साथ दिया। दोनों एक-दूसरे की प्रेरणा का कारण बने। उनकी बड़ी बेटी सुधा चौहान लिखती हैं" -इन पतिपत्नी का जीवन तो निश्चय ही गुलामी को -,सुधा चौहान) "तोड़ने वाली हथौड़ी बन गया था। मिला तेज से तेज, पृ। स्पष्ट है कि (176 . भाव ,दोनों के विचार" लक्ष्मण सिंह और सुभद्रा जी एक दूसरे के लिए बने थे।और उद्देश्य ही नहींप्रवृत्ति ,याँ भी एक थीं। वे ऐसे आदर्श दंपति थेप्रेम और विश्वास पर ,जो परस्पर सौहार्द , -पूरा सहयोग दिया। सुभद्रा-टिके थे। लक्ष्मण सिंह ने सुभद्रा के व्यक्तित्व के विकास में पूरा लक्ष्मण की आदर्श जोड़ी सभी भारतीय परिवारों के लिए आदर्श थी।स्वतंत्रता के साथ जिस मर्यादा और नैतिक जिम्मेदारी की आवश्यकता होती है, वह इन दोनों में संस्कार रूप से विकसित हुई थी। सुभद्रा बसंत की अग्रदूत थीं, तो लक्ष्मण सिंह स्वाधीनता का शंखनाद थे। सुभद्रा ने जो कार्य ओजस्वी कविताओं द्वारा किया, वही कार्य लक्ष्मण सिंह ने पत्रकारिता के माध्यम से किया।

उनके काव्योत्कर्ष में माखनलाल चतुर्वेदी का भी अतुलनीय योगदान था। एक गुरु के रूप में उन्होंने सुभद्रा जी की काव्य1920 प्रतिभा को निखारने का पुनीत कार्य किया ।- में ही उन्हें हिंदी साहित्य जगत में ख्याति प्राप्त हो चुकी थी। उनकी कविताएँ कई प्रतिष्ठित साहित्यकारों से प्रशंसा बटोर रहीं थीं। इन परिस्थितियों को देखते हुए माखनलाल जी ने उन्हें के प्रथम 'कर्मवीर' अंक में कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित किया। के प 'कर्मवीर'ृरकाशन के आरम्भ के पहले ही उनका साहित्यिक परिवार भी बहुत विशाल एवं गंभीर था। संभवतः यह उनके सहज स्वभाव के कारण था। शमानुलाल श्रीवास्तव ,रामकुमार वर्मा ,केशवप्रसाद पाठक ,नर्मदा प्रसाद खरे ,जैनेंद्र कुमार राम विलास शर्मा ,रामेश्वर गुरु ,ललित प्रसाद शुक्ल ,आदि के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे। निःसंदेह यह कहा जा सकता है कि सुभद्रा जी इन विद्वानोंसर्जकों से निरंतर -चिंतकों-प्रभावित होती रही होंगी। इसका प्रभाव उनके साहित्य पर भी देखा जा सकता है।

सुभद्रा जी का साहित्यिक जीवन एवंराजनैतिक जीवन एक दूसरे से संबद्ध थे। उनका देशप्रेम उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा था-। जब आसपास का पूरा परिदृश्य स्वतंत्रताप्राप्ति -के लिए व्यग्र था, तब सुभद्रा कुमारी चौहान ने भी अपने कोमल भावों पर लोहे का आवरण चढ़ा

दिया और युवाओं को राष्ट्र के प्रति न्योछावर होने हेतु कविताओं का सृजन करने लगीं। तत्कालीन समाज एवं परिस्थितियाँ सुभद्रा जी की काव्य प्रेरणा के-अभिन्न अंग थीं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा ने जो कार्य ओजस्वी कविताओं द्वारा कियावही कार्य किस विद्वान ने पत्रकारिता , ?के माध्यम से किया
- सुभद्रा जी की काव्य?प्रेरणा का अभिन्न अंग क्या था-

1 3.4.रचना यात्रा एवं कृतियाँ

सुभद्रा जी की रचना यात्रा-निहालपुर के सामान्य मकान से शुरू हुआ। अपने दोस्तों के साथ खेल के दौरान उमड़े उद्गारों को वे अपनी रचनाओं में स्थान देती थीं। सो बचपन से ही खुद को अभिव्यक्त करने की उनमें उत्कट लालसा थी। केवल एक रचना ने उन्हें 'झाँसी की रानी' साहित्यजगत में अमरत्व प्रदान कर दिया था ।परिमाण की दृष्टि से यदि देखा जाए तो उन्होंने बहुत कम रचनाएँ ही कीं ,किंतु जितना भी किया उसे साहित्यकारों एवं पाठकों ने सराहा।

सुभद्रा कुमार चौहान ने 88 कविताओं और 46 कहानियों की रचना की। उनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं :

काव्य,(1930) मुकुल : संग्रह- त्रिधारा ,(चुनी हुई कविताएँ)सभा का खेल (बाल काव्य)

कहानी संग्रह ,(1932) बिखरे मोती : उन्मादिनी ,(1934) सीधे(1947) सादे चित्र-

संपादित विवेचनात्मक : गल्पमाला

जीवनी : मिला तेज से तेज (पुत्री सुधा चौहान द्वारा रचित)

पद्य साहित्य

एक कवयित्री के रूप में सुभद्रा जी अपने काव्यसंग्रहों के प्रकाशन से पहले ही स्थापित - हो चुकीं थीं। उनकी प्रसिद्धि का आलम यह था कि जब और अन्य पत्रिकाओं में 'कर्मवीर' तभी ,प्रकाशित हो रही थींसे उनकी कविता पढ़ने को लोग लालायित रहते। डॉरामकुमार . संग्रह की भूमिका में इसी बात को अपने शब्दों में कुछ इस तरह प्रस्तुत -काव्य 'मुकुल' वर्मा ने " -किया हैपरिस्थितियों की हिलोर में कविता इस प्रकार चलती है, जैसे कोई मंत्रमुग्ध। मेरे - कहने का तात्पर्य यह नहीं कि कविता में ऐसे शक्ति उत्पन्न होती है जो सुनने वालों को मुग्ध कर देती है। पर मतलब यह है कि कविता स्वयं मंत्र मुग्ध की-भाँति अग्रसर होती है। उसका प्रत्येक शब्द मतवाला होता है।) "रामकुमार वर्मा, मुकुल, भूमिका से। उनकी सहजता का एक (: उदाहरण द्रष्टव्य है

"उत्साह उमंग निरंतर
रहते मेरे जीवन में
उल्लास विजय का हंसता

मेरे मतवाले मन में।) "वर्तमान साहित्य ,अक्टूबर,2005 पृ(42 .

सुभद्रा जी का साहित्य क्षेत्र में जब आविर्भाव हुआ था, देश स्वतंत्रता की राह पर खुद को न्योछावर कर देने को तत्पर था। सुभद्रा जी की कविताओं का मुख्य स्वर भी राष्ट्रीयचेतना ही - राष्ट्रीय चेतना की विस्तार शील परिधि के" रहा।अंदर पनपने वाली आत्म चेतना के जो मनोहर- बिंब हमें आधुनिक हिंदी काव्य में दिखाई देते हैंवे आज भी हमारे गौरव का विषय है। इस , साहित्य में सुभद्रा-काव्यजी का साहित्य ,अपनी भाव पद्धति और शैली की विशेषताओं के कारण पृथक और विशेष स्थान रखता है।) "मुक्तिबोध रचनावली,5- सं(376 .पृ ,नेमिचंद्र जैन .। सुभद्राकुमारी चौहान की एक विशिष्टता यह भी है कि सामान्य जीवन प्रसंगों को वे राष्ट्र के प्रति प्रेम एवं कर्तव्य में रूपांतरित कर सकती थी। इससे उनकी स्वाधीनता प्राप्ति की उत्कट चाह का परिचय प्राप्त होता है। राखी त्यौहार के बहाने यह कवितांश देखिए:

?आते हो भाई" पुनः पूछती हूँ
कि माता के बंधन की लाज तुमको
तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा ?
चुनौती यह राखी की आज है तुमको।राखी की ,मुकुल) चुनौती(66 .पृ ,

जलि'याँवाला बाग़ में बसंत ,'मातृ मंदिर में' ,'राखी की चुनौती' ,'की रानी झाँसी' ,' ,'वीरों का कैसा हो वसंत' ,'झाँसी की रानी की समाधि पर' ,'पुरस्कार कैसा' ,'विजया दशमी' जैसी राष्ट्रीय चेतना में पगी कविताएँ विविध रूपों में स् 'सेनानी का स्वागत'वाधीनता की अलख जगाती हैं।

बेशक राष्ट्रीय चेतना की ध्वजा वाहक के रूप में सुभद्रा जी ने जनजन तक अपनी पहुँच - बनाई।किंतु इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि उनके अन्य रूपों का परिचय हमें प्राप्त नहीं हुआ। सुभद्रा कुमारी चौहान ने स्त्री अस्मिता का प्रश्न भी अपनी रचनाओं में उठाया है। उन्होंने स्त्री के विभिन्न रूपों का चित्रांकन किया है। मुकुल बिहारी सरोज ने उचित ही इस ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है" -उनकी रचनाओं में नारी अगर वात्सल्य प्रवाहित करने ,आदर्श पत्नी है ,वाली माँ है स्नेह रस में विभोर ,कली है जीवन में आनंद के ,दीप जलाने वाली प्रेयसी है। इन सबके उपरांत वह अवसर पड़ने पर रण चंडी का रूप धारण कर शत्रु से लोहा लेने-वाली वीर बाली भी है।) "सरोज मुकुल बिहारी(पृ.24 ,व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सुभद्रा कुमारी चौहान ,।

हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के प्रबल स्वर के रूप में स्थापित सुभद्रा जी के काव्य- 'त्रिधारा' और 'मुकुल' संग्रहोंसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वे मात्र राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित कवयित्री नहीं थीं वरन् उनके यहाँ मनुष्य एवं जीवन के नानाविध भावों का चित्रण भी विद्यमान है। काव्य 'मुकुल' संग्रह में जहाँ एक ओर राष्ट्रीय भाव से ओतप्रोत कविताएँ हैं, वहीं निष्कलुष प्रणय भाव और वात्सल्य भाव का अंकन भी है। इसी प्रकार उनके दूसरे काव्यसंग्रह में- भी जहाँ राष्ट्रीय भाव संपन्न कविताएँ विद्यमान हैं, वहीं प्रणय भाव और जीवन दर्शन विषयक कविताएँ भी हैं। स्पष्ट है कि सुभद्रा जी गंभीर से गंभीर विषय को भी सरल रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता रखती थीं। इस सरलता के चलते उनकी रचनाएँ अपनी सरसता नहीं खोती हैं -

"सुभद्रा जी की भावुकता कोरी भावुकता नहीं हैबाह्य जीवन पर संवेदनात ,्मक मानसिक प्रतिक्रियाएँ हैं। यही कारण है कि उनकी कविताओं में भाव मानव ,संबंध विशेष परिस्थिति से-विशेष परिस्थिति सामाजिक-राष्ट्रीय परिस्थिति से एक अटूट ,शृंखला बंधी हुई है। भाव के सारे संदर्भों का निर्वाह उनके काव्य में हो जाता है। इससे उनकी वास्तविक भाव संपन्नता का ,) "संवेदनशीलता का चित्र हमारे सामने खिंच जाता है।मुक्तिबोध रचनावली,5- संनेमिचंद्र . ,जैन पृ।(392 .

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता की विशेषताएँ बताइए।
- ?काव्य संग्रह में किस प्रकार की कविताएँ संकलित हैं 'मुकुल'

13.5. काव्य की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ

सुभद्रा कुमारी चौहान अनुभूतियों की कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में सहज-निष्कलुष अनुभूतियाँ विद्यमान हैं। उनकी कविताओं की प्रमुख कथ्यगत विशेषताएँ हैं : राष्ट्रीय भावना, अतीत का गौरव, संस्कृति, भक्ति, जातिगत विषमता का विरोध, प्रकृति, परिवार, स्वानुभूति, प्रेम।

राष्ट्रीय भावना

देश प्रेम की भावना राष्ट्रीय भावना का मूल केंद्र है। इसके अंतर्गत राष्ट्र की आंतरिक और बाह्य सत्ता का समावेश हो जाता है। राष्ट्रीयता की भावना एक आधुनिक अवधारणा है। अतः आधुनिक राष्ट्रीय भावना का उद्घोष हमें 1857 की क्रांति में सुनाई देता है। यह एक ऐसी क्रांति थी जिसमें परतंत्रता से उपजी छटपटाहट तथा स्वाधीनता के प्रति आशा और आकांक्षा को देखा जा सकता है। इस क्रांति ने हर क्षेत्र को प्रभावित किया। साहित्य को इस दृष्टि से यदि देखें तो पाएँगे कि इस क्रांति के आधार पर खड़े होकर रचनाकार एक नए नवजागरण की परिकल्पना में जुटे हुए थे। अतएव भारतेंदु युग, द्विवेदी युग से होते हुए जब हमने छायावादी युग में प्रवेश किया तब गांधी जी का प्रवेश भारतीय राजनीति में हुआ। स्वतंत्रता की लालसा बलवती हुई। त्याग और बलिदान की भावना जनता में जागृत हुई। स्वाभिमान की रक्षा मूल ध्येय बन कर उभरा। यह वह समय था जब सुभद्रा कुमारी चौहान का पदार्पण काव्य-जगत में हुआ। गांधी जी से वे बेहद प्रभावित थीं, इसलिए उन्होंने राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत रचनाओं को प्रस्तुत करना एक उत्तरदायित्व की तरह ग्रहण किया। उनका प्रथम लक्ष्य लोगों को देश-प्रेम के लिए प्रेरित करना था, ताकि हम पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ सकें। सुभद्रा कुमारी चौहान ने देश की मिट्टी पर खड़े रहकर उसका रूप निहारा। 'लोहे को पानी कर देना' कविता में वे गांधीजी के व्यक्तित्व की सराहना करती हैं। 'सेनानी का स्वागत' शीर्षक कविता में बहादुर स्वतंत्रता सेनानियों की यातनाओं के बावजूद उन्हें हिम्मत न हारने का आह्वान करती हैं-

"हैं संतप्त तदपि आशा से
स्वागत आज तुम्हारा

एक बार फिर कह दो झंडा
ऊँचा रहे हमारा।" (मुकुल, सेनानी का स्वागत, पृ. 143)

सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीयता का स्वर विभिन्न रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कभी वे 'राखी की चुनौती' कविता द्वारा राष्ट्र पर न्योछावर होने की चुनौती पेश करती हैं तो कभी 'मातृ मंदिर' कविता के माध्यम से स्वदेश और स्वभाषा पर गौरव करने की बात करती हैं। स्वभाषा का क्या भविष्य होगा यह भी कविता के माध्यम से हमें पता चलता है -

"तू होगी व्यवहार देश के
बिछड़े हृदय मिलाने में।
तू होगी अधिकार, देश भर
को स्वातंत्र्य दिलाने में।" (मुकुल, मातृ मंदिर में, पृ. 87)

सुभद्रा कुमारी चौहान के बारे में कहा जा सकता है कि इनका काव्य-संसार देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत है। देश के मिट्टी का सोंधापन उनकी कविताओं में व्याप्त है। राष्ट्रीयता का चुनाव तात्कालिक समाज में कोई विकल्प नहीं था, वरन जीवन का अभिन्न अंग बन कर उभरा था। सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रीय कविताएँ कई भावों को विस्तृत फलक में संजोने का कार्य करती हैं। उनकी काव्यगत राष्ट्रीय चेतना उनकी निजी राष्ट्रीय चेतना का जीवंत विस्तार है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में राष्ट्रीय भावना का मूल केंद्र क्या है?

अतीत का गौरव

इतिहास या यूँ कहें अतीत देशप्रेम का अभिन्न हिस्सा होता है। प्रेरणा के लिए एक व्यक्ति अपने अतीत का आकलन करता है। अनेक सकारात्मक पहलुओं का संचयन करता है ताकि गौरव का भाव जागृत हो सके। हमारे देश में भी समय-समय पर ऐसे महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने विवेक, वीरता, साहस, मानवतावादी विचारधारा, धार्मिक उदारता और पराक्रम से देश का नाम ऊँचा किया है। अतः यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चेतना का एक अवश्यंभावी पक्ष अतीत का गौरव गान भी होता है। सुभद्रा जी की कविताओं में यह तत्व सर्वत्र विद्यमान है। 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता में कवयित्री कहती हैं -

"कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र अब जाग जाग;
बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत। (मुकुल, वीरों का कैसा हो वसंत, पृ. 111)

सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता प्रेरणा देने का काम करती है। उनकी कविताएँ संदेशात्मक प्रवृत्ति से ओत-प्रोत हैं जिसमें वीर सेनानियों, वीरांगनाओं की झलक हमें प्राप्त होती है। उनकी कविता 'झाँसी की रानी की समाधि पर' का उदाहरण देखिए -

"इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी। (मुकुल, झाँसी की रानी की समाधि पर, पृ. 146)

कह सकते हैं कि सुभद्रा जी की कविताएँ गौरवशाली अतीत के प्रतिबिंब हैं। अतीत के गौरव में दरअसल वर्तमान की चिंता समाहित होती है। सुभद्रा जी के यहाँ वर्तमान समाज की झाँकी भी हमें उसी न्यायोचित रूप में प्राप्त होती है, जिस तरह विगत वैभव के आख्यान मिलते हैं। सुभद्रा जी का काव्य आत्म गौरव, आत्मग्लानि, वर्तमान के प्रति चेतन प्रवृत्ति एवं भविष्य की शुभाकांक्षा का एक मिश्रित रूप है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता किस तरह की कविता है?
- राष्ट्रीय चेतना का अवश्यंभावी पक्ष क्या है?

सांस्कृतिक कविताएँ

सुभद्रा जी की एक और विशिष्टता यह भी है कि उन्होंने अपनी कविताओं में उन जीवन प्रसंगों को भी स्वाधीनता से संयुक्त करने का प्रयास किया जिनका संबंध हमारी संस्कृति से है। 'राखी की चुनौती' कविता में वे कहती हैं -

?आते हो भाई" पुनः पूछती हूँ
कि माता के बंधन की लाज तुमको
तो बंदी बनो देखो बंधन है कैसा ?
चुनौती यह राखी की आज है तुमको।"(66 .पृ ,राखी की चुनौती ,मुकुल)

हम देख सकते हैं कि सुभद्रा जी की कविताओं में यदि हमारी आस्थाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, त्यौहार आदि आते भी हैं तो उनका संदर्भ देश और स्वाधीनता से निश्चित रूप से जुड़ा हुआ होता है। देवता, मंदिर, पुजारी, माँ सभी कहीं न कहीं ऐसे प्रतीकों के रूप में व्यवहृत होती हैं जिनसे प्रेरणा अथवा सन्देश प्रेषित हो।अतएव उनकी कविता के विषय रहस्य का निर्माण न कर मानवीय औदात्य का निरूपण करती हैं। 'राखी' कविता में वे कृष्ण को भाई मानकर तात्कालिक भारतीय दुर्दशा को उजागर करती हैं। इसी प्रकार 'विजयादशमी' त्यौहार के माध्यम से कवयित्री के हृदय का उदगार देखिए :

"रामचन्द्र की विजय-कथा का
भेद बता आदर्श सखी
पराधीनता से छूटे यह
प्यारा भारतवर्ष सखी" (मुकुल, विजायादशमी, पृ. 79)

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में आस्थाएँ, मान्यताएँ आदि का संदर्भ किससे जुड़ा हुआ है?

भक्ति एवं आध्यात्मिक भावना

जिस देश की आध्यात्मिक एवं भक्ति चेतना जितना प्रबल होती है, वह राष्ट्र उतना ही शक्तिशाली होता है। राष्ट्र का आत्मबल जागृत करने का यह सद्प्रयास हम भारेंदु एवं परवर्ती युगों में भी देखने को मिलता है। इस समय के रचनाकारों ने अध्यात्म का सहारा लेकर राष्ट्र को उदासीनता के कोहरे से निकालने और आध्यात्मिक आत्मबल के संचरण का प्रयास किया। भारतीय संस्कृति की गौरवशाली संवाहिका सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी भक्ति भावना का भी परिचय दिया किंतु पुनः यह स्पष्ट करना ज़रूरी जान पड़ता है कि उनका मूल उद्देश्य आशा का संप्रेषण रहा। 'विदाई' कविता में वे कृष्ण से दृढ़ता, बल जैसे गुणों की माँग करती हैं :

"तुम्हारी दृढ़ता से जग पड़े
देश का सोया हुआ समाज
तुम्हारी भव्य मूर्ति से मिले
शक्ति वह विकट त्याग की आज।" (मुकुल, विदाई, पृ. 95)

'ठुकरा दो या प्यार करो' कविता में कवयित्री अपनी शर्तों पर ईश्वर की आराधना की बात करती हैं, यानी आडम्बरहीन पूजन की। इसी तरह। 'जाने दो' कविता भी कुछ इसी प्रकार का अर्थ निष्पादित करती है। वे राखी, होली, राम, कृष्ण, मंदिर आदि का प्रयोग करती हैं, लेकिन उनका दृष्टिकोण सांप्रदायिक न हो कर राष्ट्रहित में है। वे इन तमाम प्रतीकों को स्वाधीनता आंदोलन के पक्ष से जोड़कर हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में प्रतीक किससे जुड़कर सामने आते हैं?

जातिगत विषमता का विरोध

तात्कालिक सामाज का दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष जातिवादी मानसिकता भी था। अपनी कविताओं में सुभद्रा कुमारी चौहान ने जाति-पाति से उपजी विषमता का प्रतिकार किया है तथा उनके भावनात्मक उद्घोष हमें प्रेरित करते हैं। 'प्रभु तुम मेरी मन की जानो' कविता में उनका उदगार द्रष्टव्य है :

"मैं अछूत हूँ मंदिर में मुझको आने का अधिकार नहीं है
किंतु देवता यह न समझना तुम पर मेरा प्यार नहीं है।"
"यह निर्मम समाज का बंधन और अधिक अब सह न सकूंगी
यह झूठा विश्वास, प्रतिष्ठा झूठी इसमें रह न सकूँगी।"
'मुरझाया फूल' के माध्यम से कवयित्री कहती है-

"यह मुरझाया फूल, इसका हृदय दुखाना मत
स्वयं विखरने वाली इसकी पंखुड़ियां विखराना मत"

(मुकुल, विस्मृति की स्मृति, पृ. 108)

यहाँ 'मुरझाया फूल' उन लोगों का प्रतीक है, जिनके साथ जाति आधारित भेदभाव किया जाता है। कवयित्री इसी भावना का प्रतिकार करती है। सुभद्रा कुमारी चौहान की अभिव्यक्ति जातिभेद, मज़हब, सांप्रदायिकता का प्रतिरोध करती हैं। स्वाधीनता एक हो कर ही प्राप्त किया जा सकता है। कवयित्री इस बात से वाकिफ है। कविताओं के माध्यम से वे अपने गाम्भीर्य, विवेक एवं सहिष्णुता का परिचय हमें देती हैं।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान के अनुसार स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?

प्रकृति

प्रकृति के प्रति कवयित्री के सान्निध्य का परिचय इसी बात से हो जाता है कि महज़ 9 साल की उम्र में उनकी कविता 'नीम' 'मर्यादा' नामक पत्रिका में 1913 में छप चुकी थी जिसमें उन्होंने नीम की उपयोगिता को दर्शाया :

"सब दुखहरन सुखकर परम हे नीम ! जब देखूं तुझे
तुहि जानकार अति लाभकारी हर्ष होता है मुझे।"

(सिंह, कुँवर पाल. वर्तमान साहित्य-2005, पृ. 20)

'शिशिर समीर', 'स्वागत साज', 'वेदना', 'तुम', 'झिलमिल तारे' आदि कविताओं में कवयित्री ने प्रेम और प्रकृति दोनों के संश्लेषण से कविता की रचना की है। 'वेदना' कविता में कवियित्री कहती हैं :

'दिन में प्रचंड रवि किरणें मुझको शीतल कर जाती
पर मधुर ज्योत्सना तेरी हे शशि है मुझको जलाती
संध्या की सुमधुर बेला सब विहग नीड़ में आते।
मेरी आँखों के जीवन बरबस मुझसे छीन जाते'" (मुकुल, वेदना, पृ. 159)

सुभद्रा जी ने प्रकृति का आलंबन भी स्वाधीनता से जोड़कर किया है। 'वीरों का कैसा हो वसंत', जलियावाला बाग़ में वसंत', 'विजयी मयूर' कविताओं में उनकी इस अभिलाषा को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान ने प्रकृति का आलंबन किससे जोड़कर किया है?

परिवार

राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत सुभद्रा चौहान की कविताओं से बावस्ता होने के बाद उनकी पारिवारिक कविताएँ विस्मित करती हैं। माँ का अभूतपूर्व निश्छल रूप हमें सुभद्रा जी के यहाँ मिलता है। 'बालिका का परिचय' एक बेमिसाल कविता है। इसी प्रकार 'इसका रोना' भी एक मार्मिक कविता है। 'बालिका का परिचय' कविता में कवयित्री कहती हैं :

"परिचय पूछ रहे हो मुझसे
कैसे परिचय दूँ इसका
वही जान सकता है इसको
माता का दिल है जिसका" (मुकुल, बालिका का परिचय, पृ. 51)

इसी प्रकार 'इसका रोना' कविता में बच्चे के रुदन को लेकर एक तरह सुखद अहसास करती हैं। ऐसा एक माँ और परिवार से नाभिनाल व्यक्ति ही कर सकता है :

"मैं हूँ उसकी प्राकृत संगीनी
उसकी जन्म-प्रदाता हूँ
वह मेरी प्यारी बिटिया है
मैं ही उसकी माता हूँ।" (मुकुल, इसका रोना, पृ. 53)

देश लिए जितना प्रेम सुभद्रा जी के मन में था उतना ही प्रेम वह अपने परिवार से भी करती थीं। बच्चों के लिए उनके मन में उतना ही स्नेह और ममत्व भरा हुआ था। बच्चों की छोटी से छोटी हरकतें उनकी नज़रों में कैद हो जाती थीं। उन्होंने माँ, पत्नी का कर्तव्य बखूबी निभाया। देश और परिवार सुभद्रा जी के लिए एक बराबर थे। भावनातमक रूप से वे दोनों से जुड़ी थीं।

स्वानुभूति

सुभद्रा जी ने स्वनुभूतियों को भी अपनी कवितओं में प्रश्रय दिया है। अपनी निजी अनुभूतियों के माध्यम से जीवन की सामान्य सी लगने वाली घटनाओं को अपनी कविताओं में बड़ी सहजता से गूँथ लेती हैं। 'मेरा नया बचपन', 'मेरा जीवन', 'मेरी प्याली', 'उल्लास', 'करुण कहानी', 'परिचय', 'अनोखा दान', 'उपेक्षा', 'व्याकुल चाह' आदि कविताएँ उनकी स्वनुभुतियों का प्रतिनिधित्व करती कविताएँ हैं। पहले भी ज़िक्र किया जा चुका है शैशव अवस्था के अद्‌भुत चित्र सुभद्रा जी ने उकेरे हैं। किंतु इस बहाने वे अपनी शैशव को भी याद करती प्रतीत होती हैं। 'मेरा नया बचपन' कविता का यह उद्धरण देखिए :

"वह सुख का साम्राज्य छोड़कर, मैं मतवाली बड़ी हुई
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई सी, दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।"
"जिसे खोजती थी बरसों से, अब जाकर उसको पाया
भाग गया था मुझे छोड़कर, वह बचपन फिर से आया।"
(मुकुल, मेरा नया बचपन, पृ. 46)

सुभद्रा कुमारी चौहान एक जीवट व्यक्तित्व की धनी थीं। नकारात्मक परिस्थतियों को सकरातमक रूप से किस प्रकार लिया जाना चाहिए, यह कोई भी सुभद्रा जी से सीख सकता है। प्रतिकूल को अनुकूल बनाने का कवयित्री माद्दा रखती थीं। 'मेरा जीवन' कविता उनकी इसी सकारात्मकता से हमारा परिचय कराती है :

"मैंने हंसा सिखा है, मैं नहीं जानती रोना
बरसा करता पल-पल पर, मेरे जीवन में सोना।" (मुकुल, मेरा जीवन, पृ. 28)

इसी प्रकार 'उल्लास' में चारित्रिक दृढ़ता का परिचय हमें देती हैं :

"जीवन में न निराशा मुझको
कभी रुलाने को आयी
जग झूठा है यह विरक्ति भी
नहीं सताने को आयी" (मुकुल, उल्लास, पृ. 133-134)

प्रेम

प्रेम एक बहुमूल्य भाव है। यह एक प्राणशक्ति है। जो किसी भी व्यक्ति को दुर्जेय परिस्थितियों से उबरने का संबल प्रदान करती है। निजी हो या सामाजिक प्रेम, यथास्थिति में परिवर्तन की ताकत रखता है। सुभद्रा जी की प्रेम कविताएँ हमें प्रभावित करती हैं क्योंकि किसी भी प्रकार की क्लिष्टता का बोध हमें प्राप्त नहीं होता। 'कलह-कारण', 'चलते समय', 'मेरे पथिक', 'भ्रम', 'स्मृतियाँ', 'पुरस्कार का मूल्य', 'चिंता', 'प्रियतम से', 'मानिनी राधे', 'आहत की अभिलाषा', 'प्रेम-शृंखला', 'अपराधी है कौन दंड का भागी बनता कौन', 'मनुहार', 'प्रथम-दर्शन', 'साध', 'तुम', 'पूछो', 'प्यार', 'मेरा गीत, 'मधुमय प्याली' आदि कविताओं में अपने प्रेम भाव को ज़ाहिर किया है।

अपनी कई प्रेम कविताओं में वे स्त्री-अस्तित्व का भी एक अपरोक्ष रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं। 'प्रियतम' कविता की यह बानगी देखिए -

"बहुत दिनों तक हुई परीक्षा, अब रूखा व्यवहार न हो
अजी, बोल तो लिया करो तुम, चाहे मुझपर प्यार न हो।"
(मुकुल, प्रियतम से, पृ. 35)

इसी प्रकार का उद्गारर 'आहत की अभिलाषा' कविता में भी देखने को मिलता है :

"मेरे मन में घर तुमने निज अधिकार बढाया।
किंतु तुम्हारे मन में मैंने तिल भर ठौर न पाया।।
(मुकुल, आहत की अभिलाषा, पृ. 40)

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि विविध विषय-क्षेत्रों पर सुभद्रा जी ने अपनी कविताओं का वितान रचा है। राष्ट्रीय चेतना का स्वर मुख्य है। बकौल मुक्तिबोध : "सुभद्रा जी के काव्य में भावों के बहुत गहरे रंग नहीं हैं, पर भावों में गहराई है। स्वाभाविकता है, सरलता है। उनका काव्य-गुण जिन स्रोतों से उत्पन्न हुआ है, जिसके द्वारा यह स्वाभाविकता और सरलता

काव्य-रस के अंगों के रूप में आई है। वे स्रोत केवल शैली के गुण नहीं है, भावों में गहरे रंग भरने अथवा हलके स्ट्रोक्स देने के प्रकार पर भी वे अवलंबित नहीं हैं। वे स्रोत है जीवन के प्रति संवेदनात्मक प्रतिक्रियाएँ जो अपनी ताजगी, नवीनता और जीवन-वस्तु-संपर्क के कारण गहराई से छू लेती है।" (जैन नेमिचंद्र, मुक्तिबोध रचनावली, भाग 5, पृ. 397)

13.6. छायावादोत्तर हिंदी कविता में सुभद्राकुमारी चौहान का महत्व

जिस समय सुभद्रा कुमारी चौहान का साहित्य जगत में आविर्भाव हुआ वह समय स्वतंत्रता अन्दोलन का दौर था। साहित्य ने अपनी धारा तात्कालिक परिस्थिति के अनुरूप ढाल ली और स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता की चेतना का प्रभाव प्ररोक्ष या अपरोक्ष रूप से इस समय के रचनाकारों में दिखने लगा। वह समय कई प्रकार की सामाजिक रूढ़ियों का भी समय था, जिसमें महिलाओं पर भी कई तरह की पाबंदियाँ थी बावजूद इसके जो महिलाएँ भी उस समय रचना कर्म से जुड़ी थीं सभी ने अपने-अपने स्तर पर देश-प्रेम की भावना को जगाने, अपनी जड़ताओं से बाहर निकालने, अपनी रूढ़ परंपराओं को छोड़ने की प्रेरणा देने का रचनात्मक प्रयास किया। ऐसी महिला रचनाकार साहित्य के नानविध विधाओं से खुद को प्रेषित कर रही थीं, कविता, कहानी, लेख, संस्मरण आदि मुख्य विधाएँ हुईं। कुछ प्रसिद्धी पा सकीं, कुछ विफल हुईं, किंतु साहित्य के इतिहास में इन तमाम महिला रचनकारों के नाम महत्वपूर्ण हैं। सुमित्रा कुमारी सिन्हा, विद्यावती कोकिल, तोरन देवी शुक्ल 'लली', 'तारादेवी पाण्डेय', 'रामेश्वरी देवी 'चकोरी, महादेवी वर्मा एवं सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने अपनी ओजस्वी वाणी से जन मन को आंदोलित किया तथा राष्ट्रीय मुक्ति हेतु आह्वानपारक कविताओं का सृजन किया।

इन सभी महिला कवयित्रियों के बीच एक ऎसी भी कवयित्री रही हैं, जिन्होंने अपने गीतों से राष्ट्रीय आंदोलन के संघर्षयुक्त समय में जनता में गहरी प्रेरणा, उत्साह का स्फूरण किया। सुभद्रा कुमारी जी का स्वर इन सब महिला रचनाकारों में सबसे अलग इसलिए उभर कर आता है कि उनके यहाँ कथनी और करनी का भेद सबसे कम था। व्यक्तिगत जीवन और रचनागत जीवन, दोनों जीवन में क्रांति और परिवर्तन की पहल उनके यहाँ लगातार दिखाई देती है। व्यवहारिक और सैद्धांतिक जीवन का एकाकार करते हुए सुभद्रा जी सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने वाली सक्रीय महिला थीं। राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े होने के कारण उन्होंने अपना अनुभव सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ को निरूपित करने में किया। उनकी कविता 'झाँसी की रानी' गीत ने लोक गीत का रूप धर लिया और जन जन का प्रिय गीत बन गया। आलम यह रहा कि देश के वीर नायकों के लिए सुभद्रा जी ने जो भी कविताएँ लिखीं, गीत लिखे, वे जागरण के गीत बन गए। अतीत गौरव और शहीदों का गुणगान राष्ट्रीय चेतना से लैस कविताओं की पहचान। यह प्रवृत्ति सुभद्रा जी के यहाँ स्पष्ट रूप से विद्यमान है।

राष्ट्रीय काव्यधारा में दो पक्ष स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते हैं- उग्र एवं नरम। सुभद्रा जी चूँकि गांधी जी से प्रभावित थीं तो उनका रुख नरम नीति के समर्थन में था, किंतु उनकी कविताओं की बात जहाँ तक होती हैं वहाँ हमें दोनों पक्षों का संस्पर्श दिखाई पड़ता है। एक ओर जहाँ उनके यहाँ 'झाँसी की रानी', 'राखी की चुनौती', 'वीरों का कैसा हो वसंत' जैसी ओज और

चुनौती देती कविताएँ हैं तो वहीं दूसरी ओर 'मुरझाया फूल', 'आहत की अभिलाषा' आदि कविताएँ भी हैं।

राष्ट्रीय काव्यधारा को गति देने तथा सुषुप्त जनमानस को झंकृत करने में सुभद्राकुमारी चौहान की कविताएँ महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती हैं। वे अपनी देशप्रेम से परिपूर्ण कविताओं के माध्यम से जन जन को उद्वेलित करने और शत्रु से सदा लोहा लेनें को प्रेरित करतीं हैं। उनके काव्य का अधिकतर हिस्सा राष्ट्र की तरुणाई को जगाने का कार्य करती है। उनकी कविताओं में आत्मविश्वास की अभूतपूर्व झलक देखते बनती है।

'स्वागत' शीषर्क कविता की यह बानगी देखिए :

हमें नहीं भय संगीनों का, चमक रही जो उनके हाथ।
जरा नहीं डर उन तोपों का, गरज रहीं जो बल के साथ।।
(मुकुल, स्वागत, पृ. 98)

गुलामी से आज़ादी की ओर देखने का माद्दा जो सुभद्रा जी के यहाँ देखने को मिलता है वह विरल है। उनकी जीवन के प्रति सकारात्मकता आकर्षक है। बेचैनी है किंतु निराशा का नामोनिशान नहीं। उनकी काव्य साधना का मूल उत्स देश की पराधीनता की बेड़ियों से मुक्ति और उज्जवल भविष्य की चाह है। साथ ही साथ वे नारी मुक्ति और दलितोत्थान को भी समुचित स्थान अपनी कविताओं में देती हैं जो उदात मानसिकता का परिचय देती हैं। अपने समय की सबसे मुखर कवयित्री के रूप में उन्हें ख्याति प्राप्त है। साफगोई उनकी प्रभावी है। ओज और भाव का अद्‌भुत संयम उनकी रचनाओं में सर्वत्र विद्यमान है।

बोध प्रश्न

- सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य का अधिकतर हिस्सा किस चेतना को जागता है?

1.4 पाठ सार

आधुनिक हिंदी काव्य की राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान का प्रमुख स्थान है। किसी भी काव्य संग्रह के प्रकाशन से पूर्व ही पाठक उनकी कविताओं की प्रतीक्षा करता था। उत्तरछायावादी काव्य की तमाम प्रवृतियाँ उनकी रचनाओं में विद्यमान हैं। मुख्य स्वर राष्ट्रीयता है। जो नानाविध रूपों में उभर कर आता है। कहीं समर्पण का भाव है, कहीं विद्रोह का तो कहीं बलिदानी का भाव है। कहीं आह्वान हैं कहीं चुनौती और ललकार है। किंतु उनके महत्व का एक महत्पूर्ण कारण उनका अपने परिजनों एवं परिवार जनों के प्रति अगाध स्नेह और सतत प्रेरणा का स्वभाव। दलितों और नारियों के प्रति अतरिक्त नेह और उनके हित की चिंता। सुभद्रा जी का मूल महत्व उनकी प्रेरणा की भावना में निहित है। वे हमें अतीत पर गौरव करना सिखाती हैं।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक हिंदी काव्य की सर्वाधिक तेजस्वी और ओजस्वी कवयित्री हैं।
2. वे हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में प्रमुख स्थान रखती हैं।
3. राष्ट्र, प्रेम, परिवार और प्रकृति उनके काव्य के मूल आधार हैं।
4. उनके काव्य में स्वानुभूति की तीव्रता दिखाई देती है।
5. जीवन के सकारात्मकता सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों की साझा विशेषता है।
6. सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य भक्ति, ओज और उदात्त गुण से परिपूर्ण है।

1.6 शब्द संपदा

1. अभूतपूर्व	=	अद्‌भुत, अनोखा
2. अस्मिता	=	अपनी सत्ता की पहचान
3. आलंबन	=	रस की उत्पत्ती में सहायक एक विभाव
4. आस्था	=	निष्ठा, श्रद्धा
5. कुप्रथा	=	बुरी प्रथा
6. सत्याग्रह	=	सत्य का आग्रह
7. सांप्रदायिकता	=	अपने संप्रदाय या धर्म को श्रेष्ठ मानते हुए दूसरे धर्म को गलत ठहराना

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग <u>500</u> शब्दों में दीजिए।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य की कथ्यगत विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।
3. 'सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की सबसे प्रबल संवाहिका रही हैं।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।
4. छायावादोत्तर कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान के महत्व का विस्तृत आकलन कीजिए।

खंड (ब)

(आ लघु श्रेणी के प्रश्न (

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं में चित्रित वात्सल्य भाव पर संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान सहज अनुभूतियों कीकवयित्रीहैं। इस कथन की पुष्टि कीजिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य-प्रेरणा पर एक संक्षिप्त टिपण्णी लिखिए।
4. प्रणय भाव सुभद्रा कुमारी चौहानकी कविताओं का अभिन्न अंग है। इस कथन को पुष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म किस विशेष त्यौहार के दिन हुआ था?

A. बसंत पंचमी B. विजयादशमी **C. नागपंचमी** D. रक्षाबंधन

2. सुभद्रा कुमारी चौहान को किस आंदोलन में भाग लेने वाली 'प्रथम महिला' के रूप में पहचाना जाता है?

A. असहयोग आंदोलन B. भारत छोड़ो आंदोलन

C. सविनय अवज्ञा आंदोलन D. चंपारण सत्याग्रह

3. सुभद्रा कुमारी चौहान को उनके काव्य संग्रह 'मुकुल' पर कौन सा प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ था?

A. ज्ञानपीठ पुरस्कार B. साहित्य अकादमी पुरस्कार

C. मंगलाप्रसाद पारितोषिक **D. सेकसरिया पुरस्कार**

4. सुभद्रा कुमारी चौहान के पति ठाकुर लक्ष्मण सिंह ने किस माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया?

A. वकालत B. चित्रकला C. सैन्य सेवा **D. पत्रकारिता**

5. सुभद्रा कुमारी चौहान की कौन सी रचना 'कहानी संग्रह' की श्रेणी में आती है?

A. सभा का खेल B. मुकुल C. त्रिधारा **D. बिखरे मोती**

6. सुभद्रा जी की प्रसिद्ध कविता 'नीम' उनकी किस आयु में प्रकाशित हुई थी?

A. 15 वर्ष B. 21 वर्ष C. 18 वर्ष **D. 9 वर्ष**

7. सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य प्रतिभा को निखारने में किस महान कवि का अतुलनीय योगदान रहा, जिन्होंने उन्हें 'कर्मवीर' के लिए लिखने को प्रेरित किया?

A. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' B. महादेवी वर्मा

C. माखनलाल चतुर्वेदी D. जयशंकर प्रसाद

8. सुभद्रा जी की कविताओं में 'मुरझाया फूल' किसका प्रतीक माना गया है?

A. प्राकृतिक सौंदर्य का ह्रास **B. जाति आधारित भेदभाव के शिकार लोग**

C. युद्ध में शहीद सैनिक D. वृद्धावस्था की पीड़ा

9. भारतीय तट-रक्षक सेना ने 2006 में सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में क्या किया था?

A. एक संग्रहालय बनाया B. एक विमान का नाम रखा

C. एक तटरक्षक जहाज को उनका नाम दिया D. एक पदक शुरू किया

10. सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी 'मिला तेज से तेज' की रचना किसने की है?

A. रामकुमार वर्मा B. ठाकुर लक्ष्मण सिंह C. महादेवी वर्मा **D. सुधा चौहान**

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. सुभद्रा साहित्य और राष्ट्रीय कविता : कमलाकांत पाठक
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : नगेंद्र
3. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना : सुधा शंकर पांडे
4. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना : हरी दामोदर

इकाई 2 : जलियाँवाला बाग में बसंत

रूपरेखा

2 1.प्रस्तावना
2 2.उद्देश्य
2 3.मूल पाठ : जलियाँवाला बाग में बसंत
2.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
2.3.2 अध्येय कविता
2.3.3 विस्तृत व्याख्या
2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
2 4.पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियाँ
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

सुभद्रा कुमारी चौहान आधुनिक युगीन राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना से संपन्न एक ख्याति प्राप्त एवं लोकप्रिय रचनाकार हैं। हम उनके जिस रूप से परिचित हैं वह उनका कवि रूप है। आधुनिक हिंदी काव्य जब अपनी करवटें बदल रहा था तब जिन कवियों ने अपनी रचनाओं द्वारा जन-जीवन के अंतर्मन में देश प्रेम की भावना को उद्‌बुद्ध करते हुए उनमें एक विशेष प्रकार की स्फूर्ति का संचार किया उनमें सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम विशेष आदर के साथ लिया जाता है। अतएव उनका अप्रतिम योगदान, स्मरणीय है। इनके द्वारा सृजित कृतियाँ हिंदी साहित्य जगत में विशिष्ट पहचान रखती हैं। 'साहित्य जनता का प्रतिबिम्ब है'- इस कथन को अक्षरशः सही साबित करने वाली कवयित्री के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान हमारे समक्ष प्रस्तुत होती हैं। अपनी रचनाओं के माध्यम से इन्होंने राष्ट्र गौरव और अस्मिता की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग की प्रेरणा दी तथा स्वदेश प्रेम, राष्ट्रीय स्वाभिमान, स्वधर्म अभिमान, सांस्कृतिक ऐक्य, जन-जागृति आदि का संदेश दिया। स्वतंत्रता पूर्व की अपनी रचनाओं में जहाँ इन्होंने देशवासियों में क्रांति, शौर्य एवं वीरत्व के भाव भरे वहीं स्वातंत्र्योत्तर रचनाओं में विषाक्त वातावरण, शासन तंत्र की दुर्बलता, पाकिस्तानी वैमनस्य, चीनी आक्रमण आदि का वर्णन कर जागृति का संदेश दिया है। हम जिन सुभद्रा कुमारी चौहान से परिचित हैं, उन्होंने प्रसिद्धि अपनी पूर्व की रचनाओं से पाई। 'झाँसी की रानी' कविता के माध्यम से वे जन-जन के हृदय में विद्यमान हैं। यह अतिशयोक्ति बिलकुल नहीं होगी यदि हम कहें कि मैथिलीशरण गुप्त एवं रामधारी सिंह दिनकर जिस तरह

हमारे राष्ट्रीय कवि हैं, उसी प्रकार सुभद्रा जी हमारी राष्ट्रीय कवयित्री हैं। इस इकाई के माध्यम से हम उनके जीवन और उनकी रचनाओं के महत्व का आकलन करने का प्रयास करेंगे।

2.2 उद्देश्य

छात्रो! इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य चेतना से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय कविता में राष्ट्रीय भावना से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय कविता की भाव सौंदर्य को समझ सकेंगे।
- अध्येय कविता की भाषा-शैली से परिचित हो सकेंगे।

2.3 मूल पाठ जलियाँवाला बाग में बसंत :

2.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

जलियाँवाला बाग हत्याकांड भारत के इतिहास से जुड़ी हुई एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है। यह घटना इतनी भयावह थी कि दुनिया भर में इसकी भर्त्सना हुई। यह देश की स्वतंत्रता के लिए चल रहे राष्ट्रीय आंदोलनों के उभार को कुचलने के लिए अंग्रेजों द्वारा सुनियोजित ढंग से अंजाम दी गई घटना थी ताकि पुनः 1857जैसे अखिल भारतीय आन्दोलन की कोई सोच भी न सके। इस हेतु ब्रिटिश सरकार ने 18मार्च, 1919 में रॉलेट एक्ट जैसा काला एवं अमानवीय कानून लागू कर दिया। इस कानून के पारित हो जाने के उपरांत ब्रिटिश सरकार किसी भी भारतीय पर अदालत के बिना मुकदमा चला सकती थी, उसे जेल में बंद कर सकती थी। उसे मुकदमा दायर करने वाले के नाम का खुलासा करना भी अब ज़रूरी नहीं था। अंग्रेजों ने मन बना लिया था कि किसी भी प्रकार के क्रांतिकारी गतिविधियों को पूर्ण रूप से निषेधित किया जा सके, व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाप्त कर दिया जाए। इस कानून की सहायता से ब्रिटिश सरकार किसी भी प्रकार के राजनितिक प्रतिरोध एवं आन्दोलन को कुचलने में सफल हो सकती थी। पूरे देश में विरोध प्रारंभ हो गया। कई बड़े नेताओं ने त्यागपत्र दिया। देशव्यापी हड़तालें, जुलूस, उपवास, प्रार्थना-सभाएँ और प्रदर्शन होने लगे। जगहमंडल स्थापित हुए। पंजाब में भी प्रतिरोध -सत्याग्रह जगह-10 देखने को मिले। पंजाब में अप्रैल,1919 को प्रसिद्ध नेता सत्यपाल एवं किचलू की गिरफ्तारी हुई। 12 अप्रैल को ब्रिटिश सरकार ने अमृतसर के दो बड़े नेताओं चौधरी बुगामल और महाशा रतन चंद को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इससे माहौल बिगड़ गया। सैन्य अधिकारियों के दमन से आम जनता में रोष और असंतोष भर गया। क्रोधित जनता ने यूरोपीय नैशनल बैंक के मैनेजर को मार दिया एवं भवन को आग के हवाले कर दिया। टाउन हॉल और डाक घर पर भी हमले हुए। अँग्रेज़ सहम गए उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि यदि इस विरोध प्रदर्शन को थामा नहीं गया तो खतरा उत्पन्न हो सकता है।

जलियाँवाला बाग पंजाब के अमृतसर में एक स्थान है। यहाँ 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व में भाग लेने के लिए लोग बाग में एक जुट हुए थे। साथ ही साथ वे ब्रिटिश

सरकार द्वारा रॉलेट एक्ट पारित किए जाने का अहिंसात्मक प्रतिरोध भी कर रहे थे। तकरीबन 20,000 लोग बाग में एकत्रित हुए थे जिनमें बच्चे, बूढ़े, महिलाएँ एवं युवा शामिल थे। वहीं अँग्रेज़ जनरल डायर ने अपने वरिष्ठ मायकल ओडवायर के आदेश पर निहत्थे-निर्दोष लोगों पर गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया। सिपाहियों ने 10 मिनट तक गोलियाँ चलाईं। गोलीबारी के मध्य लोग जान बचाने के लिए भागे। मैदान से बाहर जाने के लिए मात्र एक रास्ता था जिसे सैनिकों ने बंद कर रखा था। बाग चारों ओर से 10 फुट की दीवार से बंद था। ऐसे में अनेक लोग अपनी जान बचाने के लिए वहाँ स्थित कुएँ में कूद पड़े। कुछ ही मिनटों में जलियाँवाला की मिट्टी निर्दोष लोगों के खून से लाल हो गई। अंगेजों ने 370 लोगों के मरने की पुष्टि की गई। जबकि उस वक़्त के गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार लगभग एक हजार लोगों की मृत्यु हुई और 1500 के करीब लोग घायल हुए। इस जघन्य हत्याकांड के उपरांत अंग्रेजों द्वारा की गई लिपा-पोती ने स्वतंत्रता-प्राप्ति के हौसलों को और बुलंद कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्ति के इतिहास में निश्चय ही यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना एक काले-अध्याय के रूप में अंकित है।

इस निंदनीय घटना से व्यथित होकर ही सुभद्रा कुमारी चौहान ने 'जलियाँवाला बाग में वसंत' जैसे मार्मिक कविता की रचना की। ऋतुराज वसंत का आगमन तो निश्चित है। ऋतु-चक्र प्राकृतिक अवस्था है, किंतु कवयित्री इस कविता के माध्यम से निवेदन करती हैं कि इस बार जब वसंत आए तो अपने क्रिया-कलापों को लेकर संयम बरते। साथ ही साथ फिजा में जो गमगीनी छाई हुई थी, उसका भी हवाला हमें कविता के माध्यम से प्राप्त होता है।

2.3.2 अध्येय कविता

[1]

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिलीं हैं कंटक कुल से,
वे पौधे, वे पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।

[2]

परिमल-हीन पराग दाग़ सा बना पड़ा है,
हाँ! यह प्यारा बाग! खून से सना पड़ा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे आना
यह शोकस्थान, यहाँ मत शोर मचाना।

[3]

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।

कोकिल गावें, किंतु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

[4]

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

[5]

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी ला कर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

[6]

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना
कर के उसकी याद अश्रु के ओस बहाना।
तड़प तड़प कर विरुद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।
यह सब करना, किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोकस्थान बहुत धीरे से आना।।

निर्देश : 1. इन पदों का सस्वर वाकहन कीजिए।
2. इन पदों का मौन वाचन कीजिए।

2.3.3 विस्तृत व्याख्या

यहाँ कोकिला नहीं, काग हैं, शोर मचाते,
काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिलीं हैं कंटक कुल से,
वे पौधे, वे पुष्प शुष्क हैं अथवा झुलसे।

शब्दार्थ : कीट : कीड़ा, जमीन पर रेंगने वाले छोटे-छोटे जीव। शुष्क = सूखा, रूखा।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : कविता के माध्यम से कवयित्री जलियाँवाला बाग में अंग्रेजों द्वारा निहत्थे लोगों पर गोली चलाए जाने की मार्मिक कथा प्रस्तुत करती हैं। जलियाँवाला बाग पंजाब के अमृतसर में एक स्थान है। यहाँ 13 अप्रैल, 1919 को बैसाखी के पर्व पर अंग्रेज़ सरकार के विरोध में लोग एकत्रित हुए थे। वहीं अंग्रेज़ जनरल डायर ने अपने वरिष्ठ मायकल ओडवायर के आदेश पर निहत्थे-निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाने का आदेश दिया। इस हत्याकांड में हज़ारों भारतीय शहीद हुए थे। कवयित्री प्रकृति एवं परिस्थिति की विभिन्न दशाओं के बहाने वह हमें जलियाँवाला बाग में हुए खौफनाक मंज़र से परिचित करवाती हैं।

व्याख्या : कवयित्री शोक संतप्त हो कर कहती हैं कि जलियाँवाला बाग अब एक शोक-स्थल में परिवर्तित हो गया है। अब यहाँ विरानी छा गई है। सन्नाटा पसरा हुआ है। यहाँ कोयल नहीं, केवल कौए हैं। इसलिए किसी कोयल की मधुर आवाज़ सुनाई नहीं देती जो ध्वनि सुनाई देती भी है वह कौओं का शोर है। काले-काले कीड़ों को देखकर भँवरों का भ्रम होता है। भँवरे उल्लास का प्रतीक हैं, किंतु यहाँ तो अमंगल के प्रतीक केवल कीड़े दिखाई दे रहे हैं। माहौल इतना गमगीन है की कलियाँ भी काँटों के बीच अधखिली सी मिली हैं। कलियों ने भी उदासी में अपना खिलना स्थगित कर दिया है। चहुँओर फैले मृत्यु की विभीषिका के बीच, यहाँ के पौधे भी सूख गए हैं तथा झुलस गए हैं। कुल मिलाकर प्रकृति में भी उदासी छाई हुई है।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. 'काले काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते' में 'क' एवं 'भ्र' की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- जलियाँवाला बाग में कोयल की जगह कौओं का शोर क्यों हैं? संक्षेप में लिखिए।
- जलियाँवाला बाग में ऐसा क्या हुआ था जिसके विषाद में कलियाँ अधखिली है और पुष्प झुलस गए हैं?

परिमल-हीन पराग दाग़ सा बना पडा है,
हाँ! यह प्यारा बाग! खून से सना पडा है।
ओ, प्रिय ऋतुराज ! किंतु धीरे आना
यह शोकस्थान, यहाँ मत शोर मचाना।

शब्दार्थ= परिमल : सुगंध। ऋतुराज= ऋतुओं का राजावसंत-। शोक= दुःख।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता जलियाँ वाला'बाग में बसंतसे ली ' गई हैं।

प्रसंग :पूर्ववत।

व्याख्या कवियत्री कहती हैं की यह : बाग जहाँ जघन्य कृत्य हुआ है, अब दुर्गंधयुक्त है, यहाँ अब किसी प्रकार की सुवास की आशा नहीं की जा सकती है। जो फूल हैं वे सुगंधहीन हैं और ऐसा प्रतीत होता ही की बाग को दाग़ सा लग गया है। यानी अशुभ हुआ है। वे कहती हैं कि यह बाग जो कभी प्रिय हुआ करता था वहाँ कत्ले आम होने की वजह से पूरा-बाग खून से सना हुआ है। कवियत्री विनम्र निवेदन करती हैं कि हे ऋतुओं के राजा बसंत, यहाँ आना तो दबे पाँव आना, धीरे आना ताकि किसी को भी तुम्हारे आगमन का भान न हो, यह बाग जो कभी हर्ष और उल्लास का कारण था अब एक शोक व्यक्त करने के स्थान में परिवर्तित हो चुका है। इसलिए यदि तुम्हारा आगमन इस बाग में हो तो शांति से आना किसी भी प्रकार का शोर न मचाना।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. में उपमा 'दाग़ सा' अलंकार है।
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- फूलों में खुशबू क्यों नहीं है? जलियाँवाला बाग में ऐसा क्या घटा था। संक्षेप में लिखिए।
- किसी शोकस्थान की क्या मर्यादाएँ होती हैं?

वायु चले, पर मंद चाल से उसे चलाना ,
दुःख की आहें संग उड़ा कर मत ले जाना।
कोकिल गावें, किंतु राग रोने का गावें,
भ्रमर करें गुंजार कष्ट की कथा सुनावें।

शब्दार्थ = वायु : पवन। मंद = धीमा, मद्धम। कोकिल= कोयल। राग= धुन। गुंजार ध्वनि। =

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँवाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग : पूर्ववत।

व्याख्या: : कवयित्री वसंत के ऋतु से अनुरोध करते हुए कहती हैं कि हे ऋतुराज तुम्हारे आगमन पर यदि वायु चले तो वह भी मंद चाल से चले क्योंकि यह स्थल अब शोक-स्थल में परिवर्तित हो चुका है। इसलिए तुमसे आग्रह है कि तुम वायु को मंद गति से चलाना। कहीं ऐसा न हो कि जो लोग अपने इष्ट के असमय जाने पर शोक-संतप्त हैं उनकी आहें वायु उड़ाकर न ले जाए। कोयल यदि भूले से गीत गायें तो उनके गीतों में रुदन का राग हो ताकि किसी को ऐसा न लगे

कि उसकी मधुरता में उल्लास का भाव है और उससे किसी को कष्ट पहुँचे। भौंरें यदि गुंजार करें भी तो उनमें भी कष्ट की अनुभूति हो। ऐसा प्रतीत न हो की कि दुःख के अलावा को अन्य भाव फिज़ा में व्याप्त है।

विशेष

- जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
- गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- कवयित्री वायु से मंद-मंद बहने का आग्रह क्यों कर रही हैं?
- कवयित्री कोयल और भौंरे से किस प्रकार का निवेदन कर रही हैं?

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ कुछ गीले।
किंतु न तुम उपहार भाव आ कर दिखलाना
स्मृति में पूजा हेतु यहाँ थोड़े बिखराना।

शब्दार्थ = पुष्प :फूल। सुगंध = खुशबू। उपहार भाव= भेंट देने का भाव। स्मृतियाद। =

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँवाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग :पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री वसंत से विनम्र निवेदन कर रही है कि यह स्थल एक शोक स्थल में परिवर्तित हो चुका है, इसलिए फूल यदि लाए जाएँ तो वे अधिक चटकीले न हों, अर्थात बहुत रंग बिरंगे न होकर साधारण हों तथा उनमें यदि सुगंध हो भी तो वह बहुत फीकी हो। वे ओस से भीगे हुए हों। यानी उनमें आद्रता हो, करुणा और संवेदना हो। इसी तरह जब तुम आओ तो ऐसा बिलकुल न प्रतीत हो कि तुम उपहार देने के भाव से आए हो। इतने लोगों का अपनी जान से हाथ धो बैठना किसी भी तरह से उपहार देने की घटना नहीं है। इसलिए जब तुम आना तो केवल श्रद्धा का भाव व्यक्त करते हुए थोड़े से पुष्प अर्पित कर देना ताकि स्मृति में हम शहीदों का वंदन कर सकें।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. में उपमा अलंकार है। 'ओस से'

3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- ऋतुराज बसंत से किस तरह के पुष्प लाने का आग्रह कवयित्री कर रही हैं ?
- कवयित्री उपहार भाव का निषेध करने के लिए क्यों कह रही हैं? संक्षेप में लिखिए।

कोमल बालक मरे यहाँ गोली खा कर
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी ला कर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

शब्दार्थ = कोमल : सुकुमार। भिन्न= अलग।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग :पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह बताने की कोशिश करती हैं कि जनरल डायर की क्रूरता इतनी अधिक थी कि जवान-बच्चे-बूढ़ों का भेद तक नहीं किया गया और सभी को मौत के घाट के उतार दिया गया। इस कारण कई छोटे-छोटे बच्चे तक गोली के शिकार हो गए। कवयित्री ऋतुराज से निवेदन करती है कि इन कोमल बालकों को जो अपने जीवन के प्रथम चरण को भी पूर्ण नहीं कर पाए उनके लिए उन्हीं की भांति कलियाँ लेकर आना और उनकी स्मृति में अर्पित कर देना। इसी तरह वे सभी लोग जो किसी आशा से वशीभूत होकर बाग में अपना प्रतिरोध दर्ज करने आए थे उनकी भी उम्मीदों पर वज्र प्रहार हुआ है और उनके हृदयों को पीड़ा पहुँची है। वे अपने परिवार एवं देश से विछिन्न हो गए हैं। वे जो इस देश का भविष्य भी हो सकते थे।

विशेष

1. जलियाँवाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. मुहावरेदार भाषा का प्रयोग है। हृदय छिन्न होना= दिल को चोट पहुँचना
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- जलियाँवाला बाग में जो नरसंहार हुआ था क्या उसमें सिर्फ बड़ेबुज़ु-र्ग ही मारे गए थे या अन्य भी ?संक्षेप में लिखिए।

- कोमल बच्चों के मारे जाने पर क्याक्या नुकसा-न हुआ है?

कुछ कलियाँ अधखिली यहाँ इसलिए चढ़ाना:
कर के उसकी याद अश्रु के ओस बहाना।
तड़प तड़प कर वृद्ध मरे हैं गोली खा कर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जा कर।
यह सब करना, किंतु यहाँ मत शोर मचाना,
यह है शोकस्थान बहुत धीरे से आना।।

शब्दार्थ : अश्रु = आँसू। ओस= शबनम, तुहिन। वृद्ध = बूढ़े। शुष्क = सूखे।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'जलियाँ वाला बाग में बसंत' से ली गई हैं।

प्रसंग :पूर्ववत।

व्याख्या : कवयित्री उक्त पंक्तियों के माध्यम से यह ऋतुराज बसंत से कहती हैं कि जब तुम यहाँ आओ तो अधखिली कलियाँ इसलिए चढ़ाना ताकि तुम्हारी स्मृति में यह शहादत दर्ज हो जाए और तुम निर्दोष मासूमों को याद कर थोड़े आँसू बहा लेना। इसी तरह जहाँ-जहाँ तड़पते हुए बुजुर्ग मरे हैं, उनके सम्मान में तुम शुष्क पुष्प गिरा देना। यह सब करते हुए यह भी एहतियात बरतना की कोई शोर न हो क्योंकि यह अब एक शोक स्थल है अतएव यहाँ जब भी आना बहुत धीरे से, मंथर गति से आना।

विशेष

1. जलियाँ वाला बाग नरसंहार का कारुणिक एवं हृदय को द्रवित कर देने वाले दृश्य का चित्रण है।
2. में अनुप्रास अलंकार है। 'तड़प-तड़प'
3. गेय एवं मुक्तक पद है।

बोध प्रश्न

- वृद्ध जलियाँवाला बाग में किस तरह मरे हैं? अपने शब्दों में उत्तर लिखिए।
- कवयित्री किसी भी प्रकार का शोर क्यों नहीं चाहती हैं?

2.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

स्वाधीनता आन्दोलन भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जिस राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की आधारशीला तात्कालिक परिस्थितियों के अनुसार रखी गई थी। उसी परम्परा में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में छायावादोत्तर कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान अंकित होती हैं। अपना सक्रिय योगदान देने वाले कवियों में बदरीनारायण

चौधरी 'प्रेमधन', राधा चरण गोस्वामी, प्रताप चरण मिश्र, मैथिली शरण गुप्त, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन, माखन लाल चतुर्वेदी, सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह 'दिनकर', जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नाथूराम शर्मा आदि प्रमुख रचनाकारों में शामिल किए जाते हैं।

हिंदी साहित्य में सुभद्राकुमारी चौहान जी की महत्ता को स्थापित करता हुआ मुक्तिबोध का यह कथन द्रष्टव्य है - "सुभद्राकुमारी चौहान के साहित्य में जो स्वाभाविक प्रवाहमयी सरलता है और जो अहेतुक गंभीर मुद्रा का खटकता सा लगने वाला अभाव है, उसका कारण है जीवन के उस मौलिक उद्वेग का राग, जिसने समाज में भिन्न-भिन्न रूप धारण किए। राष्ट्रीय आंदोलन उसका एक रूप था, उसकी एक अभिव्यक्ति थी। स्त्रियों की स्वाधीनता का प्रश्न उसका दूसरा रूप था और पतित जातियों का उत्थान तीसरा....कुछ विशेष अर्थों में सुभद्रा जी का राष्ट्रीय-काव्य हिंदी में बेजोड़ है। क्योंकि उन्होंने उस राष्ट्रीय आदर्श को जीवन में समाया हुआ देखा है, उसकी प्रवृत्ति अपने अंतःकरण में पाई है, अतः वह अपने समस्त जीवन-संबंधों को उसी प्रवृत्ति की प्रधानता पर आश्रित कर देती हैं, उन जीवन संबंधों को उस प्रवृत्ति के प्रकाश में चमका देती हैं.... सुभद्रा कुमारी चौहान नारी के रूप में ही रहकर साधारण नारियों की आकांक्षाओं और भावों को व्यक्त करती हैं। बहन, माता, पत्नी के साथ-साथ एक सच्ची देश सेविका के भाव उन्होंने व्यक्त किए हैं। उनकी शैली में वही सरलता है, वही अकृत्रिमता और स्पष्टता है जो उनके जीवन में है।"

राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा में सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपना विशिष्ट योगदान दिया था। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं का अध्ययन-विश्लेषण करने से हमें तात्कालिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है। यह तात्कालिक परिस्थितियों की उपज ही थी कि उनकी कविताओं में समसामयिक विषयों को प्राथमिकता मिली। देश स्वाधीनता प्राप्ति के मुहाने पर खड़ा था, देश का खासो-आम खुद को इस स्वतंत्रता के आन्दोलन में झोंकने का प्रयास कर रहे थे। इसी कारण उनकी कविताओं का प्रमुख स्वर वीर रस है जो कि राष्ट्र-प्रेम की उपज है। इनके अलावा प्रेम के नानारूपों का दर्शन उनकी कविताओं में होता है। वात्सल्य प्रेम, लोक प्रेम एवं आध्यात्मिक प्रेम कुछ मुख्य विशेषताएँ हैं। वात्सल्य के अंतर्गत भक्ति भावना भी हमें उनकी कविताओं में देखने को मिलता है। आइए हम उनकी कविताओं में व्याप्त विशेषताओं को चिह्नित करने की चेष्टा करें।

काव्यगत विशेषताएँ

राष्ट्रप्रेम

राष्ट्रीय भावना में राष्ट्र-वंदना, मातृभूमि तथा जन्मभूमि के प्रेम का महत्वपूर्ण स्थान है। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान का अपनी भूमि के प्रति सदा समर्पण का भाव रहा है। देश के प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त कर के वह सच्चे सपूत होने को स्थापित करती हैं :

"किंतु क्या हुआ माता, मैं भी
तो हूँ तेरी ही संतान
इसमें ही संतोष मुझे के
इसमें ही आनंद महान
मुझ-सी एक एक की बन तू
हुई महान, सभी भाषाओं
की तू ही सरताज हुई।" (मातृमंदिर, मुकुल, पृ. 99)

कवयित्री मातृभूमि पर अपना सर्वस्व न्योछावर करने से एक पल भी नहीं हिचकती। बलिदान होने के लिए भी वे सदैव तैयार रहती हैं :

"न होने दूंगी अत्याचार
चलो, मैं हो जाऊं बलिदान" (व्यथित हृदय, मुकुल, पृ. 103)

इसी प्रकार :

"आते हो भाई ! पुनः पूछती हूँ-
कि माता के बंधन की लाज तुमको?" (राखी की चुनौती, मुकुल, पृ. 77)

राष्ट्रीय चेतना स्वभाववश सार्वभौमिक, काल-निरपेक्ष एवं सार्वदेशीय होती है। मातृभूमि की रक्षा और उसकी स्वतंत्रता में तन-मन-धन न्योछावर कर देना हम नागरिक का प्रथम कर्तव्य होता है। एक देश की स्वतंत्रता किसी अन्य देश के लिए प्रेरणास्रोत का काम करती है :

"असहयोग, पर मिट जाना
यह जीवन तेरा होगा
हम होंगे स्वाधीन, विश्व का
वैभव धन तेरा होगा।" (मातृमंदिर में, कोकिला, पृ. 100)

हजारों स्वतंत्रता सेनानी, लाठी-चार्ज, कोड़ों की मार और जेल की कड़ी यातनाएँ भुगतते थे। सुभद्रा कुमारी जी स्वयं जेल गई थीं। पर इससे स्वतंत्रता प्राप्ति की इच्छा और प्रबल हुई। 'सेनानी का स्वागत' नामक कविता में कवयित्री के जज़्बात इस कदर पेश हुए हैं :

"गोली लाठी-चार्ज जेल की ये भीषण दीवारें

काल-कोठरी, दण्ड यातना, वे कोड़ों की मारें
प्रभुता मद से भरी शत्रु की व्यंग्य भरी बौछारें
साक्षी है साहस की, फिर जीतें या हारें" (वे कुंजे, कोकिला)

उनकी सर्वप्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' की भी कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं, लक्ष्मीबाई के बहाने वे एक ऐसी वीरांगना का स्मरण करती हैं जो राष्ट्र-प्रेम की एक मिसाल बन कर हमारे समक्ष प्रस्तुत होती हैं :

तो भी रानी मार-काटकर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,
घोड़ा आया, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार (झांसी की रानी, मुकुल, पृ. 59)

देशप्रेम और राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत वीरों का कैसा हो बसंत, राखी की चुनौती, विजयादशमी, स्वदेश के प्रति, झंडे की इज्जत में आदि कविताएँ भारतीय नवयुवकों का देश के प्रति प्रेम एवं कर्तव्य के प्रति जागरूक करती है। विरल ही होंगे जो 'झाँसी की रानी' कविता से परिचित नहीं होंगे

डॉ. रामकुमार वर्मा जी ने 'मुकुल' कविता संग्रह की भूमिका में स्पष्ट लिखा है कि- "सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में विविधता होते हुए भी उनकी कविताएँ राष्ट्रीय हैं। क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय मानरूप है। सच्चे अनुभवों ने उनकी इन कविताओं को अधिक स्पष्ट और हृदयग्राही बना दिया है। इन्होंने अपनी राष्ट्रीय कविताओं में वीर भाव के काव्य-भावुकता इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओं का मूल्य वस्तुतः देश के मूल्य के बराबर हो जाता है।"

वात्सल्य प्रेम-

स्त्री व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा है ममत्व। जननी होने के कारण वात्सल्य भाव प्राकृतिक रूप से स्त्री को प्राप्त है। सुभद्रा कुमारी चौहान भी इसका अपवाद नहीं हैं। डॉ. किशोरीलाल जी के अनुसार - "सुभद्रा जी का केंद्रस्थ भाव 'प्रेम' है। उन्होंने वात्सल्य रस की बेजोड़ कविताएँ लिखी हैं। 'मेरा नया बचपन' उनकी प्रसिद्द कविता है। उन्होंने बालिका के बहाने आनेवाले युग में लड़कियों के सामाजिक महत्त्व को रेखांकित किया है, जहाँ वे पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार, समाज और राष्ट्र कि समृद्धि में योगदान देंगी।" (अंतिम यात्रा, डॉ. किशोरी लाल, राष्ट्रभक्त कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान, पृ. 92)

अपने बचपन की स्मृतियों कि खोई एवं उन्हें स्मरण कर पुलकित हो सुभद्रा जी जब अपनी बेटी को देखती है तो उसका मधुर चित्रण हमें 'मेरा नया बचपन' कविता में हमें देखने को मिलता है। कवियित्री बेटी के बहाने पुनः बचपन का अनुभव कर रही है :

"मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी

नंदन वन-सी फूल उठी यह छोटी-सी कुटिया मेरी

माँ ओ कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी

कुछ मूंह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने आई थी" (मेरा नया बचपन)

बच्चों के प्रति प्रेम उनका अगाध प्रेम ही था जो 'कदम्ब का पेड़' कविता बनकर हमारे समक्ष निसृत हुआ :

"वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं भी बांसुरी बजाता

अम्मा-अम्मा कह वंशी के स्वर में तुम्हें बुलाता

बहुत बुलाने पर भी, माँ जब नहीं उतर कर आता

माँ, तब माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता" (कदम्ब का पेड़)

इसी तरह 'खिलौनेवाला' कविता में बच्चों का भोलापन देखने को मिलता है-

"हरा-हरा तोता पिंजड़े में

गेंद एक पैसे वाली

छोटी सी मोटर गाड़ी है

सर-सर चलने वाली"

किसी बच्चे का रुदन कर्ण-प्रिय हो सकता है, इसे कवयित्री कविता 'इसका रोना' कविता में बड़े ममतामयी ढंग से दर्शाती हैं :

"तुम कहते हो- मुझको इसका रोना नहीं सुहाता है।

मैं कहती हूँ- इस रोने से अनुपम सुख छा जाता है॥

सच कहती हूँ, इस रोने की छवि को जरा निहारोगे।

बड़ी बड़ी आँसू की बूंदों की मुक्तावली वारोगे॥" (इसका रोना, मुकुल, पृ. 44)

कहा जा सकता है कि मातृ-मन कोमल भावों का संपुंज होता है। निश्छल प्रेम का एक रूप वात्सल्य प्रेम है। प्रेम के इस रूप को हम सुभद्रा कुमारी जी कविताओं में देख सकते हैं।

लोक प्रेम-

कवयित्री के अंदर मानव-प्रेम कूट-कूट कर भरी हुई। एक मंझे हुए रचनाकार की पहचान लोक से जुड़ाव से पता चलता है। 'झाँसी की रानी' कविता में ऐसे कई उदाहरण हमें देखने को

मिलते हैं जिससे उनके अन्य प्रान्तों के लोगों से जुड़ाव उनके लोक-जुड़ाव को पुख्ता करता है। 'बुंदेले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी' की टेक उनके लोक से जुड़ाव को स्थापित करता है। सरल भाषा में ओज के साथ छंद का उतार-चढ़ाव अपने आप में एक अद्भुत प्रयोग था। पूर्व में देहातों में इसी तर्ज पर 'आल्हा-उदल' की वीरगाथा गई जाती थी।

प्रकृति प्रेम-

प्रकृति के प्रति आसक्ति तात्कालिक साहित्यिक आंदोलन का प्रभाव था। सुभद्राकुमारी चौहान भी इससे अछूती नहीं रहीं। प्रकृति प्रेम के अनेकानेक रूप उनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं-

"क्या गाती हो किसे बुलाती
बतला दो कोयल रानी
प्यासी धरती देख मांगती
हो क्या मेघों से पानी? (कोयल)

इसी प्रकार कवियित्री के मनोभावों का प्रकृति के साथ सामजस्य 'वेदना' कविता में बिठाने का यत्न किया गया है :

"दिन में प्रचंड रवि-किरणें
मुझको शीतल कर जातीं।
पर मधुर ज्योत्स्ना तेरी,
हे शशि ! है मुझे जलाती॥" (वेदना)

कवियित्री नीम का मानवीकरण कर एक सहज चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करती हैं-

"हे नीम ! यद्यपि तू कड़ू, नहीं रंच-मात्र मिठास है।
उपकार करना दूसरों का, गुण तिहारे पास है।।
नहिं रंच-मात्र सुवास है, नहिं फूलती सुन्दर कली।
कडुवे फलों अरु फूल में तू सर्वदा फूली-फली।।
तू सर्वगुणसम्पन्न, तू जीव-हितकारी बड़ी।
तू दुःख हारी है प्रिये ! तू लाभकारी है बड़ी॥"(नीम)

इनके आलावा उनकी कविताओं में प्रेम के अन्य रूप भी हमें प्राप्त होते हैं, दाम्पत्य प्रेम, भ्रातृ-प्रेम, अराध्य अथवा प्रियतम प्रेम में एक ओर प्रणय निवेदन है, शिकायते हैं तो वहीं दूसरी ओर देश प्रेम के नाम पर नागरिक कर्तव्य बोध के स्वर भी उनकी कविताओं में विद्यमान हैं।

भाषा-शैली

भाषा शैली की जहाँ तक बात है, सुभद्रा जी की भाषा सहज, सरल और ग्राह्य है। उनकी कविताओं की विशिष्ट पहचान उनकी गेयता है। गीतात्मकता के गुण लिए उनकी कविताएँ

इसलिए स्मरण योग्य भी हैं। संगीतात्मकता भी उनकी कविताओं का एक महत्पूर्ण पहलू है। ताल और तुक में अभूतपूर्व सामंजस्य उनकी कविताओं का प्राण है। शब्द चयन ऐसी कविताओं में महत्पूर्ण भूमिका निभाते हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्यकला की विशेषता यह है कि उनकी भाषा भले ही बहुत सरल है पर उसमें लक्षणा शब्द शक्ति और प्रतीकों के बहुत गहन अर्थ विद्यमान होते हैं। आइए, पहले 'लक्षणा' एवं 'प्रतीक' शब्दों के अर्थ समझ लें। शब्दों के अर्थ प्रकट करने वाली शक्ति को ही 'शब्दशक्ति' कहते हैं। शब्दों के अर्थ तीन प्रकार के होते हैं- मुख्य अर्थ, लक्ष्य अर्थ और व्यंग्य अर्थ। इसलिए शब्दशक्तियाँ भी तीन मानी गई हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा शक्ति से शब्द का मुख्य अर्थ, प्रचलित अर्थ या शब्दकोष में दिया गया अर्थ निकलता है। पर कभी-कभी वह अर्थ पर्याप्त नहीं होता। तब मुख्य अर्थ से जुड़ा नया अर्थ ग्रहण करना पड़ता है। इसे लक्ष्यार्थ कहते हैं। लक्ष्यार्थ देने वाली शब्द की शक्ति 'लक्षणा' कहलाती है। तीसरे प्रकार की शब्द शक्ति होती है व्यंजना। बहुत सरल शब्दों में व्यंजना मुख्य यानी अभिधार्थ और लक्ष्यार्थ से अलग अर्थ की प्रीति कराना होता है। इसे व्यंग्यार्थ या ध्वन्यार्थ कहते हैं। इस कविता में सुभद्रा जी का प्रकृति से प्रतीकों का आलंबन लेकर हमें लक्ष्यार्थ के समीप ले जाना है। लक्ष्यार्थ वह अनहोनी घटना है जो जलियांवाला बाग में घटित हुई। जिसने भारतियों के हृदयों को क्षत-विक्षत कर दिया।

मन के सूक्ष्म भावों-प्रेम, घृणा क्रोध आदि को सपष्ट करने के लिए हम ठोस वस्तुओं का सहारा लेते हैं। उन्हें ही प्रतीक कहते हैं। उनकी एक विशेषता यह भी है कि कवयित्री ने 'मानवीकरण' की शैली अपनाकर प्रकृति के उपादानों का भी मानव सदृश सचीव चित्रण किया है। इस कविता में मानवीय मनोभावों का प्रतीक प्राकृतिक आलंबन हैं। मसलन कोयल, कौए, सूखे फूल, काँटे, आँसू आदि। तात्पर्य यह है कि सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता का भाव पक्ष और कला पक्ष, दोनों हृदय स्पर्शी हैं। शब्दों को प्रयोग वो एहतियातन करती हैं ताकी गीत की लय के प्रवाह में कठिनाई का अनुभव न हो।

2.4 पाठसार-

प्रस्तुत कविता में कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने जलियाँवाला बाग हत्याकांड का दृश्य हम सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है। कवयित्री बाग में अंग्रेजों द्वारा किए गए नरसंहार से व्यथित है। उनकी वेदना को कविता के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है। किसी भी बाग की रौनक वहाँ के पशु-पक्षी होते हैं। विशेषकर वसंत आगमन उपरांत कोयल की मधुर कुहुकने की आवाज़ सुनाई देने लगती है। ऋतुराज बसंत अपने आगमन के साथ रंगों का एक सैलाब भी लाता है। पुष्प-वृक्ष एवं पौधे नए कोमल पत्तों, कलियों एवं फूलों से भरे होते हैं। चहुँओर प्रसन्नता एवं उमंग का प्रसार होता है। किंतु जलियाँवाला बाग में जो नरसंहार घटित हुआ उसने सुभद्राकुमारी चौहान के कोमल मन को दुखी किया अतएव वे कहती हैं की जलियांवाला बाग में कोयल नहीं कौए शोर मचाते हैं। काले-काले कीड़े-मकौड़े भौंरों के भिनभिनाने का भ्रम पैदा करते हैं। फूलों की अधखिली कलियाँ कंटकों के कुल से मिलते हैं। वहाँ के पौधे व फूल सूखे हुए हैं या झुलसे हुए हैं। वह सुगंधहीन फूल की भांति हैं जो ऐसा प्रतीत हो रहा है, किसी दाग़ के

समान हों क्योंकि यह प्यारा सा बाग खून से सना पड़ा है। कवयित्री ऋतुओं में श्रेष्ठ ऋतुराज वसंत से निवेदन कर रही है कि वे आयें तो मंथर गति से आयें क्योंकि यह मृत लोगों का स्थान है अतः यहाँ किसी प्रकार का शोर अनुचित है। वायु से वे आग्रह करती हैं कि जब तुम बाग से बह कर जाओ तो धीमे से बहना ताकि दुःख न बह जाए। इसी प्रकार कोयल जब गायें तो वह रुदन राग ही हो एवं भौंरें भिनभिनायें तो केवल ऐसा लगे कि कष्ट की कहानी बयान कर रहे हों। कवयित्री ऋतुराज से कहती हैं कि फूल बिना सजावट वाले हों और उनकी सुगंध मद्धम हो एवं वे ओस से भीगे हुए हों। यह भी ताकीद रहे कि वे किसी उपहार का भान न करायें बल्कि वे शहीद हुए निर्दोष लोगों का स्मरण हमें करायें, इसीलिए उन्हें इसी तरह से बिखेरा भी जाए। वे हृदय जिसमें जीवन के कई रंग थे सब टूट गए। वे प्रिय, परिवार अपने देश से अलग हो गए हैं। इसलिए यहाँ कुछ बिना खिली हुई कलियों को यादों की ओस के आंसुओं से चढ़ाना है। जो बूढ़े व्यक्ति यहाँ गोली खाकर मरे उन पर कुछ सूखे फूल चढ़ा देना है तथा यह सब करते हुए भी यह ध्यान अवश्य रहे कि बहुत धीरे से ही आना है क्योंकि यह दुःख और मातम की जगह है। यहाँ शोर नहीं मचाया जा सकता।

2.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा की ऐसी एक मात्र कवयित्री हैं जो स्वतंत्रता आंदोलन में भी सक्रिय थीं और लेखन में भी।
2. सुभद्रा कुमारी चौहान ने युग धर्म और रचना धर्म दोनों का सटीकतापूर्वक निर्वाह किया।
3. ओज गुण और वीर रस सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रमुख काव्य भूमि है।
4. 'जलियाँवाला बाग में वसंत' हिंदी की स्वातंत्र्य चेतना प्रधान कविताओं में प्रमुख स्थान रखते है।
5. यह कविता अपने उद्बोधन पूर्ण स्वर के करण पाठकों के मन में देशप्रेम और बलिदान की भावना जागृत करने में समर्थ है।
6. इस कविता में करुणा और उत्सर्ग के उदात्त भाव विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

2.6 शब्द संपदा

1. कंटक = काँटे
2. काग = कौआ
3. कीट = कीड़ा
4. कोकिला = कोयल
5. परिमल = पराग सुगंध ,

6. भ्रम = छलावा

7. भ्रमर = भौंरा

8. शुष्क = सूखे

9. स्मृति = याद

10.हृदय छिन्न होना = दिल को चोट पहुँचना

2.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'जलियाँवाला बाग भारतीय इतिहास में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना है।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. कवयित्री ऋतुराज बसंत से क्या आग्रह कर रही है और क्यों कर रही है? सविस्तार उत्तर दीजिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान की विशेष ओं पर एक सुदीर्घ टिप्पणी लिखिए।
4. जलियाँवाला बाग कविता का सार अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. वसंत ऋतु में किसी प्रकार के परिवर्तन हमें देखने को मिलते हैं? संक्षेप में लिखिए।
2. कवयित्री के बाल्यकाल पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान के भाषिक-वैशिष्ट्य पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. जलियाँवाला बाग में पेड़ों की स्थिति का वर्णन कीजिए।
5. बाग में वृद्धों के मारे जाने का वर्णन कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए-

1. कविता 'जलियाँवाला बाग में बसंत' की रचना किस प्रसिद्ध कवयित्री ने की है?

A. सरोजिनी नायडू B. मीराबाई

C. महादेवी वर्मा **D. सुभद्रा कुमारी चौहान**

2. ब्रिटिश सरकार ने किस कानून के तहत बिना मुकदमा चलाए भारतीयों को जेल में डालने का अधिकार प्राप्त किया था?

A. आर्म्स एक्ट B. साइमन कमीशन

C. वर्नाकुलर प्रेस एक्ट **D. रॉलेट एक्ट**

3. कविता में कवयित्री ने बसंत ऋतु से बाग में किस तरह प्रवेश करने का आग्रह किया है?

A. तीव्र वायु के झोंकों के साथ B. गाजेबाजे के साथ-

C. बहुत धीरे और शांति से D. हर्ष और उल्लास के साथ

4. कविता के अनुसार, बाग में कोयल की मधुर आवाज़ के स्थान पर अब कौन शोर मचा रहा है?

A. कबूतर B. मैना C. मोर **D. कौए**

5. कवयित्री ने शहीद हुए बच्चों की स्मृति में बसंत से क्या लाने का निवेदन किया है?

A. रंगीन उपहार B. काँटे C. पूरी तरह खिले हुए फूल **D. कोमल कलियाँ**

6. कविता में 'ओस' (Dew) की बूंदों को किस मानवीय भाव के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है?

A. हँसी **B. आँसू** C. पसीना D. क्रोध

7. वृद्धों (बुजुर्गों) के लिए कवयित्री ने किस प्रकार के पुष्प अर्पित करने को कहा है?

A. शुष्क पुष्प (सूखे) B. सुगंधहीन कलियाँ

C. ताज़ा और सुगंधित फूल D. कांच के फूल

8. कवयित्री वायु (हवा) से क्या विशेष अनुरोध करती हैं?

A. वह तेज़ गति से बहे B. वह बारिश को साथ ले आए

C. वह चारों ओर सुगंध फैला दे **D. वह शहीदों की आहों को अपने साथ उड़ाकर न ले जाए**

9. जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 को लोग किस त्योहार के दिन एकत्रित हुए थे?

A. लोहड़ी B. दीपावली **C. बैसाखी** D. होली

10. कविता में भौरों (भ्रमर) के गुंजार के बारे में क्या कहा गया है?

A. वे मधुर संगीत सुनाएँ **B. वे कष्ट की कथा सुनाएँ**

C. वे चुपचाप उड़ जाएँ D.वे फूलों का रस पिएँ

2.8 पठनीय पुस्तकें

1. सुभद्रा समग्र
2. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं. नगेंद्र
3. आधुनिक हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना : दामोदर
4. मिला तेज से तेज : सुधा चौहान
5. मुकुल : सुभद्राकुमारी चौहान
6. कोकिला : सुभद्राकुमारी चौहान

इकाई 3 : महादेवी वर्मा : एक परिचय

रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 मूल पाठ : महादेवी वर्मा : एक परिचय
3.3.1 व्यक्तित्व और कृतित्व
3.3.2 हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान
3.4 पाठ सार
3.5 पाठ की उपलब्धियाँ
3.6 शब्द संपदा
3.7 परीक्षार्थ प्रश्न
3.8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

छायावादी काव्यधारा की काव्य चेतना को अपनी कविताओं, रचनाओं में जीवटता से प्रस्तुत करने वाली कवयित्री महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा कहकर संबोधित किया जाता है। यद्यपि महादेवी ने कोई उपन्यास, कहानी या नाटक नहीं लिखा तो भी उनके लेख, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, भूमिकाओं और ललित निबंधों में जो गद्य लिखा है वह श्रेष्ठतम गद्य का उत्कृष्ट उदाहरण है। उसमें जीवन का संपूर्ण वैविध्य समाया है। बिना कल्पना और काव्यरूपों का सहारा लिए कोई रचनाकार गद्य में कितना कुछ अर्जित कर सकता है, यह महादेवी को पढ़कर ही जाना जा सकता है। उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता इतनी है कि वह आज भी प्रासंगिक है। समाज सुधार और नारी स्वतंत्रता से संबंधित उनके विचारों में दृढ़ता और विकास का अनुपम सामंजस्य मिलता है। सामाजिक जीवन की गहरी परतों को छूने वाली इतनी तीव्र दृष्टि, नारी जीवन के वैषम्य और शोषण को तीखेपन से आंकने वाली इतनी जागरूक प्रतिभा और निम्न वर्ग के निरीह, साधनहीन प्राणियों के अनूठे चित्र उन्होंने ही पहली बार हिंदी साहित्य को दिये।

महादेवी वर्मा एक सफल छायावादी कवयित्री होने के साथ-साथ चर्चित गद्यकार भी थी। उनकी कविताओं और गद्य, दोनों साहित्यिक विधाओं में एक लेखिका की पीड़ा अभिव्यक्त हुई हैं। उनकी कविताओं में यह पीड़ा काफी सघन रूप में उपस्थित है। वही जब गद्यकार के रूप में महादेवी वर्मा सामने आती है तो वहाँ जीवन के यथार्थ से वह मुठभेड़ करती नजर आती है और उस यथार्थ का वर्णन किया है।

छायावादी काव्यधारा के चार प्रमुख हस्ताक्षर में से एकमात्र कवयित्री महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व को इस इकाई में जानने-समझने की कोशिश की जाएगी। महादेवी वर्मा एक गंभीर विचारक, प्रमुख छायावादी कवयित्री, विदरोगी चेतना सम्पन्न गद्य लेखिका के रूप में अपने साहित्य के साथ उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

3.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- महादेवी वर्मा के जीवन की विविध परिस्थितियों से अवगत हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व की विविध पहलुओं से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी वर्मा के कृतित्व की विस्तृत और प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- छायावादी काव्य में महादेवी वर्मा के महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- महादेवी के काव्य की अंतर्वस्तु और सौंदर्य दृष्टि से अवगत हो सकेंगे।
- नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के परिप्रेक्ष्य में महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य का मूल्यांकन कर सकेंगे।

3.3 मूल पाठ : महादेवी वर्मा : एक परिचय

3.3.1 व्यक्तित्व और कृतित्व

महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व में संवेदना दृढ़ता और आक्रोश का अद्‌भुत संतुलन मिलता है। वे अध्यापक, कवि, गद्यकार, कलाकार, समाजसेवी और विदुषी के बहुरंगे मिलन का जीता जागता उदाहरण थीं। वे इन सबके साथ-साथ एक प्रभावशाली व्याख्याता भी थीं। उनकी भाव चेतना गंभीर, मार्मिक और संवेदनशील थी। महादेवी वर्मा की रचनाओं में पीड़ा और वेदना की अभिव्यक्ति के संदर्भ यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि महादेवी वर्मा के साहित्य में अभिव्यक्त पीड़ा उनकी स्व की पीड़ा है। महादेवी वर्मा के यहाँ पीड़ा का जो गहन रूप मौजूद है वह एक नारी के भोगे हुये यथार्थ का स्वर-चित्र है। भारतीय समाज में नारी को कभी मानवीयता के स्तर पर उचित ढंग से नहीं देखा गया। भारतीय समाज में नारी को या तो देवी के रूप में देखा गया है या फिर उसे कुलटा, कुलक्षिणी के रूप में बहिष्कार किया गया। नारी को हमेशा से पुरुषों के संरक्षण में जीना पड़ा। एक स्त्री बचपन में अपने पिता पर निर्भर होती है, उम्र के बढ़ते पड़ाव पर वह पति का सहारा लेती है और बुढ़ापे में पुत्र के सहारे अपना जीवन यापन करती है। समाजीकरण की प्रक्रिया में भी स्त्री-पुरुष को लेकर भेदभाव स्पष्ट तौर पर देखा जाता है। स्त्रियों के प्रति होने वाले हर तरह के भेदभाव के खिलाफ 19वीं और 20वीं शताब्दी में नारी के शोषण के खिलाफ कुछ सुधारवादी लोगों ने आवाज़ उठाई थी। इन सुधारवादियों ने नारी के दुर्दशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित भी किया था। उन लोगों ने सती प्रथा, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, नारी शिक्षा जैसे नारी सुधार के विभिन्न मुद्दों को सामने लाया था। ऐसी स्थिति में कोई स्त्री समाज में बनाए नियम कानून को तोड़ती है तो उसे समाज और परिवार की

अवमानना और विरोध का सामना करना पड़ता है। महादेवी वर्मा भी स्त्री के संबंध में चारदीवारी में कैद रखने की परंपरा का विरोध किया। उन्होने समाज के रूढ बंधनों को तोड़ा और स्त्री को लेकर बने जकड़नों से मुक्त होकर अपने कर्म क्षेत्र में उतर पड़ी।

महादेवी वर्मा अपने समय में गांधी जी के नेतृत्व में हो रहें स्वाधीनता आंदोलन में कूद पड़ी और स्त्रियों को शामिल होने के लिए आवाज़ भी लगाई। महादेवी वर्मा के आह्वान पर बड़ी संख्या में स्त्रियों ने स्वाधीनता आंदोलन में शामिल हुई। उन्होने अपने गद्य रचनाओं में न केवल नारी की समस्याओं को उठाया बल्कि समस्याओं के स्तर पर दुहरा जीवन जी रहीं दलित और शोषित वर्ग की स्त्रियों को भी सामने रखा और उनके जीवन-यापन से जुड़े प्रश्नों पर उनका सहयोग भी किया। उन्होने साहित्य में नारी और दलित दोनों वर्गों की वकालत की और उनके प्रति अपनी सहानुभूति भी प्रदर्शित की।

1932 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के बाद से उनकी प्रसिद्धि का एक नया युग प्रारंभ हुआ। भगवान बुद्ध के प्रति गहन भक्तिमय अनुराग होने के कारण और अपने बाल-विवाह के अवसाद को झेलने वाली महादेवी बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहती थीं। कुछ समय बाद महात्मा गांधी के सम्पर्क और प्रेरणा से उनका मन सामाजिक कार्यों की ओर उन्मुख हो गया। प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत साहित्य में एम०ए० करने के बाद प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या का पद संभाला और चाँद का निःशुल्क संपादन किया। प्रयाग में ही उनकी भेंट रवीन्द्रनाथ ठाकुर से हुई और यहीं पर 'मीरा जयंती' का शुभारम्भ किया। कलकत्ता में जापानी कवि योन नागूची के स्वागत समारोह में भाग लिया और शान्ति निकेतन में गुरुदेव के दर्शन किये। यायावरी की इच्छा से बद्रीनाथ की पैदल यात्रा की और रामगढ़, नैनीताल में 'मीरा मंदिर' नाम की कुटीर का निर्माण किया। एक अवसर ऐसा भी आया कि विश्ववाणी के बुद्ध अंक का संपादन किया और 'साहित्यकार संसद' की स्थापना की। भारतीय रचनाकारों को आपस में जोड़ने के लिये 'अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन' का आयोजन किया और राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद से 'वाणी मंदिर' का शिलान्यास कराया।

स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात इलाचंद्र जोशी और दिनकर जी के साथ दक्षिण की साहित्यिक यात्रा की। निराला की काव्य-कृतियों से कविताएँ लेकर 'साहित्यकार संसद' द्वारा अपरा शीर्षक से काव्य-संग्रह प्रकाशित किया। 'साहित्यकार संसद' के मुख-पत्र साहित्यकार का प्रकाशन और संपादन इलाचंद्र जोशी के साथ किया। प्रयाग में नाट्य संस्थान 'रंगवाणी' की स्थापना की और उद्घाटन मराठी के प्रसिद्ध नाटककार मामा वरेरकर ने किया। 1954 में वे दिल्ली में स्थापित साहित्य अकादमी की सदस्या चुनी गईं तथा 1981 में सम्मानित सदस्या। इस प्रकार महादेवी का संपूर्ण कार्यकाल राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की सेवा में समर्पित रहा।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, संपादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में

रश्मि, 1934 में नीरजा तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की। वे हिंदी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध धर्म से बहुत प्रभावित थीं। महात्मा गांधी के प्रभाव से उन्होंने जनसेवा का व्रत लेकर झूसी में कार्य किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बँगला बनवाया था। जिसका नाम उन्होंने मीरा मंदिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। शृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निंदा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है। उनके संपूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा ने चाँद पत्रिका का कार्यभार कब संभाला था?
- महादेवी वर्मा ने मीरा मंदिर नामक कुटीर का निर्माण कहाँ करवाया था?

जीवन परिचय

महादेवी वर्मा (26 मार्च, 1907-11 सितंबर, 1987) हिंदी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से हैं। वे हिंदी साहित्य में छायावादी युग के प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और सुमित्रानंदन पंत के साथ महत्वपूर्ण स्तंभ मानी जाती हैं। कवि निराला ने उन्हें 'हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती' भी कहा है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरूआत की और अंतिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ परंतु उन्होंने अविवाहित की भांति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिंदी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर बनी रहीं। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं।

प्रारंभिक जीवन और परिवार

वर्मा का जन्म फ़र्रूख़ाबाद, उत्तर प्रदेश के एक संपन्न परिवार में हुआ। महादेवी जी के माता-पिता का नाम हेमरानी देवी और बाबू गोविन्द प्रसाद वर्मा था। महादेवी वर्मा की छोटी बहन और दो छोटे भाई थे। क्रमश: श्यामा देवी (श्यामा देवी सक्सेना धर्मपत्नी - डॉ. बाबूराम सक्सेना, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति इलाहाबाद विश्व विद्यालय) श्री जगमोहन वर्मा एवं श्री मनमोहन वर्मा।

महादेवी वर्मा के हृदय में शैशवावस्था से ही जीव मात्र के प्रति करुणा थी, दया थी। उन्हें ठण्डक में कूँ कूँ करते हुए पिल्लों का भी ध्यान रहता था। पशु-पक्षियों का पालन-पोषण और उनके साथ खेलकूद में ही दिन बिताती थीं। चित्र बनाने का शौक भी उन्हें बचपन से ही था। इस शौक की पूर्ति वे पृथ्वी पर कोयले आदि से चित्र उकेर कर करती थीं। उनके व्यक्तित्व में जो पीडा, करुणा और वेदना है, विद्रोहीपन है, अहं है, दार्शनिकता एवं आध्यात्मिकता है तथा अपने काव्य में उन्होंने जिन तरल सूक्ष्म तथा कोमल अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की है, इन सब के बीज उनकी इसी अवस्था में पड़ चुके थे और उनका अंकुरण तथा पल्लवन भी होने लगा था।

शिक्षा

महादेवी की शिक्षा 1912 में इंदौर के मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। 1916 में विवाह के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में बाई का बाग स्थित क्रास्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। महादेवी जी की प्रतिभा का निखार यहीं से प्रारम्भ होता है।

1915 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया और कविता यात्रा के विकास की शुरुआत भी इसी समय और यहीं से हुई। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब अपनी मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की थी, वह एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। पाठशाला में हिंदी अध्यापक से प्रभावित होकर ब्रजभाषा में समस्यापूर्ति भी करने लगीं। फिर तत्कालीन खड़ीबोली की कविता से प्रभावित होकर खड़ीबोली में रोला और हरिगीतिका छंदों में काव्य लिखना प्रारंभ किया। उसी समय माँ से सुनी एक करुण कथा को लेकर सौ छंदों में एक खंडकाव्य भी लिख डाला। कुछ दिनों बाद उनकी रचनाएँ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगीं। विद्यार्थी जीवन में वे प्रायः राष्ट्रीय और सामाजिक जागृति संबंधी कविताएँ लिखती रहीं। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पूर्व ही उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखना शुरू कर दिया था, जिसमें व्यष्टि में समष्टि और स्थूल में सूक्ष्म चेतना के आभास की अनुभूति अभिव्यक्त हुई है। उनके प्रथम काव्य-संग्रह 'नीहार' की अधिकांश कविताएँ उसी समय की हैं।

महादेवी वर्मा का नौ वर्ष पूरा होते-होते सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह बरेली के पास नबाव गंज कस्बे के निवासी श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। महादेवी जी का विवाह उस उम्र में हुआ जब वे विवाह का मतलब भी नहीं समझती थीं। महादेवी वर्मा पति-पत्नी सम्बंध को स्वीकार न कर सकीं। कारण आज भी रहस्य बना हुआ है। आलोचकों और विद्वानों ने अपने-अपने ढँग से अनेक प्रकार की अटकलें लगायी हैं। पिता जी की मृत्यु के बाद श्री स्वरूप नारायण वर्मा कुछ समय तक अपने ससुर के पास ही रहे, पर पुत्री की मनोवृत्ति को देखकर उनके बाबू जी ने श्री वर्मा को इण्टर करवा कर लखनऊ मेडिकल कॉलेज में प्रवेश दिलाकर वहीं बोर्डिंग हाउस में रहने की व्यवस्था कर दी। जब महादेवी इलाहाबाद में पढ़ने लगीं तो श्री वर्मा उनसे मिलने वहाँ भी आते थे। किन्तु महादेवी वर्मा उदासीन ही बनी रहीं। विवाहित जीवन के प्रति उनमें विरक्ति उत्पन्न हो गई थी। इस सबके बावजूद श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बंध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। एक विचारणीय तथ्य यह भी है कि श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था ही।

बोध प्रश्न

- महादेवी का जन्म किस वर्ष हुआ था और कहाँ हुआ था?
- महादेवी वर्मा के जीवन से जुड़े हुये महत्वपूर्ण प्रसंग पर दस पंक्तियों में लिखें।

रचना यात्रा

महादेवी जी कवयित्री होने के साथ-साथ विशिष्ट गद्यकार भी थीं। उनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं।

कविता संग्रह

1. नीहार (1930), 2. रश्मि (1932), 3. नीरजा (1934), 4. सांध्यगीत (1936), 5. दीपशिखा (1942), 6. सप्तपर्णा (अनूदित-1959), 7. प्रथम आयाम (1974), 8. अग्निरेखा (1990)

महादेवी वर्मा के अन्य अनेक काव्य संकलन भी प्रकाशित हैं, जिनमें उपर्युक्त रचनाओं में से चुने हुए गीत संकलित किये गये हैं, जैसे आत्मिका, परिक्रमा, सन्धिनी (1965), यामा (1936), गीतपर्व, दीपगीत, स्मारिका, नीलांबरा और आधुनिक कवि महादेवी आदि।

महादेवी वर्मा का गद्य साहित्य

रेखाचित्र : अतीत के चलचित्र (1941) और स्मृति की रेखाएं (1943)

संस्मरण : पथ के साथी (1956) और मेरा परिवार (1972) और संस्मरण (1983)

चुने हुए भाषणों का संकलन : संभाषण (1974)

निबंध : शृंखला की कड़ियाँ (1942), विवेचनात्मक गद्य (1942), साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध (1962), संकल्पिता (1969)

ललित निबंध : क्षणदा (1956)

कहानियाँ : गिल्लू

संस्मरण, रेखाचित्र और निबंधों का संग्रह : हिमालय (1963), अन्य निबंध में संकल्पिता तथा विविध संकलनों में स्मारिका, स्मृति चित्र, संभाषण, संचयन, दृष्टिबोध उल्लेखनीय हैं। वे अपने समय की लोकप्रिय पत्रिका 'चाँद' तथा 'साहित्यकार' मासिक की भी संपादक रहीं। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उन्होंने प्रयाग में 'साहित्यकार संसद' और रंगवाणी नाट्य संस्था की भी स्थापना की।

महादेवी वर्मा का बाल साहित्य

महादेवी वर्मा की बाल कविताओं के दो संकलन छपे हैं - ठाकुरजी भोले हैं, आज खरीदेंगे हम ज्वाला

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा ने हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किस संस्था की स्थापना की थी?
- महादेवी वर्मा की साहित्य की किन-किन विधाओं में रचना करती थी बताए?

पुरस्कार व सम्मान

उन्हें प्रशासनिक, अर्धप्रशासनिक और व्यक्तिगत सभी संस्थाओँ से पुरस्कार व सम्मान मिले। 1943 में उन्हें 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक' एवं 'भारत भारती' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 1952 में वे उत्तर प्रदेश विधान परिषद की सदस्या मनोनीत की गयीं। 1956 में भारत सरकार ने उनकी साहित्यिक सेवा के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि दी। 1979 में साहित्य अकादमी की सदस्यता ग्रहण करने वाली वे पहली महिला थीं। 1988 में उन्हें मरणोपरांत भारत सरकार की पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया।

सन 1969 में विक्रम विश्वविद्यालय, 1977 में कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल, 1980 में दिल्ली विश्वविद्यालय तथा 1984 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी ने उन्हें डी.लिट की उपाधि से सम्मानित किया। महादेवी वर्मा को 'नीरजा' के लिये 1934 में 'सक्सेरिया पुरस्कार', 1942 में 'स्मृति की रेखाएँ' के लिये 'द्विवेदी पदक' प्राप्त हुए। 'यामा' नामक काव्य संकलन के लिये उन्हें भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ। वे भारत की 50 सबसे यशस्वी महिलाओं में भी शामिल हैं। 1968 में सुप्रसिद्ध भारतीय फ़िल्मकार मृणाल सेन ने उनके संस्मरण 'वह चीनी भाई' पर एक बांग्ला फ़िल्म का निर्माण किया था जिसका नाम था नील आकाशेर नीचे। 16 सितंबर, 1991 को भारत सरकार के डाकतार विभाग ने जयशंकर प्रसाद के साथ उनके सम्मान में 2 रुपए का एक युगल टिकट भी जारी किया है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा के किस संस्मरण पर फिल्म का निर्माण हुआ था?
- महादेवी वर्मा उत्तर प्रदेश विधानसभा की सदस्य किस वर्ष बनी थी?

3.3.2 हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा का स्थान

आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरि है। उनकी कविता में प्रेम की पीर और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी के गीतों की वेदना, प्रणयानुभूति, करुणा और रहस्यवाद काव्यानुरागियों को आकर्षित करते हैं। पर इन रचनाओं की विरोधी आलोचनाएँ सामान्य पाठक को दिग्भ्रमित करती हैं। आलोचकों का एक वर्ग वह है, जो यह मानकर चलते हैं कि महादेवी का काव्य नितान्त वैयक्तिक है। उनकी पीड़ा, वेदना, करुणा, कृत्रिम और बनावटी है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे मूर्धन्य आलोचकों ने उनकी वेदना और अनुभूतियों की सच्चाई पर प्रश्न चिह्न लगाया है- दूसरी ओर आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी जैसे समीक्षक उनके काव्य को समष्टि परक मानते हैं। 'दीप' (नीहार), मधुर मधुर मेरे दीपक जल (नीरजा) और मोम सा तन गल चुका है कविताओं को उद्धृत करते हुए निष्कर्ष निकाला है कि ये कविताएं महादेवी के 'आत्मभक्षी दीप' अभिप्राय को ही व्याख्यायित नहीं करतीं बल्कि उनकी कविता की सामान्य मुद्रा और बुनावट का प्रतिनिधि रूप भी मानी जा सकती हैं।

महादेवी अपनी विद्वत तार्किकता और उदाहरणों के द्वारा छायावाद और रहस्यवाद के वस्तु शिल्प की पूर्ववर्ती काव्य से भिन्नता तथा विशिष्टता ही नहीं बतायी, यह भी बताया कि वह किन अर्थों में मानवीय संवेदन के बदलाव और अभिव्यक्ति के नयेपन का काव्य है। उन्होंने किसी पर भाव साम्य, भावोपहरण आदि का आरोप नहीं लगाया केवल छायावाद के स्वभाव, चरित्र, स्वरूप और विशिष्टता का वर्णन किया। हालांकि जो लोग उन्हें पीड़ा और निराशा की कवयित्री मानते हैं वे यह नहीं जानते कि उस पीड़ा में कितनी आग है जो जीवन के सत्य को उजागर करती है।

यह सच है कि महादेवी का काव्य संसार छायावाद की परिधि में आता है, पर उनके काव्य को उनके युग से एकदम असम्पृक्त करके देखना, उनके साथ अन्याय करना होगा। महादेवी एक सजग रचनाकार हैं। बंगाल के अकाल के समय 1943 में इन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित किया था और बंगाल से सम्बंधित 'बंग भू शत वंदना' नामक कविता भी लिखी थी। इसी प्रकार चीन के आक्रमण के प्रतिवाद में हिमालय नामक काव्य संग्रह का संपादन किया था। यह संकलन उनके युगबोध का प्रमाण है।

साहित्य में महादेवी वर्मा का आविर्भाव उस समय हुआ जब खड़ीबोली का आकार परिष्कृत हो रहा था। उन्होंने हिंदी कविता को बृजभाषा की कोमलता दी, छंदों के नये दौर को गीतों का भंडार दिया और भारतीय दर्शन को वेदना की हार्दिक स्वीकृति दी। इस प्रकार उन्होंने भाषा साहित्य और दर्शन तीनों क्षेत्रों में ऐसा महत्त्वपूर्ण काम किया जिसने आनेवाली एक पूरी

पीढ़ी को प्रभावित किया। शचीरानी गुर्टू ने भी उनकी कविता को सुसज्जित भाषा का अनुपम उदाहरण माना है। उन्होंने अपने गीतों की रचना शैली और भाषा में अनोखी लय और सरलता भरी है, साथ ही प्रतीकों और बिंबों का ऐसा सुंदर और स्वाभाविक प्रयोग किया है जो पाठक के मन में चित्र सा खींच देता है। छायावादी काव्य की समृद्धि में उनका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। छायावादी काव्य को जहाँ प्रसाद ने प्रकृतितत्त्व दिया, निराला ने उसमें मुक्तछंद की अवतारणा की और पंत ने उसे सुकोमल कला प्रदान की वहाँ छायावाद के कलेवर में प्राण-प्रतिष्ठा करने का गौरव महादेवी जी को ही प्राप्त है। भावात्मकता एवं अनुभूति की गहनता उनके काव्य की सर्वाधिक प्रमुख विशेषता है। हृदय की सूक्ष्मातिसूक्ष्म भाव-हिलोरों का ऐसा सजीव और मूर्त अभिव्यंजन ही छायावादी कवियों में उन्हें 'महादेवी' बनाता है। वे हिंदी बोलने वालों में अपने भाषणों के लिए सम्मान के साथ याद की जाती हैं। उनके भाषण जन सामान्य के प्रति संवेदना और सच्चाई के प्रति दृढ़ता से परिपूर्ण होते थे। वे दिल्ली में 1983 में आयोजित तीसरे विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण में उनके इस गुण को देखा जा सकता है।

मौलिक रचनाकार के अलावा उनका एक रूप सृजनात्मक अनुवादक का भी है जिसके दर्शन उनकी अनुवाद-कृत 'सप्तपर्णा' (1960) में होते हैं। अपनी सांस्कृतिक चेतना के सहारे उन्होंने वेद, रामायण, थेरगाथा तथा अश्वघोष, कालिदास, भवभूति एवं जयदेव की कृतियों से तादात्म्य स्थापित करके 39 चयनित महत्वपूर्ण अंशों का हिंदी काव्यानुवाद इस कृति में प्रस्तुत किया है। आरंभ में 61 पृष्ठीय 'अपनी बात' में उन्होंने भारतीय मनीषा और साहित्य की इस अमूल्य धरोहर के सम्बंध में गहन शोधपूर्ण विमर्ष किया है जो केवल स्त्री-लेखन को ही नहीं हिंदी के समग्र चिंतनपरक और ललित लेखन को समृद्ध करता है। गद्य साहित्य के क्षेत्र में भी उन्होंने कम काम नहीं किया। उनका आलोचना साहित्य उनके काव्य की भांति ही महत्वपूर्ण है। उनके संस्मरण भारतीय जीवन के संस्मरण चित्र हैं। उन्होंने चित्रकला का काम अधिक नहीं किया फिर भी जलरंगों में 'वॉश' शैली से बनाए गए उनके चित्र धुंधले रंगों और लयपूर्ण रेखाओं का कारण कला के सुंदर नमूने समझे जाते हैं। उन्होंने रेखाचित्र भी बनाए हैं। दाहिनी ओर करीन शोमर की क़िताब के मुखपृष्ठ पर महादेवी द्वारा बनाया गया रेखाचित्र ही रखा गया है। उनके अपने कविता संग्रहों यामा और दीपशिखा में उनके रंगीन चित्रों और रेखांकनों को देखा जा सकता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा को किन दो उपाधिओं से विभूषित किया जाता है?

3.4 पाठ सार

इस प्रकार हम देखते है कि महादेवी वर्मा अपने सम्पूर्ण रचनात्मक व्यक्तित्व के साथ छायावाद ही नहीं बल्कि आधुनिक हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्तम्भ के रूप में हम सबके सामने उपस्थित होती हैं। हालांकि छायावाद कि एक कड़ी बनकर महादेवी पंत और निराला कि

तरह काव्य चेतना संबंधी कोई बदलाव नहीं करती बल्कि छायावादी काव्य रूपी दीये के प्रकाश में ही अपनी संपूर्ण रचनात्मकता का उपयोग करती हैं। छायावादी शैली की सभी प्रमुख विशेषताओं की सफलतम अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में दिखलाई पड़ती है। यह सफलता इतनी अप्रतिम है कि इसको लेकर कहा जाता है 'छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन'। व्यक्तित्व के साथ कृतित्व की जीवंतता का अद्‌भुत मिश्रण माहदेवी वर्मा के यहाँ दिखाई पड़ता है। अतः कह सकते हैं कि व्यक्तित्व और कृतित्व के आधार पर महादेवी वर्मा ने प्रेम कि उदात्ता, वेदना कि गहराई एवं व्यापकता, रहस्य की भावना की अभिव्यक्ति का जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह हिंदी साहित्य की दुनिया में अन्यत्र दुर्लभ है। महादेवी की सौंदर्य भावना और दृष्टि सहज रूप से छायावादी साहित्यिक चेतना को समृद्ध करती है। अनूठी काव्य शैली, कल्पना का ऐश्वर्य, गद्य में सामाजिक यथार्थ की उपस्थिति, अनुभूति की गहराई महादेवी के कृतित्व के साथ व्यक्तित्व की भी विशेषता है जिसे सदैव याद रखा जाएगा।

3.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. महादेवी वर्मा का संपूर्ण व्यक्तित्व उदात्त गुण से संपन्न मातृ छवि से निर्मित था।
2. महादेवी ने निजी जीवन में समाज के बने बनाए बंधनों को तोड़ा और नारी स्वातंत्र्य की वकालत की।
3. महादेवी का काव्य निजी वेदना के लोक-वेदना से एकाकार होने का प्रभावशाली उदाहरण है।
4. महादेवी वर्मा छायावाद चतुष्टय में विरहानुभूति और रहस्य भावना को व्यंजित करने वाली चतुर्थ रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

3.6 शब्द संपदा

1. आक्रोश	=	रोषपूर्ण भावना
2. आत्मभक्षी	=	स्वयंहारी
3. आत्मीय	=	स्नेह संबंध
4. आविर्भाव	=	प्रकट होना
5. कुलक्षिणी	=	कुल को लांछन लगाने वाली
6. जीवटता	=	पराक्रमी
7. यशस्वी	=	सुख्यात
8. वैषम्य	=	विषम होने का भाव

9. सघन = घना

10. हृदयग्राही = रुचिकर

3.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. छायावाद ने महादेवी को जन्म दिया और महादेवी ने छायावाद को जीवन इस कथन की पुष्टि करें।
2. महादेवी वर्मा के सामाजिक जीवन संबंधी चर्चा करें।
3. महादेवी वर्मा के साहित्य के मूल में उनकी काव्य सांस्कृतिक चेतना ही विद्यमान है, इस कथन का स्पष्टीकरण करें।

खंड (ब)

(आ लघु श्रेणी के प्रश्न (

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी कौन सी पत्रिका का सम्पादन करती थी?
2. महादेवी को कुल कितनी भाषाओं की जानकारी थी?
3. महादेवी काव्य के अतिरिक्त और किन विधाओं में निपुण थी?

खंड) स(

। .सही विकल्प चुनिए-

1. महादेवी वर्मा को उनके किस काव्य-संग्रह के लिए भारत का सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्रदान किया गया था?

A. दीपशिखा B. सांध्यगीत **C. यामा** D. नीरजा

2. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने महादेवी वर्मा को किस विशेष नाम से संबोधित किया था?

A. साहित्यिक संन्यासिनी B. छायावाद की शक्ति

C. हिंदी के विशाल मन्दिर की सरस्वती D. आधुनिक युग की मीरा

3. महादेवी वर्मा ने महिलाओं की समस्याओं और उनके वैषम्य को उजागर करने के लिए किस प्रसिद्ध निबंध संग्रह की रचना की?

A. पथ के साथी B. अतीत के चलचित्र

C. स्मृति की रेखाएं **D. शृंखला की कड़ियाँ**

4. प्रयाग में भारतीय रचनाकारों को एकजुट करने के उद्देश्य से महादेवी वर्मा ने किस संस्था की स्थापना की थी?

A. प्रयाग महिला विद्यापीठ B. साहित्य अकादमी

C. साहित्यकार संसद D. वाणी मंदिर

5. महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य की वह कौन सी विशेषता है जो उन्हें उनकी कविताओं की तुलना में अधिक यथार्थवादी बनाती है?

A. सामाजिक जीवन के यथार्थ से मुठभेड़ B. केवल सौंदर्य और प्रकृति का वर्णन

C. पीड़ा और वेदना का सघन रूप D. रहस्यवाद और आध्यात्मिकता

6. महादेवी वर्मा किस धार्मिक दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थीं, जिसका प्रभाव उनके जीवन और चिंतन पर स्पष्ट दिखाई देता है?

A. सिक्ख धर्म B. जैन धर्म C. इस्लाम धर्म **D. बौद्ध धर्म**

7. महादेवी वर्मा ने अपने जीवन का अधिकांश समय किस प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान के विकास और संचालन में व्यतीत किया?

A. प्रयाग महिला विद्यापीठ B. शांति निकेतन

C. इलाहाबाद विश्वविद्यालय D. क्रास्थवेट कॉलेज

8. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में किन पात्रों को पहली बार हिंदी साहित्य में प्रमुखता से स्थान मिला?

A. राजसी और दरबारी पात्रों को B. ऐतिहासिक और पौराणिक नायकों को

C. विदेशी दार्शनिकों और कवियों को **D. निम्न वर्ग के निरीह और साधनहीन प्राणियों को**

9. महादेवी वर्मा की गद्य शैली के बारे में कौन सा कथन सत्य है?

A. उनका गद्य केवल कल्पना पर आधारित है

B. उनका गद्य अत्यंत जटिल और अरुचिकर है

C. उनके गद्य में वैचारिक परिपक्वता और प्रासंगिकता है

D. उन्होंने केवल नाटकों और उपन्यासों की रचना की

10. महादेवी वर्मा के संस्मरणों पर आधारित फिल्म 'नील आकाशेर नीचे' का निर्माण किस सुप्रसिद्ध फिल्मकार ने किया था?

A. सत्यजीत रे **B. मृणाल सेन** C. बिमल रॉय D. ऋत्विक घटक

3.8 पठनीय पुस्तकें

1. महादेवी वर्मा : इंद्रनाथ मदान
2. महादेवी नया मूल्यांकन : गणपति चन्द्रगुप्त
3. महादेवी : सं. परमानंद श्रीवास्तव
4. महीयसी महादेवी : गंगाप्रसाद पांडे
5. साहित्यकार महादेवी : हर्षनंदिनी भाटिया

इकाई 4 : गीति काव्य

रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 मूल पाठ : गीति काव्य
4.3.1 अध्येय कविता का समान्य परिचय
4.3.2 अध्येय कविता
4.3.3 विस्तृत व्याख्या
4.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
4.4 पाठ सार
4.5 पाठ की उपलब्धियां
4.6 शब्द संपदा
4.7 परीक्षार्थ प्रश्न
4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

महादेवी वर्मा छायावादी कवयित्री के रूप में हिंदी साहित्य में लोकप्रिय हैं। महादेवी का जन्म उत्तर प्रदेश के फ़र्रुखाबाद में सन 1907 में हुआ था। महादेवी वर्मा का प्रारंभिक जीवन इंदौर और इलाहाबाद में व्यतीत हुआ। महादेवी वर्मा साहित्य में एक कवयित्री के रुप में प्रतिष्ठित है परंतु वह अपने गद्य लेखन के लिए हिंदी साहित्य में अप्रतिम रचनकार के तौर पर याद की जाती हैं। उनकी गद्य रचनाएँ भाषा और विचार की दृष्टि से अत्यंत परिपक्व मानी जाती हैं। महादेवी अपने जीवन में शिक्षा को काफी महत्व प्रदान करती है। वह प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. करने के बाद वहाँ महिला विद्यापीठ में प्रधानाचार्य हो गई थी। उन्होंने बीच के कुछ वर्षों तक चाँद पत्रिका के विदुषी अंक का संपादन भी 1935 में किया। यह अंक हिंदी में हुए स्त्री-विमर्श की परंपरा में विशेष महत्व रखता है।

छायावादी काव्य विशेषता के साथ महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में स्थान अक्षुण्ण है। उनके काव्य संग्रहों की कविताओं में छायावादी-रहस्यवादी प्रवृतियाँ विद्यमान है जिसमें स्त्री की पीड़ा और उसके मुक्ति के स्वर मौजूद है। महादेवी वर्मा की कविताओं में स्त्री की पीड़ा का अनुभव उनके स्व का ही हैं। इनकी कविताओं में प्रेम का जिक्र भी मुक्ति के प्रतीक के रूप में

मौजूद है। महादेवी की कविताओं में वैचारिक दृढ़ता छायावादी काया विशेषता के साथ मौजूद है।

4.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- महादेवी वर्मा के काव्य के मूल भाव से परिचित हो सकेंगे।
- अध्येय गीतों के माध्यम से महादेवी की काव्यगत विशेषताओं को समझ सकेंगे। की विस्तृत व्याख्या को समझ सकेंगे।
- छायावाद की कसौटी पर महादेवी के काव्य को परख सकेंगे।
- महादेवी के गीतों में निहित प्रतीक और बिंब विधान के सौंदर्य से अवगत हो सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : गीति काव्य

4.3.1 आध्येय कविता का समान्य परिचय

इस इकाई में महादेवी वर्मा के काव्य साहित्य से दो कविताओं को लिया गया हैं। जिसमें पहली कविता 'पंथ होने दो अपरिचित' है वही दूसरी कविता 'जो तू आ जाते' हैं। पहली कविता महादेवी वर्मा के काव्य संग्रह 'दीपशिखा' से ली गई है और दूसरी कविता उनके प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' से हैं। महादेवी वर्मा के इन दोनों कविताओं के माध्यम से जहाँ छायावादी काव्य चेतना की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति होती है वही दोनों कविताओं में उनके अनुभव गहन रूप से मौजूद है जिसमें भारतीय स्त्री के संघर्ष, मुक्ति, प्रेम, विरह के क्षण अभिव्यक्त हैं।

4.3.2 अध्येय कविता

[1]

पंथ होने दो अपरिचित

घेर ले छाया अमा बन
आज कंजल-अश्रुओं में रिमझिमा ले यह घिरा घन
और होंगे नयन सूखे
तिल बुझे औ' पलक रूखे
आर्द्र चितवन में यहाँ
शत विद्युतों में दीप खेला
अन्य होंगे चरण हारे
और हैं जो लौटते, दे शूल को संकल्प सारे
दुखव्रती निर्माण उन्मद
यह अमरता नापते पद
बांध देंगे अंक-संसृति

से तिमिर में स्वर्ण बेला
दूसरी होगी कहानी
शून्य में जिसके मिटे स्वर, धूलि में खोई निशानी
आज जिस पर प्रलय विस्मित
मैं लगाती चल रही नित
मोतियों की हाट औ'
चिनगारियों का एक मेला
हास का मधु-दूत भेजो
रोष की भ्रू-भंगिमा पतझार को चाहे सहे जो
ले मिलेगा उर अचंचल
वेदना-जल, स्वप्न-शतदल
जान लो वह मिलन एकाकी
विरह में है दुकेला!

[2]

जो तुम आ जाते

कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार
हँस उठते पल में आर्द्र नयन
धुल जाता होठों से विषाद
छा जाता जीवन में बसंत
लुट जाता चिर संचित विराग
आँखें देतीं सर्वस्व वार
जो तुम आ जाते एक बार

4.3.3 विस्तृत व्याख्या

घेर ले छाया अमा बन ..... विरह में है दुकेला!

शब्दार्थ : अपरिचित = अज्ञात, अंजान। अमा = अंधेरी रात। कज्जल अश्रुओं = एकदम साफ आंसुओं की तरह बारिश का पानी। तिल बुझे = जिन आँखों के काले। चितवन = दृष्टि। शूल = कांटे। अंक संसृति = सृष्टि की गोद में। स्वर्ण बेला = सुनहली सुबह। विस्मित = आश्चर्य से भरा

हुआ। भरू भंगिमा = भौंहों के संचालन। उर अचंचल = स्थिर भाव से युक्त हृदय। स्वप्न शतदल= कमल के फूल की तरह खिले हुए सपने। दुकेला = विरह में दोनों पक्षों के अस्तित्वान होने का भाव।

संदर्भ : 'पंथ होने दो अपरिचित' शीर्षक यह प्रस्तुत कविता गीत दीपशिखा (1942) से संग्रहीत है।

प्रसंग : 'दीपशिखा' की कविताओं में महादेवी वर्मा की वैचारिक मजबूती दिखलाई पड़ती है। महादेवी वर्मा के साहित्यिक कर्म में हम आसानी से देख सकते हैं कि वहाँ एक नई रचनात्मक ज़मीन तलाशने का अरमान है। भले ही इसके लिए कितनी ही कठिनायी क्यों न झेलनी पड़ें और कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। ऐसी कठिनाइयों का विश्लेषण और फिर उनपर विजय प्राप्त करने के लिए उनका सामना करना, निर्माण और सृजन की राह बनाना है।

व्याख्या : इस कविता में महादेवी कहती है कि मै जिस रास्ते पर चलना चाहती हूँ वह मेरे लिए नया हो सकता है लेकिन अपरिचित या परिचय का मोहताज नहीं हो सकता। हालांकि मुझे उस रास्ते की कठिनाइयों और कष्टों का अनुमान भी हो सकता है। यह भी संभव है कि इस यात्रा में मेरा सहायता करने वाला कोई न हों। संभव है कि मेरा सहारा केवल मेरा आत्मबल हो तब भी कोई बात नहीं। महादेवी पूर्ण विश्वास के साथ कहती है कि पंथ, रास्ते को अपरिचित होने दो और मेरे प्राणों को अकेला रहने दो। मैं पीछे नहीं हटूँगी। यह रास्ता प्रिय तक पहुँचाने वाला जय। इस कविता में जिन दो अर्थों कि संभावना व्यक्त की जाती है उनमें से एक स्त्री के संघर्ष से जुड़ा हुआ है और दूसरा पीरी के पथ पर चलने में हीनेवाली दुश्वारियों के बारे में।

महादेवी कहती है कि यदि मेरी छाया अमावस्या की काली रात बनकर छा जाये, घिरे बादलों से ऐसे बारिश हो मानों निर्मल आँसू बरस रहे हों। फिर भी मै हार नहीं मानूँगी। वे दूसरों की अंखे होंगी जो कठिन समय आने पर दुख के साथ सुख जाती अहि। उन आँखों का सौंदर्य बुझ जाता है, पलकें रूखी हो जाती है। मेरी हिम्मत तो यह है कि उन गीली आँखों में भी मैंने निगाहों की चमक बनाए राखी है, जैसे बरसते हुये आसमान में सैकड़ों बिजलियाँ ऐसे चमकती है मानों निरंतर दीप जल रहे हों और रौशनी झलमला रही है।

इस कविता में आगे वह कहती है कि वह किसी और तरह के लोग होंगे जिनके कदम परेशानियों के कारण रुक जाते है, हार मान जाते है। वे दूसरे ढंग क लोग होंगे जो रास्तों के काँटों को अपने संकल्प सौंप कर हारे हुये मन के साथ लौट जाते होंगे। मेरे पाँव अमरत्व की यात्रा कर रहे हैं। वे मृत्यु के भाय से मुक्त है। उन्होने दुख को व्रत की तरह स्वीकार किया है और वे निर्माण के प्रति उन्माद के स्तर तक संकल्प ग्रहण कर चुके है। अर्थात महादेवी कहती है कि मै हार नहीं मानूँगी और न ही उस हार को स्वीकार करूंगी। मेरे यही कदम इस संसार के गोद में है फैले अंधेरे के बीच एक सुनहले सबेरे का निर्माण करेंगे।

हार मान जाने वालो की कहानी दूसरे तरह की होगी जहाँ संघर्ष करनेवालों की आवाज़ शून्य में सिमटकर रह जाएगी और उनकी हरेक निशानी समय के साथ धूल में खो जाएगी। परंतु

मेरे साथ यह सब नहीं होगा। मै मोतियों की हात और चिंगारियों का मेला लगा रही हूँ अर्थात मै अपने आसुओं को क्रांति के रूप में ढाल देना चाहती हूँ। इसलिए आज इस हाट और मेला पर प्रलय भी आश्चर्य में हैं। जो प्रलय मुझे खत्म करने आया था, मिटाने आया था वह अब मेरी हिम्मत को देखकर आश्चर्य में हैं।

कविता के अंत में महादेवी वर्मा मानों किसी अज्ञात और अनंत प्रियतम को संबोधित करते हुये कहती है कि तुम चाहे प्रसन्न रहनेवाले वसंत को अपने दूत बनाकर मेरे पास भेजो या भौंह चढ़ाकर रोष प्रकट करनेवाले पतझड़ को। मेरा हृदय सब कुछ सह लेगा। मेरा हृदय अचंचल रहकर अपने दुख के आँसुओं और कमाल की तरह सुंदर सपनों को लेकर तुमसे मिलेगा। एक बात तो स्पष्ट है कि वह मिलन मुझे अकेला कर देगा, क्योंकि संघर्ष की जिन प्रेरणाओं ने मेरे व्यक्तित्व का निर्माण किया है उन सबकी पूर्णाहुति इस मिलन में हो जाएगा। यह मिलन मेरे तुम्हारे द्वैत को खत्म कर देगा। द्वैत की समाप्ति मानो हमारे अस्तित्व व्यक्तित्व को घुला मिला लेने के समान है। इस तरह यह मिलन मुझे एकाकी हो जाने के एहसास से परिचित करा देगा जबकोई विरह की स्थिति में मुझे एहसास है कि तुम भी हो और मै भी हूँ। जिसके लिए मिलन एकाकी हो जाने का भाव है और विरह में दोनों के अस्तित्वान होने के भाव बना रहता है।

महादेवी के भीतर यह, निर्माण-उन्मद, कुछ नया कर गुज़रने के लिए एक ललक भर नहीं है। यह एक निर्माणाकांक्षा है जो अंधकार के वजूद को पूरी तरह स्वीकार कर, बड़ी शिद्दत के साथ उजाले के लिए जूझती है। यह तिमिर में स्वर्ण- वेला की तलाश है।

काव्यगत विशेषताएँ

'दीपशिखा' संग्रह से लिया गया प्रस्तुत गीत महादेवी वर्मा की वैचारिकता की दृढ़ता का परिचायक है।

यह गीत अपने अर्थ के संदर्भ में दुहरा अर्थ रखता है। एक अर्थ स्त्री के संघर्ष से जुड़ा हुआ है, वहीं दूसरा अर्थ प्रिय पथ पर चलने वाली कठिनाइयों से संबंधित है।

इसमें महादेवी मानो अपने अज्ञात और अनंत प्रियतम को भी संबोधित कर रही हैं।

बोध प्रश्न

- 'मिलन है एकाकी/ विरह में है दुकेला' से महादेवी का क्या अभिप्राय है?
- प्रस्तुत कविता में महादेवी किस पर दृढ़ होने की बात करती हैं?
- महादेवी वर्मा इस कविता में स्त्री के किस रूप की बात करती हैं, बताएँ।

कितनी करुणा कितने संदेश ..... जो तुम आ जाते एक बार

शब्दार्थ : तार-तार = छिन्न भिन्न कर देना। अनुराग = प्रेम। उन्माद = सनक, भ्रम। पखार = जल से साफ करने का काम। आर्द्रनाद = नम आवाज। विषाद = दुख। विराग = अरुचि, राग का अभाव। सर्वस्व = सभी कुछ।

संदर्भ : यह कविता महादेवी के प्रथम काव्य संग्रह 'नीहार' (1930) से ग्रहीत है।

प्रसंग : महादेवी वर्मा प्रस्तुत कविता में अपने प्रियतम के आने के बाद जो बदली हुई परिस्थितियाँ बनेगी उसका वर्णन किया है। कविता प्रिय के संभावित आगमन के स्वागत की मधुर कल्पनाओं से सराबोर है। छायावादी कवियित्री महादेवी वर्मा के इन शब्दों को जो चाहे वो गा सकता है। ऐसी अवस्था जो मन के तार झंकृत कर दे, उल्लास भर दे तिस पर आसुओं का दुर्गम संयोग यह प्रेम की वह स्थिति है जहाँ प्रेमी/प्रेयसी का आगमन हो रहा हो। महादेवी जी ने इस कविता में भावों का जो संपुट डाला है वो अद्‌भुत है।

व्याख्या : महादेवी वर्मा द्वारा रचित कविता 'जो तुम आ जाते एक' से ली गई इन काव्य पंक्तियों के माध्यम से कवयित्री एक स्त्री के उसके प्रियतम के मिलन से उत्पन्न होने वाली उस तीव्र अभिलाषा का वर्णन किया है। प्रियतम के आने के बाद पैदा होने वाले प्रभाव की कल्पना का बड़ा ही भावपूर्ण चित्रण है। महादेवी वर्मा अपनी कविताओं में रहस्यवादी तत्वों को भी शामिल करती थी। अज्ञात के प्रति उनका प्रेम उनकी कविताओं की एक विशेषता ही हैं। यह कविता में एक छायावादी रहस्यवादी गीत हैं। यहाँ प्रियतम का एक अर्थ परमात्मा से भी हैं। आत्मा परमात्मा से मिलकर माधुर्य से भर उठता है और उसके न होने से उत्पन्न होने वाले सभी विराग, दुख समाप्त हो जाते है। यहाँ कविता में प्राणों में वीणा की कल्पना की गई है। जिस प्रकार लौकिक जीवन में प्रेमी प्रेमिका आपस में मिलने के लिए व्याकुल रहते है उसी तरह आत्मा और परमात्मा के मिलन को लेकर भी चर्चा रहती है। इस छायावादी गीत में महादेवी वर्मा ने उस चीर सुंदर, अज्ञात से मिलने की अपनी तीव्र इच्छा प्रकट की हैं।

महादेवी वर्मा की कविता में संवेदनात्मक स्तर पर जो भाव, शक्ति बनकर उपस्थित होते हैं उनके मूल में लौकिक प्रेम के अनुभव के साथ रहस्यात्मक अध्यात्मिकता की भी मौजूदगी देखने को मिलती है। अखंड चेतन को पुष्प व्यक्तित्व के रूप में रखने वाली महादेवी भारतीय नारी के सम्मान और उसकी श्रद्धेय पवित्रतता को कविता की ऊर्जा बनाकर उसमें त्याग और तप का आलोक बाहर देती है। उनके संकल्प की अनुभूति नारी के स्नेह भरे आत्मदानी व्यक्तित्व को, अंधकार से टकरा प्रेम के दीप को सदैव प्रज्ज्वलित करते रहने का सांस्कृतिक चेतना को मार्मिक अभिव्यक्ति इस कविता में की हैं।

काव्यगत विशेषताएँ

छायावादी काव्य चेतना को यह कविता प्रस्तुत करती है।

प्रियतम से मिलने की आकांक्षा मौजूद है और उसके आने से क्या बदलाव हो जाएगा यह कवयित्री ने वर्णित किया हैं।

रहस्यवाद की भी पुष्टि है, जिससे मिलने की आकांक्षा है वह अज्ञात हैं।

बोध प्रश्न

- 'जो तुम आ जाते' कविता में महादेवी वर्मा किसके आने की बात करती है।

- प्रियतम के आने पर पथ में क्या बिछ जाते?
- महादेवी वर्मा के इस कविता के मूल में क्या है?

4.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

महादेवी ने प्रकृति के उपकरणों में जिस सौंदर्य के दर्शन किए, उसी से उनका प्रणयानुभूति का उदभव हुआ और इसी विराट सौंदर्य के प्रति वह अपने प्रणयोद्गार व्यक्त करती रही। सौंदर्य तो प्रेम का प्रेरक होता है। फिर अपार, अथाह, असीम सौंदर्य किससे हृदय का प्रणय से उद्वेलित नहीं कर देगा। महादेवी में अपने इस आलौकिक प्रिय से मिलने की तीव्र इच्छा है। इस प्रकार प्रणय के अनेकानेक मनोभावों के चित्रण उनकी कविताओं में भरे पड़े हैं वहाँ स्त्री सुलभ लाज संकोच के भी दर्शन होते हैं।

महादेवी की विरह वेदना में निश्चलता और सात्विकता के दर्शन होते हैं। विरह रूपी संगीत महादेवी की आत्मा को झंकृत करता है तथा वेदना इनके जीवन के प्रकाशमान करती है। विरह की सात्विकता महादेवी की कविताओं में विश्व वेदना बन जाती है। उनकी पीड़ा हृदय की शांत और गंभीर पीड़ा थी। चिर विरह की भावना के कारण महादेवी की कविताओं में उनके हृदय की करुणा दिखाई देती है। करुणा से भरी होने के कारण महादेवी की वेदना भी परिष्कृत रूप में अभिव्यक्त हुई है। महादेवी जी ने अपने काव्य में एक तरफ तो भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और अकांक्षा स्वर मुखरित हुई है।

महादेवी वर्मा के काव्य का मुख्य शृंगार उसका काव्य रूप ही है और वह है उसका सफल रूप से गीतिभाजन। इसी के कारण वे आधुनिक युग की मिरा भी काही जाती हैं। उनका गीतिकाव्य एक कोमल मेधु खंड की तरह बरसता है और युग की सभी ज्वालाओं को शीतलता प्रदान करता है। यह अभिव्यक्ति का समर्थ माध्यम बनकर यहाँ आता है। आत्मानुभूति का चित्रांकन, स्वर संगीत और शब्द योजना का सुंदर संयोजन, आरोह-अवरोह का निर्माण तथा भावानुकूल भाषा एवं शैली विधान सभी उनकी व्यापक करुणा को शक्ति प्रदान करते है। इस पाठ में शामिल दोनों कविताओं को गीतिकाव्य की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के बतौर देखा जा सकता हैं।

महादेवी वर्मा की काव्य भाषा अनेकों गुणों एवं भाषिक विशेषताओं से युक्त है। गेयता के साथ-साथ कोमल भाषा में खड़ी बोली का परिष्कृत एवं काव्योचित रूप सहज ही देखा जा सकता हैं। नए शब्दों का सृजन, विशिष्ट अर्थ भरने की काला, लक्षणिकता, रमणीय बिम्ब एवं प्रतीक विधान की अभिव्यक्ति, शब्द निरूपण, वर्ण विन्यास, नाद सौंदर्य तथा उक्ति सौंदर्य का मार्मिक निर्वाह उनकी कविता की प्राणशक्ति है। तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज तथा प्रतीक शब्दों का उचित प्रयोग उनके काव्य कौशल को ही प्रदर्शित करता है।

महादेवी वर्मा की प्रतीकात्मक संकेत भाषा उनकी कविता का विशिष्ट पहचान हैं। दीपक, बादल, नीर, आँसू, पतवार आदि प्रतीकों का प्रयोग उनके काव्य सौंदर्य को समृद्ध करता हौ। जीवन के विविध क्षेत्रों के लिए प्रतीक निश्चित ही महादेवी की सूक्ष्म एवं गहन कल्पना का

परिचय देते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से उनकी मनोवैज्ञानिक सूझ-बुझ का भी पता चलता है। प्रकृति, पुराण एवं संस्कृति के प्रतीकों के प्रति उनका विशेष झुकाव दिखलाई पड़ता हैं। भाषा में खनक के साथ अलंकारों का सुंदर प्रयोग उनकी कविता को हिंदी साहित्य में विशेष स्थान प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

- महादेवी वर्मा की कविताओं का मुख्य काव्य रूप क्या है?
- महादेवी के विरह वेदना में किस तरह के दर्शन होते हैं?
- सौंदर्य किसका प्रेरक होता है?
- प्रतीक योजना के तहत महादेवी वर्मा के किस सूझ-बुझ का पता चलता हैं।

4.4 पाठ सार

इस इकाई में आपने छायावाद की अंतिम स्तंभ कवयित्री महादेवी वर्मा की दो कविताओं का अध्ययन किया है। इन कविताओं के मूल प्रतिपाद्य को सारांश के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता में महादेवी वर्मा प्रेरित कर रही है कि अपार दुख में भी संघर्ष की इच्छा शक्ति को नहीं छोडना चाहिए। इस कविता में अपनी दृढ़ वैचारिकी का परिचय देते हुये वह कहती है कि विपरीत परिस्थितियों में भी कोशिश बंद नहीं करनी चाहिए।

'जो तुम आ जाते' कविता प्रियतम के आने को लेकर है। दूसरी अन्य कविताओं की तरह इस कविता में भी प्रेम मूल भाव है। उन्होंने इस कविता में प्रेम के मधुर रूप का चयन किया है। क्योंकि माधुर्य को, वह प्रेम को महत्वपूर्ण गुण मानती है।

हृदय के अनेक रागात्मक संबंधों में माधुर्यमूलक प्रेम ही उस सामंजस्य तक पहुंच सकता है जो सब रेखाओं में रंग भर सके, सब रूपों को सजीवता दे सके और आत्म निवेदन को इष्ट के साथ समता के धरातल पर खड़ा कर सके। इस कविता में छायावादी साहचर्य का भाव मौजूद है।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. महादेवी के गीत विषय वस्तु और भाषा-शैली की दृष्टि से छायावाद के प्रौढ़तम रूप के उदाहरण हैं।
2. महादेवी के काव्य में रहस्य भावना के साथ स्त्री जीवन की वेदना भी ध्वनित होती है।

3. महादेवी की कविताओं में प्रेम का विरह पक्ष प्रधान है, जो उनके स्व की अभिव्यक्ति के रूप में आया है।
4. महादेवी वर्मा का अप्रस्तुत विधान, प्रतीक प्रयोग और बिंब निर्माण छायावादी काव्य भाषा के सर्वथा अनुरूप हैं।

4.6 शब्द संपदा

1. अज्ञात = न जाना हुआ
2. अमरत्व = अमर होने की अवस्था
3. झलमला = चमकीला
4. प्रतिनिधि = प्रतिरूप, किसी के स्थान पर
5. माधुर्यमूलक = शोभा युक्त सुंदरता
6. रागात्मक = प्रेममय
7. संवेदनात्मक = अनुभूति से जुड़ा हुआ
8. सराबोर = तरबतर
9. साहचर्य = संग,साथ

4.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग <u>500</u> शब्दों में दीजिए।

1. महादेवी वर्मा की कविताओं की विशिष्ट पहचान क्या है?
2. महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं में अभिव्यकट प्रतीक योजना के बारे में लिखें।
3. महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मिरा क्यों कहा जाता है?

खंड (ब)

(आ लघु श्रेणी के प्रश्न (

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता में महादेवी वर्मा किस इच्छा शक्ति को नहीं छोडने की बात कर रही हैं?
2. 'जो तुम आ जाते' कविता में प्रेम के अतिरिक्त और कौन सा छायावादी तत्व विद्यमान है?

3. महादेवी वर्मा के कविताओं में किसके जीवन का संघर्ष दिखलाई पड़ता हैं?

I. सही विकल्प चुने –

1. महादेवी वर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के किस शहर में हुआ था?

A. इन्दौर B. इलाहाबाद **C. फ़र्रुखाबाद** D. वाराणसी

2. महादेवी वर्मा ने 1935 में किस पत्रिका के 'विदुषी अंक' का संपादन किया था?

A. सरस्वती **B. चाँद** C. हंस D. प्रताप

3. महादेवी वर्मा की कविता 'पंथ होने दो अपरिचित' उनके किस काव्य संग्रह से ली गई है?

A. रश्मि B. नीरजा **C. दीपशिखा** D. नीहार

4. महादेवी वर्मा के काव्य में 'अमा' शब्द का प्रयोग किसके प्रतीक के रूप में हुआ है?

A. प्रेम B. सुखद सुबह **C. अंधेरी रात** D. बादल

5. महादेवी वर्मा को 'आधुनिक युग की मीरा' क्यों कहा जाता है?

A. उनकी विरह वेदना और गीति काव्य के कारण B. उनके गद्य लेखन के कारण

C. इंदौर में जन्म होने के कारण D. राजनीति में सक्रिय होने के कारण

6. 'जो तुम आ जाते' कविता महादेवी वर्मा के किस काल की रचना है और किस संग्रह में है?

A. प्रथम काव्य संग्रह, नीहार B. उत्तर छायावाद, यामा

C. मध्य काल, सांध्यगीत D. अंतिम काल, दीपशिखा

7. महादेवी की कविता में 'मिलन' को 'एकाकी' और 'विरह' को 'दुकेला' कहने का क्या अर्थ है?

A. मिलन में दोनों अलग रहते हैं **B. मिलन में द्वैत का अंत हो जाता है**

C. विरह में व्यक्ति अकेला हो जाता है D. मिलन में भीड़ बढ़ जाती है

8. 'पंथ होने दो अपरिचित' कविता में कवयित्री ने किसके प्रति अपने संकल्प को व्यक्त किया है?

A. आरामदायक जीवन के प्रति **B. संघर्ष और निर्माण के प्रति**

C. पीछे हटने के प्रति D. सफलता के डर के प्रति

9. महादेवी वर्मा की गद्य रचनाओं की मुख्य विशेषता क्या मानी जाती है?

A. हास्य और व्यंग्य **B. भाषा और विचार की परिपक्वता**

C. काल्पनिक लोक की प्रधानता D. कठिन दार्शनिक शब्दावली

10. महादेवी वर्मा ने प्रयाग विश्वविद्यालय से किस विषय में एम.ए. किया था?

A. संस्कृत B. अंग्रेजी C. हिंदी D. इतिहास

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. महादेवी वर्मा : इन्द्रनाथ मदान
2. महादेवी नया मूल्यांकन : गणपति चन्द्रगुप्त
3. महादेवी : सं. परमानंद श्रीवास्तव

इकाई 5 : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय

रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय
5.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व
5.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा
5.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन
5.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा
5.4 पाठ सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परीक्षार्थ
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप इस पाठ में रामधारी सिंह 'दिनकर' के बारे में अध्ययन करेंगे। हिंदी साहित्य में लौह पुरुष के नाम से विख्यात रामधारी सिंह 'दिनकर' युगद्रष्टा कवि हैं। उन्होंने अपने युगधर्म को समझकर राष्ट्र के अतीत, वर्तमान और भविष्य को समन्वित करने का प्रयास किया है। तो आइए, ऐसे महान साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- दिनकर के व्यक्तित्व के विविध आयामों को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य यात्रा के पड़ावों से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना को समझ सकेंगे।
- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
- दिनकर की वैचारिकता से अवगत हो सकेंगे।

5.3 मूल पाठ : रामधारी सिंह 'दिनकर' : एक परिचय

प्रिय छात्रो! आप इस इकाई में दिनकर के व्यक्तित्व और कृतित्व से संबंधित पहलुओं का अध्ययन करेंगे।

5.3.1 दिनकर का व्यक्तित्व

छात्रो! अब हम दिनकर के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

जन्म एवं परिवार

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के सिमरिया गाँव में बाबू रवि सिंह और मनरूप देवी के घर मझले पुत्र के रूप में हुआ था। दिनकर का जन्म उस समय हुआ था जब देश अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त था। उनके पिता एक ठेठ किसान थे जिनके पास अपना कहने को केवल फूस की झोपड़ी थी। दिनकर केवल दो वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु हो गई। परिवार के मुखिया की मृत्यु हो जाने से पूरा परिवार बिखर गया था। ऐसे में उनकी माता मनरूप देवी ने अपनी कर्मशक्ति और इच्छाशक्ति के द्वारा न केवल अपने परिवार को आगे बढ़ाया बल्कि अपनी संतानों को शिक्षित बनाने का बीड़ा भी उठाया।

बोध प्रश्न

- रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब हुआ?
- दिनकर के परिवार के बारे में आप क्या जानते हैं?

शिक्षा और व्यक्तित्व

दिनकर को शिक्षित करने में उनकी माँ मनरूप देवी का बहुत बड़ा योगदान रहा। वे जानती थी कि परिस्थितियों से हार मानकर अपने आपको समय के आगे समर्पित कर देने से समस्याएँ समाप्त नहीं होतीं। शिक्षा एक ऐसा अस्त्र है जिसके द्वारा बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिल जाता है। अगर समाधान न भी मिले, पर आत्मबल तो मिलता ही है। इसी विचार के साथ उन्होंने पाँच वर्ष की अवस्था से ही दिनकर को विद्यालय भेजना शुरू कर दिया। दिनकर ने भी माँ को निराश नहीं किया। वे प्रारंभ से ही एक कुशल छात्र थे। उनकी बुद्धि बड़ी तेज थी लेकिन घर की परिस्थितियाँ इतनी खराब थीं कि दीया जलाकर उन्हें अपनी पढ़ाई करनी पड़ती थी। इसके संबंध में उन्होंने स्वयं लिखा है, 'टिमटिम दीपक के प्रकाश में पढ़ते निज पोथी शिशुगण।' दिनकर ने माँ की सहायता के लिए गाय-भैंस चराना भी शुरू कर दिया था।

पाँचवीं कक्षा पास करने के बाद दिनकर का नाम बारो गाँव के नेशनल मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया, परंतु अभी वे सातवीं कक्षा में ही थे कि तो वह स्कूल बंद हो गया। तब उनका नाम बारो में ही सरकारी मिडिल स्कूल में लिखवा दिया गया। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनकी मेधा-शक्ति का विकास बड़ी तेजी से हो रहा था। सातवीं क्लास में हिंदी में सर्वाधिक अंक लाने पर उन्हें एक बार 'रामचरितमानस' और एक बार 'सूरसागर' जैसे ग्रंथ पुरस्कार स्वरूप प्राप्त हुए। सातवीं कक्षा पास करने के बाद आठवीं कक्षा के लिए मोकामा घाट के जेम्स वाकर स्कूल में भर्ती हुए।

दिनकर जी के गाँव सिमरिया और मोकामा के बीच गंगा नदी बहती है। स्टीमर और नाव की व्यवस्था तो उस समय भी थी, लेकिन इन सबका खर्चा उठाने की शक्ति दिनकर के पास

नहीं थी। घर से मात्र एक धोती-कुर्ता पहनकर वे नंगे पाँव पैदल मोकामा घाट पहुँचते और वहाँ से तैर कर गंगा नदी पार करके अपने स्कूल पहुँचते थे। "जिस प्रकार कंचन आग में तपकर कुंदन बनता है, उसी प्रकार दिनकर समय की कठोर अग्नि में तपकर श्रेष्ठतम मानव तथा महानतम रचनाकार बनें।" सन् 1928 में अर्थात 20 वर्ष की आयु में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। मैट्रिक की परीक्षा में उनको पूरे जनपद में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए। उनकी इस उपलब्धि के कारण उन्हें बिहार सरकार के द्वारा 'भूदेव' पदक दिया गया।

मैट्रिक पास करने के बाद दिनकर को उच्च शिक्षा के लिए पटना जाना पड़ा। उन्होंने पटना कॉलेज में अपना नाम लिखवाया। वे हिंदी को अपना प्रमुख विषय बनाकर आगे की पढ़ाई करना चाहते थे, लेकिन पटना कॉलेज के प्रधान अध्यापक मि. हार्न ने उन्हें हिंदी विषय लेने की अनुमति नहीं दी। दिनकर ने इतिहास को प्रमुख विषय के रूप में लेकर बी.ए. आनर्स की परीक्षा पास की। इसी समय पारिवारिक कर्तव्यों को पूरा करने के लिए वे नौकरी की तलाश कर रहे थे और उन्होंने बिहार सरकार के मंत्री गणेश दत्त सिंह से सहायता भी माँगी लेकिन गणेश दत्त सिंह ने सहायता नहीं की, अपितु यह कह दिया - 'जाओ कहीं जाकर मास्टरी करो।' काफी परिश्रम के बाद उन्हें बरबिघा के एक नए उच्च विद्यालय में प्रधानाध्यापक का पद मिल। उन्होंने यह नौकरी एक साल ही किया क्योंकि सितंबर 1934 में उनकी नियुक्ति बिहार सरकार के राजस्व विभाग में सब-रजिस्ट्रार के पद पर हुई थी। इस नौकरी के मिलने पर उन्हें पारिवारिक रूप से तो निश्चिंतता हुई, परंतु यहीं से शुरू हुई उनकी औपनिवेशिक सरकार के नौकरी की अन्यतम समस्याएँ। उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्षशील रहा।

दिनकर का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। गोरा चिट्टा रंग, पाँच फुट ग्यारह इंच लंबाई, भारी भरकम शरीर, बड़ी-बड़ी आँखें जो किसी रचना के संबंध में चिंतन करते समय थोड़ी-सी सिकुड़कर क्लिष्ट-सी हो जाती थीं, परंतु बात करते समय अथवा कविता पाठ करते समय तेजोदीप्त हो उठतीं। दिनकर के व्यक्तित्व की एक और विशेषता यह भी थी कि वे हाजिरजवाबी थे। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न ही किसी की चाटुकारिता करना उन्हें पसंद था। इन्हीं विशेषताओं के कारण उन्हें कुछ लोग अहंकारी भी कहते थे। इस क्रांतिकारी कवि को दूसरों के कथन की अपेक्षा अपने स्वभाव पर ज्यादा विश्वास था। वे बहुत अच्छा काव्यपाठ भी करते थे। उनकी वाणी प्रभावोत्पादक थी।

भगवतीचरण वर्मा ने दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में लिखा है, "जैसे पंत को देखते ही कोमलता और संयमता का प्रभाव उत्पन्न हो जाता है, वैसे ही निराला और दिनकर के दर्शन मात्र से ही पौरुष और प्रभुत्व की याद आ जाती है। कलाकार की हैसियत से मैं दिनकर को अधिक स्पष्ट और ईमानदार मानता हूँ। दिनकर अपनी भावनाओं की सीमा छोड़ने को कहीं भी तैयार नहीं है। कहीं भी आरोपित विश्वासों का सहारा दिनकर ने नहीं लिया है।"

बोध प्रश्न

- दिनकर की शिक्षा किन परिस्थितियों में आगे बढ़ी?

- दिनकर के व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
- 'भूदेव' पदक दिनकर को क्यों मिला?
- दिनकर के व्यक्तित्व के संबंध में भगवतीचरण वर्मा ने क्या लिखा है?

गृहस्थ जीवन

दिनकर के समय में विवाह बहुत जल्दी हो जाया करते थे। दिनकर जब 12-13 साल के थे तभी से उनके विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे थे। परिवारवालों ने रक्षा ठाकुर की कन्या श्यामवती के साथ उनका विवाह करवा दिया। प्रथानुसार गौना बाद में करवाया गया था। उनके गृहस्थ जीवन की शुरूआत अच्छी थी। श्यामवती देवी पतिभक्त महिला थीं। उनकी चार संतानें हुईं। दो पुत्र रामसेवक सिंह तथा केदारनाथ सिंह तथा दो पुत्रियाँ विनीता देवी और विभा देवी। दिनकर का गृहस्थ जीवन सफल और सुखी था लेकिन पैसे के लिए होनेवाले संघर्ष ने उनके परिवार के प्रेम को नष्ट कर दिया था।

दिनकर ने 'उदयाचल' नामक प्रकाशन संस्था की स्थापना की थी। बड़े बेटे रामसेवक सिंह को उन्होंने इस संस्था को परिवार के साथ जोड़कर आगे ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी थी। लेकिन रामसेवक न तो प्रकाशन के कार्य को ठीक प्रकार से संभाल सके और न ही परिवार को जोड़कर रख सके। बाद में उन्हें कोई असाध्य रोग भी हो गया जिसके कारण उनकी मृत्यु हुई। जिस आयु में दिनकर को आराम करना चाहिए था उस आयु में विधवा पुत्रवधू और पाँच अनाथ पोते-पोतियों का बोझ उन पर आ गया। इस तरह फिर से उनका जीवन संघर्षशील बन गया।

दिनकर को सन् 1973 में हल्का पक्षाघात हुआ लेकिन उनकी कार्य करने की शैली में कोई परिवर्तन नहीं आया। एक दिन उन्हें चेन्नै जाना था। वहाँ से वे तिरुपति जाना चाहते थे। उनकी नातिन उषा ने उनसे तुतलाती जुबान में पूछा, 'आप तिरुपति क्यों जा रहे हैं नाना!' दिनकर ने हँसकर कहा, 'मौत माँगने जा रहा हूँ।' उन्होंने तिरुपति में बालाजी का दर्शन किया लेकिन वहाँ से वापस नहीं लौट सके। सन् 24 अप्रैल, 1974 में तिरुपति में दिल का दौरा पड़ने से उनकी मृत्यु हुई।

बोध प्रश्न

- दिनकर का जीवन किस प्रकार था?
- दिनकर ने किस प्रकाशन संस्था को स्थापित किया था?

पुरस्कार एवं सम्मान

1948 : 'कुरुक्षेत्र' के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा, उत्तर प्रदेश सरकार तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

1956 : 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार के द्वारा पुरस्कृत।

1959 : 'पद्मभूषण' से सम्मानित।

1962 : भागलपुर की विश्वविद्यालय द्वारा साहित्य के क्षेत्र में मानद डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित।

: 'सरस्वती' पत्रिका की हीरक-जयंती के उपलक्ष्य में मानपत्र से राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त द्वारा सम्मानित।

1965 : गुरुकुल महाविद्यालय द्वारा 'विद्यावाचस्पति' उपाधि से सम्मानित।

1968 : राजस्थान विद्यापीठ द्वारा 'साहित्य चूड़ामणि' उपाधि से सम्मानित।

1973 : 'उर्वशी' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित।

5.3.2 दिनकर की काव्य यात्रा

छात्रो! दिनकर का बचपन संघर्षशील रहा। जीवन संघर्षों के साथ-साथ वे अपनी रचनात्मक यात्रा को आगे बढ़ा रहे थे। दिनकर ने मात्र 12 वर्ष की आयु में सन् 1920 में महात्मा गांधी का प्रथम दर्शन किया। गांधी जी की बातों ने दिनकर के बाल मन को बहुत प्रभावित किया था। तभी से वे मन से राष्ट्रवादी बन गए थे। लगभग इसी वर्ष उन्होंने अपने गाँव सिमरिया में मनोरंजन पुस्तकालय की स्थापना भी की थी। वे एक हस्तलिखित समाचार पत्र का संपादन भी करते थे।

बोध प्रश्न

- गांधी जी से दिनकर किस प्रकार प्रभावित हुए?

दिनकर की पारिवारिक परिस्थितियाँ ऐसी नहीं थी कि वे राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय रूप से सत्याग्रही बनकर कूद पड़ते, लेकिन उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीय क्रांति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। दिनकर की शिक्षा और काव्य लेखन दोनों साथ-साथ चल रहें थे। एक तरफ जहाँ वे अपने घर-परिवार के लिए शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन की राह तलाश कर रहे थे, वहीं दूसरी तरफ अपने काव्य के माध्यम से युवा मन के आक्रोश को भी अभिव्यक्ति दे रहे थे।

छात्रो! क्या आप जानते हैं कि रामधारी सिंह का नाम 'दिनकर' कैसे पड़ा? इसकी भी एक रोचक कहानी है। उन दिनों बेगूसराय से 'प्रकाश' नामक मासिक पत्रिका निकलती थी। रामधारी सिंह इस पत्रिका में नियमित लिखा करते थे। एक दिन उनके कुछ मित्रों ने उन से कहा कि रामधारी सिंह नाम कुछ बड़ा लगता है। अतः क्यों न कोई उपनाम रख लें। दिनकर को मित्रों की यह बात अच्छी लगी, परंतु क्या नाम रखें इस संबंध में वे कई दिनों तक विचार करते रहे। आखिरकार उनके मन में एक विचार कौंध गया। उनके पिता का नाम रवि सिंह था। रवि के पुत्र दिनकर, दिनकर प्रकाश का स्रोत भी है और उनका उद्देश्य अपने काव्य के माध्यम से प्रकाश फैलाना ही तो है, अतः क्यों न 'दिनकर' उपनाम का ही प्रयोग किया जाए। यह विचार जब उन्होंने अपने मित्रों के सामने रखा तो सभी को बहुत पसंद आया। इस तरह रामधारी सिंह, 'दिनकर' बन गए।

बोध प्रश्न

- 'दिनकर' उपनाम कैसे पड़ा?

छायावाद का कल्पना-लोक इस क्रांतिकारी कवि को बहुत समय तक अपने मोहपाश में बाँध नहीं पाया। वह ऐसा समय था जब ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरुद्ध आक्रोश अत्यंत तीव्र होता जा रहा था। दिनकर इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण देश-विदेश के इतिहास को पढ़ रहे थे। वे फ्रांस की राज्यक्रांति, अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम, मार्क्स और लेनिन के विचार आदि का अवलोकन कर रहे थे। परिणामस्वरूप उनके मन में अंतर्द्वंद्व पैदा होने लगा। उनके सामने एक ओर विश्व में हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध जनता का आक्रोश था तो दूसरी ओर गाँव का घोर अंधकार। यह सब देखकर दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा। इन परिस्थितियों के कारण ही उनका मन छायावादी कल्पना लोक से निकलकर वर्तमान के कठोर धरातल पर आ खड़ा हुआ।

बोध प्रश्न

- किन परिस्थितियों के कारण दिनकर का कवि-मन आक्रोश से भरने लगा?

1933 तक आते-आते दिनकर की काव्य प्रतिभा ने अपने लिए दिशा तलाश कर ली थी। छायावाद की कल्पना को त्यागकर उन्होंने अपने भैरव-हुंकार के लिए शंख उठा लिया था। दिनकर के युवा मन को भी गांधी जी का अहिंसा आंदोलन बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। उन्होंने चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के विचारों का समर्थन किया। 'हिमालय' में उनके मन का यही आक्रोश दिखाई देता है- 'रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,/ जाने दो उनको स्वर्ग धीर,/ पर, फिर हमें गांडीव-गदा,/ लौटा दे अर्जुन-भीष्म वीर।' यहीं से उनके काव्य में उग्र राष्ट्रीय काव्यधारा बह चली जिसे क्रमशः 'हुंकार', 'कुरुक्षेत्र' और अंततः 'परशुराम की प्रतीक्षा' में देख सकते हैं।

दिनकर की इस उग्र विचारधारा की प्रतिक्रिया निश्चित रूप से सरकारी क्षेत्र में होने लगी थी। अंग्रेजी सरकार से दिनकर का पहला टकराव सन् 1934 में बिहार हिंदी सम्मेलन के छपरा अधिवेशन के समय हुआ। इस सम्मेलन में उन्होंने अध्यक्षता की थी। सरकार ने मुख्य रूप से उनसे दो सवालों के जवाब माँगे। पहला यह कि, 'कवि सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए आपने सरकार से अनुमति क्यों नहीं माँगी?' दूसरा यह कि, 'सभापति की हैसियत से कवियों को सरकार के विरुद्ध कविताएँ पढ़ने से क्यों नहीं रोका?' दिनकर ने सरकार के द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब बड़े ही संयम के साथ दिया था। सरकार के पहले सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि, 'सांस्कृतिक सभाओं में जाने के लिए मैंने अनुमति माँगने की आवश्यकता नहीं समझी' और दूसरे सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा था, 'कवियों को यदि कविता पढ़ने से रोका

जाता तो जनता उनकी ओर और भी आकृष्ट होती।' सौभाग्यवश बात वहीं समाप्त हो गई थी लेकिन सरकार और दिनकर के बीच वैचारिक संघर्ष समाप्त नहीं हुआ। वह धीरे-धीरे बढ़ने लगा। यह भी सच है कि नौकरी को लेकर शुरू से ही उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ा था। जीवन के उतार-चढ़ावों ने उनको संघर्षशील, निर्भीक, स्पष्टवादी, ओजस्वी स्वर के स्वामी और स्वाभिमानी बना दिया था।

बोध प्रश्न

- क्या दिनकर गांधी जी के अहिंसक विचार से सहमत थे?
- दिनकर के स्वभाव में किन-किन गुणों को पाया जाता है?

1935 से लेकर 1940 तक उनकी चार किताबें क्रमशः 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती' और 'द्वंद्वगीत' आ चुकी थीं। 'रेणुका' में तो दिनकर की निर्भीकता स्पष्ट रूप में सामने आई थी। सन् 1940 में ही 'जनता' के सहायक संपादक ने उनसे तार द्वारा एक कविता माँगी। उस समय गांधी जी इस उधेड़-बुन में फँसे थे कि आंदोलन शुरू किया जाए या नहीं। गांधी जी के द्वंद्व को लेकर दिनकर ने 'ओ दुविधाग्रस्त शार्दूल बोल' नामक कविता रच डाली। यह कविता पूर्णतया सरकार विरोधी थी। कॉलेज के दिनों में भी दिनकर अपना नाम बदलकर 'अमिताभ' नाम से कविताएँ लिखा करते थे सो उन्होंने इस कविता में भी 'अमिताभ' नाम का प्रयोग किया। उन्होंने लिखा-

'यह तो दिनकर की सृष्टि नहीं,
अमिताभ देव की दुष्ट कर्म।'

सरकार ने सेंसर करके यह कविता तो छप जाने दी, लेकिन कलेक्टर ने उन्हें बुलाकर चेतावनी दी। उन्हें नौकरी से न निकाला कर तबादला कर दिया। तबादला तो उनके लिए साधारण सी बात हो गई। बार-बार उन्हें सरकारी अधिकारियों को जवाब भी देना पड़ता था। उन्हीं दिनों को याद करके दिनकर ने स्वयं लिखा था कि, घबराहट में आकर उन्होंने नौकरी छोड़ने के लिए अवश्य सोचा था, लेकिन नहीं तीन कारणों से नहीं छोड़ पाए। पहली तो यह कि नौकरी छूट गई तो परिवार खाएगा क्या? दूसरी यह कि हर तबादले के साथ उन्हें चार-छह दिन की छुट्टियाँ मिल जाती थीं, तो वे जयप्रकाश जी के सान्निध्य में बिताने पटना चले जाते थे और तीसरी बात यह कि जयप्रकाश जी बराबर शह देते रहते थे कि 'इस्तीफा देने के बजाय बरतरफ़ हो जाना ही श्रेष्ठ है।'

दिनकर जी को अंग्रेज सरकार ने तो आत्मसंघर्ष की तरफ धकेल दिया। उनका तबादला युद्ध-प्रचार विभाग में कर दिया। दिनकर का कवि-मन अपने इस दुर्भाग्य पर आँसू बहा रहा था। देश में उन्हीं की कविताएँ पढ़ते हुए नौजवान जिस अंग्रेजी राज्य के खिलाफ बगावत कर रहे थे वे स्वयं उसी अंग्रेजी राज की विशाल व्यवस्था के एक अवयव का पुर्जा बने हुए थे। उन्हें अपने चारों तरफ अव्यवस्था की एक धुंध-सी बिखरी नजर आ रही थी। 'आग की भीख' शीर्षक कविता में वे अपनी इसी अवस्था को दर्शाया है-

'धुंधली हुई दिशाएँ, छाने लगा कुहासा।

कुचली हुई शिखा से, आने लगा धुआँ सा।
प्यारे स्वदेश के हित अंगार माँगता हूँ।
चढ़ती जवानियों का शृंगार माँगता हूँ।'

बोध प्रश्न

- दिनकर अपनी नौकरी किन कारणों से नहीं छोड़ पा रहे थे?

दिनकर को ऐसा महसूस हो रहा था कि अंग्रेज सरकार की चाकरी करते-करते उनके अंदर की आग ठंडी हो रही है। वे छटपटाहट से भर उठे। उनके भीतर भीषण द्वंद्व चल रहा था। अपने इस अंतर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करते हुए उन्होंने लिखा है-

'आगे पहाड़ को पा घटा रुकी हुई है,
बलपुंज केसरी की ग्रीवा झुकी हुई है।
निर्वाक है हिमालय गंगा डरी हुई है।
निस्तब्धता निशा की दिन में भरी हुई है।'

दिनकर की यह विवशता और पीड़ा मात्र उनकी नहीं है। उनकी इस पीड़ा के साथ देश की पीड़ा जुड़ी है। सन् 1942 के आंदोलन को भी अंग्रेजों ने बुरी तरह से कुचल दिया था। कवि मन को लग रहा था कि इस महायज्ञ की अग्नि बुझती जा रही है और वे स्वयं अंग्रेजों की गुलामी करते हुए देश के लिए कुछ नहीं कर पा रहे हैं। 'निमंत्रण' शीर्षक कविता में वे देश के संपूर्ण साहित्यकारों को इस प्रकार आमंत्रित करते हैं -

'सुलगती नहीं यज्ञ की आग।
दिशा धूमिल, यजमान अधीर।
पुरोधा कवि कोई है यहाँ।
देश को दे ज्वाला के तीर।'

स्वतंत्रता सेनानियों को उत्साहित करते हुए भी उन्होंने लिखा है-

'वह प्रदीप जो दिख रहा है झिलमिल, दूर नहीं है,
थक कर बैठ गए क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।'

द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारतीय राजनीति वास्तव में ऊहापोह की शिकार थी। हालाँकि कांग्रेस इस युद्ध में अंग्रेजों का असहयोग कर रही थी, फिर भी गांधी जी का मानवतावादी सिद्धांत इस पक्ष में नहीं था कि इस समय युद्धरत अंग्रेजों को किसी कठिनाई में डाला जाए। परिणाम यह हुआ कि राष्ट्रीय आंदोलन में एकाएक ठंडापन-सा आ गया। इस ठंडेपन से खिन्न कवि पुकार उठता है-

'शुरू हुई आराध्य भूमि यह, क्लांति नहीं रे राही।
और नहीं तो पाँव लगे हैं क्यों पड़ने डगमग से?'

दिनकर द्वितीय विश्वयुद्ध के भीषण समय में अपनी आग के साथ-साथ देश की आग को भी प्रज्वलित करने के लिए प्रयत्नशील थे। लेकिन इन सारी बातों के बावजूद उनका मन शांत

नहीं था। मानसिक स्तर पर वे एक तीव्र द्वंद्व के शिकार थे। वे उस समय अंग्रेज सरकार के प्रचार विभाग में थे। चारों तरफ से वे निंदा तथा व्यंग्य बाणों को सह रहे थे। अंग्रेजी राज के विरोध में सबसे उग्र राष्ट्रीय कविताएँ लिखने वाला जनता का लाड़ला कवि इस युद्ध काल में अंग्रेज़ों की चाकरी कर रहा था। यह बात किसी को भी पच नहीं रही थी। इसी समय सन् 1945 के अंत में मुज्जफ़रपुर में 'सुहृद संघ' का वार्षिकोत्सव मनाया गया। सभापति के रूप में माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा, 'हमारे राष्ट्रीय कवि जब चाँदी के चंद टुकड़ों पर बिकते हैं, तब हम साहित्य में राष्ट्रीयता की बात कैसे करें!' दिनकर माखनलाल चतुर्वेदी की बात से अंदर तक आहत हो गए और उन्होंने सरकार के प्रचार विभाग से त्यागपत्र दे दिया। दिनकर सरकारी सेवा से मुक्त होकर लगभग डेढ़ साल तक पत्रकारिता से जुड़े रहें। इस दौरान उन्होंने अपने लिए कुछ समय बिताया। किसी की चाकरी नहीं, किसी के प्रति जवाबदेही नहीं, केवल वे अपने विचारों और अपने साहित्य के साथ जी रहे थे। उसी समय 1946 में नोआखाली के दंगे ने मानवता को संपूर्ण रूप से तार-तार कर दिया। इस भीषण सांप्रदायिक विद्वेष से व्यथित होकर दिनकर ने 'तकदीर का बँटवारा' नाम की एक कविता लिखी जिसमें उनकी मानवीय संवेदनाएँ मूर्त रूप से प्रस्फुटित हुईं -

'नारी-नर जलते साथ हाय,
जलते हैं मांस रुधिर अपने।
जलती है वर्षों की उमंग,
जलते हैं सदियों के सपने।'

परंतु न तो कवि संवेदना काम आई और न ही करोड़ों लोगों की दुआ। 15 अगस्त, 1947 में स्वतंत्रता के साथ ही भारत और पाकिस्तान के रूप में देश विभाजन की त्रासदी को झेलना पड़ा।

बोध प्रश्न

- दिनकर को नौकरी क्यों छोड़नी पड़ी?
- नोआखाली दंगे से व्यतीत दिनकर ने क्या किया?

दिनकर के लिए द्वितीय विश्वयुद्ध के समय तक का काल संघर्षपूर्ण था। वे तन-मन दोनों से ही टूट चुके थे, लेकिन स्वतंत्रता के बाद उनके जीवन में काफी बदलाव आया। बिहार सरकार ने उन्हें पटना विश्वविद्यालय द्वारा संचालित लंगट सिंह महाविद्यालय (मुजफ्फरपुर) में हिंदी विभाग का अध्यक्ष बनाकर भेजा। यहाँ वे केवल दो साल ही रहें। अप्रैल 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य चुन लिए गए और इस महाविद्यालय से अपना त्यागपत्र देकर दिल्ली चले गए। दिल्ली जाने के बाद दिनकर को स्वाधीन भारत की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त हुआ। यहाँ इस क्रांतिकारी कवि ने देखा कि जिस आशा, विश्वास और सपने के साथ भारतवासियों ने अंग्रेजों के साथ युद्ध किया था, उन भावनाओं के लिए देश की राजधानी दिल्ली में बैठे नेताओं के मन में कोई श्रद्धा नहीं थी। दिनकर ने यह पाया कि लोकतंत्र तो एक छलावा बन गया था। लोकतंत्र के सिंहासन पर वे लोग बैठे थे जिन्हें आम जनता की पीड़ा, दुख-दर्द से कोई मतलब नहीं था। वे तो

अपने जीवन के हास-विलास में ही व्यस्त थे। जनता भूख और बेबसी की पीड़ा से त्रस्त थी और नेता भोग-विलास में। कवि का अंतर्मन स्वतंत्रता के इस भयानक रूप को देखकर रो पड़ा। उन्होंने सन् 1954 में 'भारत का यह रेशमी नगर' शीर्षक कविता लिखी। अपनी इस कविता में उन्होंने दिल्ली का विलासपूर्ण जीवन और गाँवों की बदहाली का अत्यंत हृदयविदारक चित्र प्रस्तुत किया है-

'भारत धूलों से, भरा आँसुओं से गीला,
भारत अब भी व्याकुल विपत्ति के बारे में।
दिल्ली में तो है खूब ज्योति की चहल-पहल,
पर भटक रहा है सारा देश अंधेरे में।'

दिनकर जनप्रतिनिधियों को धिक्कारते हुए कहते हैं-

'चिंता हो भी क्यों तुम्हें? गाँव के जलने से
दिल्ली में तो रोटियाँ नहीं कम होती हैं।
घुलाता न अश्रु बूंदों से आँखों का काजल,
गालों पर की धूलियाँ नहीं नम होती हैं।'

दिनकर आजीवन सामाजिक विषमता से लड़ते रहें। जब उन्होंने स्वाधीन भारत की इस राजनीतिक विडंबना को देखा तो दुख और पीड़ा से भर उठे।

बोध प्रश्न

- दिनकर आजीवन किससे लड़ते रहें?
- स्वाधीन भारत के किस दृश्य को देखकर दिनकर दुखी हुए?

5.3.3 दिनकर का काव्य दर्शन

दिनकर की काव्य साधना एक ऐसी यात्रा है जिसे अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अनगिनत मार्गों को तय करना पड़ा। दिल्ली प्रवास का समय दिनकर के रचनात्मक उत्कर्ष का समय रहा। उस समय तक देश स्वतंत्र हो चुका था। दिनकर राजनेताओं के रवैये से प्रसन्न नहीं थे, लेकिन संवैधानिक व्यवस्था पर उन्हें पूर्ण विश्वास था। कवि की भावनाएँ जो स्वतंत्रता से पहले अत्यंत तीखी और आक्रोशपूर्ण हुआ करती थीं, अब शांत होकर समाज के रचनात्मक स्वरूप की तलाश करने लगी थीं।

दिनकर छायावाद से बहुत अधिक प्रभावित नहीं हो सके। वस्तुतः दिनकर का काव्य स्वच्छंद काव्य है। यह काव्यधारा स्वयं को कल्पना की सीमा से मुक्त कर जीवन के सभी पक्षों का यथावत सृजन करती है। दिनकर के स्वच्छंदतावादी काव्य को 'रेणुका' के निम्न पंक्तियों के माध्यम से समझ जा सकता है-

ऐसा दो वरदान, कला को
कुछ भी रहे अजेय नहीं,
रजकण से ले पारिजात तक

कोई रूप अगेय नहीं।

काव्य की विशेषताएँ

छात्रो! अब दिनकर के काव्य की कुछ प्रमुख विशेषताओं को देखेंगे जो इस प्रकार हैं -

सौंदर्यबोध

कवि दिनकर ने सौंदर्य के मापदंड को बहुत विस्तृत आकाश दे दिया था। उन्होंने सौंदर्य को केवल प्रेयसी के शारीरिक सुंदरता में नहीं खोजा बल्कि बबूल और कैक्टस में भी देखा। दिनकर ने जिस सौंदर्य को विश्लेषित किया वह सौंदर्य माटी के सुगंध से सराबोर, प्रकृति को अपने अंगों में सजाए और अपनी परिस्थितियों के यथावत अलंकारों से शोभित है। दिनकर के काव्य में अलौकिक सौंदर्य का महत्व नहीं है। इसके बजाय एक ऐसे संसार के सौंदर्य को देखा जा सकता है, जहाँ केवल मनुष्य का मनुष्य से नहीं बल्कि संपूर्ण जगत से अगाध प्रेम हो-

'फूलों की क्या बात? बांस की हरियाली पर मरता हूँ।
अरी दूब, तेरे चलते जगती का आदर करता हूँ।
किसी लोभ से इसे छोड़ दूँ, यह जग ऐसा स्थान नहीं,
और बात क्या? बहुधा मैं चाहता मुक्ति का वरदान नहीं'

दिनकर के काव्य में कई जगह यह भाव प्राप्त होता है कि जिस प्रकार जीवन आकर्षक और मधुर है उसी प्रकार क्षणभंगुर है तथा शारीरिक सौंदर्य क्षणिक है। दिनकर द्वारा रचित निम्न पंक्तियाँ इसी भाव को दर्शाती हैं -

'मरते कोमल वत्स यहाँ बचती न जवानी परदेशी।
माया के मोहक वन की क्या कहूँ कहानी परदेशी।'

दिनकर के काव्य में प्रकृति के साथ मनुष्य की आत्मा की एकात्मकता है। प्रकृति को देखकर कवि उसके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। वह कह उठता है-

'कला के पारखी हो चांदनी के चाहने वालों?
हवा की साँस में जो दर्द है उसको समझते हो?
बिताई है कभी क्या पूर्णिमा की रात खेतों में?
खड़ी हरियाली को देखते, बोले बिना कुछ भी?
पहाड़ों को कभी क्या देखकर यह भाव जागा है,
तुम्हारी और उनकी रूह आपस में सहेली हैं।'

भावुकता

अन्य स्वछंदतावादी कवियों की भाँति दिनकर के कवि-मन में भी भावुकता का दर्शन होता है। दिनकर का मानना था कि 'भावुकता की तरंग पर चढ़कर ही क्रांति संभव होती है।' दिनकर के काव्य ने सामाजिक सरोकारों को भावुकता के साथ इस प्रकार से जोड़ लिया था कि समाज की सारी व्यवस्था, विडंबना उनकी अपनी हो गई थी। दिनकर शंकर के तांडव नृत्य को प्रतीकात्मक रूप में रखकर समाज के जड़ तथा निष्प्राण नियमों को ध्वस्त करने की बात करते

हैं- 'गिरे दुर्ग जड़ता का ऐसा प्रलय बुला दो प्रलयंकर'। दिनकर काव्य का मूल उद्देश्य ही क्रांति का संगठन है। उन्होंने कविता को 'क्रांति धात्री' की संज्ञा देते हुए कहा था -

'क्रांतिधात्री कविते! जागो उठ
आडंबर में आग लगा दे
पतन, पाप, पाखंड जले
जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।'

दिनकर मनुष्य के पुरुषार्थ पर विश्वास करते हैं। उनकी दृष्टि में समाज की सबसे घातक रूढ़ि भाग्यवाद है। यह मानवता विरोधी है। भाग्यवाद पर विश्वास रखने के कारण ही भारत की दुर्दशा हो रही है। दिनकर का मानना है कि भाग्यवाद की यह अवधारणा कुछ लोगों द्वारा फैलाया गया वह प्रपंच है जिससे वे लोगों का शोषण करते हैं-

'भाग्यवाद आवरण पाप का
और शस्त्र शोषण का।
जिससे रखता दबा एक जन
भाग दूसरे जन का।'

बोध प्रश्न

- दिनकर के काव्य का मूल उद्देश्य क्या है?
- दिनकर के काव्य की कुछ विशेषताओं के बारे में बताइए।
- दिनकर की दृष्टि में सौंदर्य क्या है?

दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

दिनकर का काव्य-संसार मूल रूप से राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। वस्तुतः दिनकर का रचनाकाल भारतीय इतिहास का नवजागरण काल कहा जाता है। भारत में यूरोपियन समुदाय के आने तथा उनके नए ज्ञान-विज्ञान के सम्मिश्रण से कई प्राचीन रूढ़ियाँ ध्वस्त हो गईं। भारत की सभ्यता और संस्कृति ने जड़ता का आवरण उतारकर एक नए रचनात्मक स्वरूप को अपनाना करना शुरू किया। इस बदलाव का प्रभाव कवियों, कलाकारों एवं रचनाकारों पर भी पड़ा। दिनकर का राष्ट्रवाद विवेकानंद के राष्ट्रवाद के बहुत समीप था। विवेकानंद को लगा था कि भारत के लोग कमजोर और बीमार हैं, इन्हें आध्यात्मिक ज्ञान की अपेक्षा रोटी और शारीरिक स्वास्थ्य की आवश्यकता ज्यादा है। 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर ने विवेकानंद की यही भाषा बोलते नज़र आए हैं-

'सुकृत-भूमि वन ही न; महि यह
देखो बहुत बड़ी है
पग-पगपर साहाय्य-हेतु
दीनता विपिन्न खड़ी है।
इसे चाहिए अन्न, वसन, जल,
इसे चाहिए आशा,

इसे चाहिए सुदृढ़ चरण, भुज
इसे चाहिए भाषा।

दिनकर की राष्ट्रवादी दृष्टि उपनिवेशवाद से मुक्ति को ही अपना लक्ष्य समझती है। वस्तुतः दिनकर ने उपेनिवेशवाद और सामंतवाद के भयानक घृणित रूप को देखा था। उन्होंने देखा था कि दिन रात शारीरिक श्रम करने वाले मजदूर और किसान इतने मजबूर हैं कि वे न तो ठीक से अपना पेट भर पाते हैं और न ही तन ढक पाते हैं। 'रेणुका' में संकलित 'कविता की पुकार' में दिनकर ने इस गरीबी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है -

'अर्धनग्न दंपति के घर में मैं झौंके बन जाऊँगी।
लज्जित हो न अतिथि सम्मुख वे, दीपक तुरत बुझाऊँगी।'

कविता की इन पंक्तियों में भावुकता की चरम सीमा है। यदि कहें कि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना मानव-मुक्ति की मूल्यों से जुड़ी हुई है, तो गलत नहीं होगा।

बोध प्रश्न

- दिनकर राष्ट्रीय चेतना किन कविताओं में देखा जा सकता है?

दिनकर काव्य में काम और प्रेम

दिनकर की प्रतिभा बहुमुखी है। एक ओर वे उग्र राष्ट्रीय भावनाओं से भरी हुई कविताएँ लिखा करते थे, तो दूसरी ओर काम और प्रेम की कविताएँ। दिनकर की रचनाएँ मात्र सामाजिक क्रांति का सूत्र नहीं हैं, बल्कि वे मानसिक क्रांति का सूत्रपात भी करती हैं। रोमांटिक कविताएँ दो धरातल पर रची जाती हैं। पहली है - सामाजिक चेतना के आधार बिंदु पर लिखी जाने वाली दिव्य प्रेम को दर्शाने वाली कविताएँ और दूसरी वे कविताएँ, जो मानवीय सौंदर्य में प्रेम और जिज्ञासा की तलाश करती हैं। दिनकर पहली प्रकार की कविताओं के रचनाकार हैं। दिनकर के काव्य की स्त्री वासना और सौंदर्य की अनुगामिनी नहीं है, बल्कि वे मातृत्व को ही स्त्रीत्व का चरमोत्कर्ष मानती है। बीसवीं सदी के मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्राइड के अनुसंधानों से सभ्यता के इतिहास ने 'काम' को जिस नए रूप में देखा 'उर्वशी' उसीकी भावात्मक व्याख्या करती प्रतीत होती है। 'उर्वशी' की भूमिका में नर और नारी के संयुक्त व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए दिनकर लिखते हैं, 'नारी नर को छूकर तृप्त नहीं होती, न नर नारी के आलिंगन में संतोष मानता है। कोई शक्ति है जो नारी को नर और नर को नारी से अलग नहीं रहने देती, और जब वे मिल जाते हैं, तब भी उनके भीतर किसी ऐसी तृषा का संचार करती है, जिसकी तृप्ति शरीर के धरातल पर अनुपलब्ध है।' उन्होंने लिखा है -

'पहले प्रेम स्पर्श होता है, तदनंतर चिंतन भी।
प्रणय प्रथम मिट्टी कठोर है, तब वायव्य गगन भी।

वास्तव में दिनकर की सोच काम का विरोध है ही नहीं, बल्कि उनका मुख्य लक्ष्य सात्विक काम के मर्यादा की स्थापना करना रहा है। काम का विरोध वैसे संभव है भी नहीं, क्योंकि काम वास्तव में प्रकृति की मूल शक्ति है। प्रकृति स्वयं भी जन्मदात्री है। अतः वह काम के

मूल तत्व से संयुक्त होकर परमपुरुष को एकात्म करती है तथा सृष्टि को उत्पन्न करती है। 'उर्वशी' में दिनकर ने लिखा है कि, 'जिस प्रकार भोजन का असली स्वाद उपवास के बाद मिलता है, उसी प्रकार शारीरिक सुख का असली स्वाद भी उन्हीं को प्राप्त होता है, जो ब्रह्मचर्य से होकर काम तक जाते हैं।' काम पाप नहीं है, वह पूजा की तरह पवित्र है। संभोग का क्षण उतना ही पावन होता है उतना ही नूतन होता है, जितना एक कविता की रचना का क्षण एक जीवन के लिया होता है। मूलतः दिनकर काव्य का प्रेम-दर्शन काम को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करता है।

बोध प्रश्न

- प्रेम के संबंध में दिनकर की क्या मान्यता है?

5.3.4 दिनकर की काव्य-भाषा

छायावादोत्तर काल के रचनाकारों में संभवतः सबसे स्वच्छ तथा स्पष्ट भाषा दिनकर की रही। हालांकि कहीं-कहीं उनकी क्रांतिकारी भाषा शैली पर इकबाल और नजरुल का प्रभाव भी साफ तौर पर नजर आता है। प्रख्यात साहित्यकार कालरिज ने कहा था कि कविता सबसे ज्यादा आनंद तब देती है, जब हम उसे पूरी तरह न समझ कर मोटे तौर पर ही समझते हैं। कविता में अर्थ की कई परतें होती हैं। हर परत को पूरी तरह से समझने से ही आनंद बढ़ता है। कभी-कभी अर्थ को समझने में हम असमर्थ होते हैं। इससे कविता का आकर्षण और बढ़ जाता है। कविता साहित्य की निचोड़ है और उसे थोड़ा अस्पष्ट रहने में अधिक महिमा प्राप्त होती है। कालरिज द्वारा निर्धारित कविता के सभी गुण 'उर्वशी' में प्राप्त होते हैं -

'बालकों-सा मैं तुम्हारे वक्ष में मुँह को छिपाकर,
नींद की निस्तब्धता में डूब जाता हूँ।'

कवि यहाँ अपने भावों में यह व्यक्त करता है कि जब स्त्री-पुरुष आत्मा के ताल पर मिलते हैं, तो वे एक पल अथवा एक क्षण के लिए नहीं बल्कि अनंत जन्मों के लिए एक हो जाते हैं।

बोध प्रश्न

- दिनकर की काव्य-भाषा की विशेषता क्या है?

5.4 पाठ सार

राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर का जन्म 23 सितंबर, 1908 को बिहार के एक साधारण किसान परिवार में हुआ। शैशव अवस्था में ही पिता की मृत्यु होने के बाद माँ ने अपनी कर्म शक्ति और इच्छा शक्ति द्वारा उनका पालन-पोषण किया तथा उन्हें उच्च शिक्षा दिलवाई। शिक्षा प्राप्त कर दिनकर जी ने बिहार सरकार में विभिन्न पदों पर नौकरी की, जहाँ उन्हें अपने विद्रोही व्यक्तित्व के कारण समस्याएँ भी झेलनी पड़ी। वे न तो किसी की अनुचित बात को सहन करते थे और न किसी की चमचागीरी करना पसंद था। सच तो यह है कि उनका पूरा व्यक्तित्व

निराला की भाँति पौरुष और ओजस्विता से भरा हुआ था। उनके साहित्य में भी उनका यह तेजोदीप्त ओजस्वी व्यक्तित्व दिखाई देता है। 'कुरुक्षेत्र' और 'रश्मिरथी' जैसे ओजपूर्ण तथा 'उर्वशी' जैसे शृंगारिक काव्यों की रचना करने वाले महाकवि दिनकर के जीवन का सूर्यास्त 24 अप्रैल, 1974 को उस समय हुआ जब वे तिरुपति की यात्रा पर थे।

5.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. दिनकर का बचपन और यौवन अत्यंत संघर्षपूर्ण था।
2. केवल 12 वर्ष की आयु में महात्मा गांधी के प्रथम दर्शन और उनकी बातों ने दिनकर के मन में राष्ट्रीय चेतन के बीज बो दिया था।
3. दिनकर एक ओर तो राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्यधारा के प्रमुख कवियों में शामिल हैं तथा दूसरी ओर उन्हें प्रगतिवाद के भी प्रमुख रचनाकारों में गिना जाता है।
4. दिनकर की काव्य प्रतिभा बहुआयामी थी।
5. उन्होंने जहाँ एक ओर देश की स्वातंत्र्य चेतन को प्रेरित और मुखरित किया वहीं दूसरी ओर कामाध्यात्म का दर्शन प्रस्तुत करके स्त्री-पुरुष संबंध के शाश्वत प्रश्नों पर चिंतन भी किया।

5.6 शब्द संपदा

1. इच्छाशक्ति = सोच-समझकर निर्णय लेने की क्षमता
2. उपनिवेश = जीविका के लिए एक स्थान से हटकर कहीं दूर जाना
3. उपनिवेशवाद = उपनिवेश बनाने और उन्हें अपने अधीन रखने की नीति
4. एकात्म = अभिन्न, एक प्राण, एक हो जाना
5. कुशाग्र = अति तीक्ष्ण, जिसकी बुद्धि बहुत तेज हो
6. तृषा = प्यास, तृष्णा
7. सामंतवाद = वह शासन जिसके अंतर्गत जमींदारों को कृषि भूमि एवं किसानों से संबंधित अधिकार प्राप्त होते थे।

5.7 परीक्षार्थ

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के काव्य दर्शन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

3. दिनकर की काव्य यात्रा को उनके समय के देशकाल ने कैसे प्रभावित किया? स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. दिनकर के जन्म एवं पारिवारिक दशा पर प्रकाश डालिए।
2. दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेम के संबंध में दिनकर की मान्यताओं पर विचार कीजिए।
4. दिनकर की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए –

1. रामधारी सिंह ने 'दिनकर' उपनाम किस आधार पर चुना था?

A. यह उनके पहले काव्य संग्रह 'रेणुका' के प्रकाशक का सुझाव था।

B. यह नाम उन्हें महात्मा गांधी ने उनके ओजस्वी लेखन के कारण दिया था।

C. उनके पिता का नाम 'रवि सिंह' था और दिनकर का अर्थ भी सूर्य होता है।

D. उनके गाँव 'सिमरिया' का प्राचीन नाम दिनकरपुर था।

2. दिनकर जी ने अपनी उच्च शिक्षा (B.A. Honors) किस विषय में पूरी की थी?

A. राजनीति विज्ञान B. दर्शनशास्त्र C. हिंदी **D. इतिहास**

3. मैट्रिक की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर दिनकर को बिहार सरकार द्वारा कौन-सा पदक दिया गया था?

A. पद्मभूषण B. ज्ञानपीठ पदक **C. भूदेव पदक** D. विद्यावाचस्पति

4. दिनकर ने सरकारी नौकरी छोड़ने का विचार मन में आने के बावजूद इसे तुरंत क्यों नहीं छोड़ा?

A. **पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और जयप्रकाश नारायण का प्रोत्साहन कि इस्तीफा देने से अच्छा बर्खास्त होना है।**

B. वे युद्धप्रचार- विभाग में काम करके खुश थे।

C. उन्हें नौकरी में बहुत अधिक वेतन और पदोन्नति मिल रही थी।

D. वे अंग्रेज सरकार के प्रति वफादार रहना चाहते थे।

5. दिनकर के काव्य में 'भाग्यवाद' को किस रूप में चित्रित किया गया है?

A. प्राचीन भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी उपलब्धि।

B. शोषण का शस्त्र और पाप का आवरण।

C. जीवन की सफलता का एकमात्र आधार। D. मानवता की सेवा का एक धार्मिक मार्ग।

6. दिनकर की कौन-सी कृति 'कामाध्यात्म' (Kama and Spirituality) के दर्शन को प्रस्तुत करती है?

A. कुरुक्षेत्र **B. उर्वशी** C. हुंकार D. परशुराम की प्रतीक्षा

7. 1954 की कविता 'भारत का यह रेशमी नगर' में दिनकर ने किसका विरोधाभास चित्रित किया है?

A. प्राचीन सभ्यता और आधुनिक विज्ञान।

B. दिल्ली का वैभवपूर्ण जीवन और ग्रामीण भारत की गरीबी।

C. पुरुषों का अहंकार और स्त्रियों की कोमलता।

D. स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता पश्चात का भारत।

8. भगवतीचरण वर्मा ने दिनकर के व्यक्तित्व की तुलना किस अन्य महान कवि से करते हुए 'पौरुष' की याद आने की बात कही है?

A. महादेवी वर्मा B. सुमित्रानंदन पंत **C. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'** D. मैथिलीशरण गुप्त

9. दिनकर ने अंततः सरकारी सेवा से त्यागपत्र क्यों दे दिया?

A. वे पत्रकारिता में अपना करियर बनाना चाहते थे।

B. माखनलाल चतुर्वेदी की आलोचनात्मक टिप्पणी से आहत होकर।

C. उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिल गया था।

D. वे राज्यसभा के सदस्य चुन लिए गए थे।

10. दिनकर के काव्य दर्शन के अनुसार 'सौंदर्य' की परिभाषा क्या है?

A. केवल राजमहलों की भव्यता और वैभव। B. स्वर्ग की अप्सराओं का अलौकिक रूप।

C. केवल प्रेयसी की शारीरिक सुंदरता और कोमलता।

D. माटी की सुगंध, प्रकृति और संघर्षशील परिस्थितियों का यथार्थ।

5.8 पठनीय पुस्तकें

1. रामधारी सिंह 'दिनकर' : पंडित शशिमोहन बहल, विनय श्रीवास्तव

इकाई 6 :रश्मिरथी

रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 मूल पाठ : रश्मिरथी
6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
6.3.2 अध्येय कविता
6.3.3 विस्तृत व्याख्या
6.4 पाठ सार
6.5 पाठ की उपलब्धियाँ
6.6 शब्द संपदा
6.7 परीक्षार्थ प्रश्न
6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो आप जाना ही चुके हैं कि !दिनकर की प्रतिभा बहुमुखी थे। वे न केवल अपने युग के प्रतिनिधि कवि थे बल्कि उन्हें 'राष्ट्रकवि' बनने का भी गौरव प्राप्त हुआ और उनके जैसा पाकर भारत तथा 'राष्ट्रकवि'हिंदी साहित्य दोनों आज भी गौरवान्वित अनुभव करता है। किसी भी देश का बनने के लिए किसी भी साहित्यकार में कौन से 'राष्ट्रकवि' गुण होने चाहिएगेटे ने ? ' ,इस विषय में कहा हैराष्ट्रकवि उसे कहना चाहिए जिसे अपने देशवासियों के भीतर निहित शक्ति का ज्ञान हो और जो उन शक्तियों को सचेतन करने की दिशा में लगातार प्रयासरत रहता हो।' राष्ट्रकवि में कल्पना के साथ कर्मठता को भी प्रेरित करने की क्षमता होनी चाहिए। राष्ट्रकवि केवल अतीत की आराधना नहीं करते वरन् अपने व्यक्तित्व के बल पर भविष्य को भी प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

दिनकर ने पराधीन भारत को जितने पास से देखा था, उतने ही पास से दिल्ली जाने के बाद स्वाधीन भारत की छवि को भी देखा और समझा। स्वाधीनता के बाद जब दिनकर दिल्ली आए तब उनके लेखन में न केवल परिवर्तन आया बल्कि उनकी लेखन शैली प्रौढ़ भी बन गई। इस समय उन्होंने उर्वशीरेणुका आदि अनेक रचनाओं को रचा जो न केवल उनके ,कुरुक्षेत्र , जीवन की महत्वपूर्ण रचनाएँ रहीं बल्कि हिंदी साहित्य को भी दिशा दिखाने वाली सिद्ध हुईं। 'रश्मिरथी' एक ऐसी ही रचना है। 'रश्मि' ।'रथ' का अर्थ है 'रथी' और 'प्रकाश' का अर्थ है 'रश्मि' ' का एक और अर्थ हो सकता हैपुण्य'। यहाँ 'रथ' के 'प्रकाश' अथवा 'पुण्य' का अर्थ है 'रश्मिरथी' कोखींचने वाला पुण्यात्मा अर्थात रश्' । कर्ण'कर्ण'मिरथीखंडकाव्य का नायक है। कवि ने इस '

सामाजिक ,भक्ति और समाज ,वर्ण और समाज ,शिक्षा और समाज नायक के जीवन के द्वारा पुरुषार्थ और समाज आदि के परस्पर संबंध और ,नियम और समाजद्वंद्व को दर्शाया है। इस इकाई में आप दिनकर की 'रश्मिरथी 'महाकाव्य के प्रथम सर्ग का अध्ययन करेंगे।

6.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- 'रश्मिरथी 'कविता का सामान्य परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- 'रश्मिरथी 'कविता की व्याख्या कर सकेंगे।
- 'रश्मिरथी 'के काव्यगत सौंदर्य को जान सकेंगे।
- कर्ण के चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।

6.3 मूल पाठ :रश्मिरथी

6.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

'रश्मिरथी' दिनकर के द्वारा रचित महाकाव्य है जिसे उन्होंने साथ सर्गों में विभाजित किया है। देखा जाए तो 'रश्मिरथी' का मूल विषय महाभारत की ही कहानी है, लेकिन इसमें और 'महाभारत' की विषय वस्तु में काफी अंतर है। 'रश्मिरथी' काव्य का नायक कर्ण है जबकि महाभारत के नायक श्रीकृष्ण थे। 'महाभारत' जहाँ धर्म की रक्षा की बात करता है, वहीं 'रश्मिरथी' काव्य इस संदेश को प्रतिस्थापित करता है कि परिवार, समाज, देश, विश्व कहीं भी धर्म की स्थापना तभी संभव है, जब यहाँ रहने वाले प्रत्येक मानव को मानवोचित अधिकार मिलेगा। मानव को पहचान उसके पौरुष, ज्ञान, सद्गुण आदि के कारण मिलना चाहिए न कि उसके जाति, कुल, गोत्र आदि के कारण।

दिनकर द्वारा रचित 'रश्मिरथी' खंडकाव्य में 7 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग राजकुमारों के लिए आयोजित रणक्षेत्र से प्रारंभ होता है। जहाँ शिक्षा समाप्त होने के बाद सभी राजकुमार अपने-अपने रणकौशल दिखाने के लिए एकत्रित हुए हैं। यहीं कर्ण का भी आगमन होता है। वह अर्जुन को ललकारता है, लेकिन कृपाचार्य कर्ण से उसकी जाति पूछकर उसे हतोत्साहित करते हैं। सप्तम सर्ग में खंडकाव्य का अंत युधिष्ठिर और कृष्ण के संवाद से होता है। युधिष्ठिर कर्ण की मृत्यु पर हर्ष प्रकट करते हैं किंतु भगवान उदास हो जाते हैं। उनका कहना है कि 'यह विजय चरित्र खोकर हुई है। जीत असल में कर्ण की हुई थी। यह भूल जाइए कि कर्ण हमारा शत्रु था। वह द्रोण और भीष्म समान आदर का पात्र हैं।' छात्रो! प्रस्तुत इकाई में आप 'रश्मिरथी' खंडकाव्य के प्रथम सर्ग की बीस पंक्तियों का अध्ययन करेंगे। चलिए, आगे बढ़ते हैं और 'रश्मिरथी' के प्रथम सर्ग का अध्ययन, विश्लेषण प्रारंभ करते हैं।

6.3.2 अध्येय कविता

'जय हो' जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।
किसी वृन्त पर खिले विपिन में, पर, नमस्य है फूल,
सुधी खोजते नहीं, गुणों का आदि, शक्ति का मूल।
ऊंच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,
दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।
क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,
सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें ताप-त्याग।
तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते है जग में प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते हैं इतिहासों में लीक।
जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत-वंश में पला, चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।
तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,
जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।
ज्ञान-ध्यान, शस्त्रास्त्र, शास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,
अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकास।

निर्देश :1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

63..3 विस्तृत व्याख्या

'जय हो' जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को,
जिस नर में भी बसे, हमारा नमन तेज को, बल को।

किसी वृन्त पर भी खिले विपिन में, पर, नमस्य है फूल,

सुधी खोजते नहीं गुणों का आदि, शक्ति का मूल।

शब्दार्थ : जग = संसार। नमन = प्रणाम। पुनीत = पवित्र। अनल = आग। नर = मनुष्य। वृन्त = जन्म संबंध। विपिन = जंगल। सुधी = पता।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियों में 'दिनकर' ने संसार किस गुण के सामने नतमस्तक होता है। सृष्टि के मूल में कौन सा गुण विद्यमान है? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर दिया है।

व्याख्या : यह तो सबको ज्ञात है कि मानव का अस्तित्व भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश से मिलकर ही बना है। अग्नि को इन सबमें पवित्र माना जाता है क्योंकि उसमें तेज, पवित्रता, निर्भयता, ज्योतिकामना आदि गुण हैं। 'दिनकर' कहते हैं विश्व संसार में जहाँ जले पवित्र अग्नि उसे नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं। यह अग्नि केवल प्रकाश का ही प्रतीक नहीं है, बल्कि यह पौरुष का भी प्रतीक है। जिस नर में भी यह अग्नि पौरुष के बल के रूप में जल रहा है उस नर और उसके पौरुष को प्रणाम। जंगल में विभिन्न प्रकार के पेड़, पौधे, फलों, फूलों का आपसी संबंध इस कारण से अटूट बना रहता है क्योंकि उन सबके जन्म का कारण जंगल ही है, जिसने सबको बाँध के रखा है। हर उस फूल को प्रणाम जो जंगल के वक्ष में अपना अस्तित्व अपने पौरुष के द्वारा स्थापित करता है। अगर पौरुष का बल नर में होता है तो गुणों को खोजने की आवश्यकता नहीं पढ़ती, उनका विकास अपने आप होता ही है। तो तय यही है कि पौरुष की अग्नि सृष्टि के सभी प्राणियों को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विशेषता : 1. पौरुष की तुलना 'अग्नि' के साथ की गई है।

2 सृष्टि के मूल में 'पौरुष की अग्नि' का महत्वपूर्ण स्थान है।

बोध प्रश्न

- कवि ने किसे नमन किया है?
- नर में बसे किन गुणों को कवि ने नमन किया है?
- 'पुनीत' शब्द का अर्थ क्या है?
- जंगल में खिले सभी फूलों का जंगल के साथ कैसा संबंध है?

ऊँच-नीच का भेद न माने, वही श्रेष्ठ ज्ञानी है,

दया-धर्म जिसमें हो, सबसे वही पूज्य प्राणी है।

क्षत्रिय वही, भरी हो जिसमें निर्भयता की आग,

सबसे श्रेष्ठ वही ब्राह्मण है, हो जिसमें तप-त्याग।

शब्दार्थ : भेद = तुलना। श्रेष्ठ = महान। क्षत्रिय = योद्धा। निर्भयता = वीरता। तप = तपस्या।
संदर्भ :ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य काव्य से उद्धृत हैं। 'रश्मिरथी'
प्रसंग: ज्ञानी, क्षत्रिय, ब्राह्मण में किन गुणों का रहना आवश्यक है और प्राणी पूज्य कैसे बनता है? प्रस्तुत पंक्तियों का मूल विषय यही है।
व्याख्या : केवल मनुष्य शरीर धारण कर लेने से ही सद्गुणों का विकास नहीं होता है। मानवता को विकसित करने का प्रयास मनुष्य को सतत करते रहना होता है। ज्ञानी का धर्म है अपने ज्ञान से दूसरों को उपकृत करना। ज्ञानी अगर ऊँच-नीच का भेद करने लगेगा तो फिर उसे ज्ञानी कहलाने का कोई अधिकार नहीं रह जाता है। ठीक वैसे ही वही प्राणी पूज्य बन सकता है जिसमें दया, क्षमा, धर्मपालन की भावना रहती है। निर्भयता की आग जिस प्राणी में जलता है, वही क्षत्रिय कहलाने का अधिकारी बन पाता है। ब्राह्मण केवल एक वर्ण नहीं, यह पहचान है तप, त्याग, धैर्य आदि का। अर्थात, ब्राह्मणत्व को सही अर्थों में वही परिभाषित कर पाता है जिसने अपने हृदय को तप, त्याग आदि के द्वारा शुद्ध कर लिया हो। यह काम इतना आसान नहीं है, लेकिन निरंतर अभ्यास के द्वारा इस काम में सफलता प्राप्त की जा सकती है। जैसा कि कर्ण ने सफलता प्राप्त की। समाज ने पग-पग पर उसे लांछित करने का प्रयास किया। उसके मनोबल को समाप्त करने का प्रयास किया, लेकिन वह अपने लक्ष्य की तरफ आगे बढ़ता ही गया।
विशेषता: प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा यह सिद्ध हो गया है कि ऊँच-नीच का भेद न मानने वाला ज्ञानी, दया-धर्म को अपनाने वाला पूज्य प्राणी, निर्भय व्यक्ति क्षत्रिय और तप-त्याग को स्वीकार कर पाने वाला ही ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी बन पाता है।
बोध प्रश्न

- ज्ञानी में क्या गुण होना चाहिए?
- पूज्य प्राणी कौन कहला सकता है?
- निर्भयता की आग किसमें रहती है?
- तपत्याग करने- वाला क्या कहलाता है ?

तेजस्वी सम्मान खोजते नहीं गोत्र बतला के,
पाते हैं जग से प्रशस्ति अपना करतब दिखला के।
हीन मूल की ओर देख जग गलत कहे या ठीक,
वीर खींच कर ही रहते है इतिहासों में लीक।

शब्दार्थ: तेजस्वी = तेज युक्त। सम्मान = श्रद्धा। गोत्र = वंश संबंधित। प्रशस्ति = प्रशंसा। करतब =कारनामा। हीन = रिक्त। मूल = बुनियादी। लीक = रेखा।
संदर्भ :ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य काव्य से उद्धृत हैं। 'रश्मिरथी'
प्रसंग: वीर पुरुष की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रस्तुत पंक्ति के द्वारा प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : वैसे तो संसार व्यक्ति के कुल, गोत्र आदि के द्वारा उसकी पहचान को खोजता है लेकिन तेजस्वी व्यक्ति इन सब से दूर अपनी पहचान अपनी क्षमता के द्वारा बनाता है। वे अपने कर्म के द्वारा संसार में अपनी अलग पहचान बनाते हैं। कौशल का संबंध जन्म से नहीं वरन् कर्म के साथ होता है। वीर अपनी तलवार की नोक की तीक्ष्णता के द्वारा इतिहास के पन्नों को बदल देता है। संसार उसे देखकर क्या कह रहा है, यह सोचने के बजाय वह अपने कौशल को विकसित करने में अपना ध्यान केंद्रित करता है। तभी तो वह दिन भी आता है जब संसार वीर की वीरता के सामने नतमस्तक होता है। उसका जन्म किस कुल, गोत्र में हुआ है यह गौण बन जाता है। कहने का अर्थ यही है कि कर्म से बढ़कर कुछ नहीं है। जो मनुष्य अपने कर्म क्षमता को पहचान लेता है वह समय की धारा से विपरीत जाकर संसार को अपने सामने नतमस्तक होने को विवश कर देता है।

विशेषता: वीर अपनी वीरता के द्वारा अपना इतिहास स्वयं लिखता है। वीर अपने कुल, गोत्र को खोजता नहीं फिरता, वह अपने कर्म के द्वारा अपनी पहचान बनाता है। वह संसार की सोच को बदलने में सक्षम होता है।

बोध प्रश्न

- तेजस्वी क्या नहीं खोजता?
- वीर किसे बदल देता है?
- वीर अपनी पहचान कैसे बनाता है?
- राष्ट्र प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान की चरम अभिव्यक्ति दिनकर की किस कविता में हुई है?

जिसके पिता सूर्य थे, माता कुंती सती कुमारी,
उसका पलना हुआ धार पर बहती हुई पिटारी।
सूत-वंश में पला चखा भी नहीं जननि का क्षीर,
निकला कर्ण सभी युवकों में तब भी अद्‌भुत वीर।

शब्दार्थ : धार =धारा। सूत = शूद्र। जननि = माँ। पिटारी = बक्सा। क्षीर = दूध।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्‌धृत हैं।

प्रसंग: प्रस्तुत पंक्ति का संबंध कर्ण के बचपन के साथ है।

व्याख्या : कर्ण कोई साधारण पुरुष नहीं था। वह वीर योद्धा तो था ही, साथ ही वह सती कुमारी कुंती और सूर्य देव का पुत्र भी था। पर, भाग्य का खेल इसी को कहते हैं। उसका पालन-पोषण शूद्र के घर में हुआ। उसे माँ का दूध तो नसीब हुआ ही नहीं, माँ का भी दुर्भाग्य कि अपने पुत्र को अपने गोद में खिलाने के स्थान पर नदी के धार पर बहती हुई पिटारी को उसका पालना बना देना पड़ा। इतना सब कुछ होने के बाद भी वीर की वीरता छिपी न रह सकी। युद्धाभ्यास के दौरान संसार को पता चल ही गया कि कर्ण की क्षमता किसी राजपुत्र से कम नहीं है। उसे माता-पिता, कुल-गोत्र के पहचान की भी आवश्यकता नहीं है। वह अपनी पहचान स्वयं बनाने

में समर्थ है। कहने का अर्थ यह है कि व्यक्ति को केवल अपने कुल-गोत्र के कारण जो पहचान और सम्मान मिलती है वह तो क्षणिक का होता है लेकिन अपनी कर्मशक्ति के द्वारा जो व्यक्ति अपनी पहचान बनाता है वह सदैव के लिए अमर बन जाता है।

विशेषता: कर्ण के जीवन के महत्वपूर्ण पहलू की जानकारी प्राप्त हुई है।

बोध प्रश्न

- कर्ण के पिता कौन थे?
- कर्ण का पालना क्या बना?
- किस वंश में कर्ण का पालन?पोषण हुआ-
- संसार को क्या पता चला?

तन से समरशूर, मन से भावुक, स्वभाव से दानी,

जाति-गोत्र का नहीं, शील का, पौरुष का अभिमानी।

ज्ञान-ध्यान, शस्त्रार्थ, शास्त्र का कर सम्यक अभ्यास,

अपने गुण का किया कर्ण ने आप स्वयं सुविकस।

शब्दार्थ: तन = शरीर। दानी = दान करने वाला। सम्यक = संपूर्ण। सुविकास = अच्छे से विकसित करना। स्वयं = खुद।

संदर्भ : ये पंक्तियाँ दिनकर द्वारा रचित काव्य 'रश्मिरथी' काव्य से उद्धृत हैं।

प्रसंग : कर्ण के चारित्रिक विशेषता पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : कर्ण ने अपने संपूर्ण चरित्र का विकास जिस प्रकार से अपनी मेहनत और लगन के द्वारा किया था वह सबके लिए करना संभव नहीं हो पाता है। वह बाहुबल के ज़ोर से वीरों का भी वीर राज्य था, मन फिर उसका बहुत कोमल था। उसे तिरस्कार का कष्ट पता था, तभी तो वह हृदय खोलकर दान करता था। जाति-गोत्र के खोज की उसको भूख नहीं थी, परंतु वह अपने पौरुष पर गर्व रखने वाला व्यक्ति था। ज्ञान-ध्यान, तप-शील का अभ्यास उसने किया था। कर्ण ने समाज के लांछनों को महत्व न देकर अपने चारित्रिक विकास को ही अपना लक्ष्य बना लिया था और इस लक्ष्य में उसे सफलता भी प्राप्त हुई। कहने का अर्थ यह है कि परिश्रम, लगन, स्वाभिमान के बिना मनुष्य के जीवन का कोई अर्थ ही नहीं है। कुल-गोत्र आदि तो समाज की संकीर्ण मानसिकता को दर्शाते हैं जो अपने को इस संकीर्णता से बाहर निकाल पाता है, वही 'रश्मि' के 'रथ' का सारथी बन पाता है।

विशेषता: कर्ण ने स्वयं को सामाजिक संकीर्णता से दूर रखकर कैसे अपने चरित्र का विकास किया इसका सुंदर विश्लेषण कवि ने किया है।

बोध प्रश्न

- कर्ण का मन कैसा था?
- कर्ण ने स्वयं को किससे दूर रखा?
- कर्ण को किसका अभिमान था?

• कर्ण स्वभाव से क्या था?

समीक्षात्मक टिप्पणी

रामधारी सिंह दिनकर का काल स्वतंत्रता संग्राम से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ समय बाद तक का है। इन दिनों देश की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के नवनिर्माण की रूपरेखा आटो बन गई लेकिन गरीब जनता की स्थिति बदतर होती जा - रही थी। भारतीय पुनर्जागरण के क्षेत्र में दिनकर का महत्वपूर्ण स्थान था। दिनकर के काव्यों में राष्ट्रीयता कूटरचना का प्रारंभ किया तब देश अंग्रेजों कूटकर भरी हुई है। दिनकर ने जब काव्य- के अधीन था। जनता को जगाना तथा उन्हें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करना उस समय के कवियों का प्रमुख उद्देश्य था। दिनकर भी इससे अछूते नहीं रहे।

दिनकर मनुष्यों के बीच भेदभाव को नहीं स्वीकारते। उनकी दृष्टि में सभी समान हैं। उनका कहना है कि वे यह मानते थे कि जब जनता 'यह भूमि किसी की नहीं क्रीट है दासी।' एकजुट होकर शोषण के खिलाफ उठ खड़ी होगी तो कोई टिक नहीं सकते। अनीति के विरुद्ध क्रांति का बिगुल बजाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने के माध्यम से में कर्ण के चरित्र 'रश्मिरथी' यह निरूपित किया है कि व्यक्ति के चरित्र से जाति का कोई संबंध नहीं होता। लेकिन देश में जाति व्यवस्था लोगों के नसमें 'रश्मिरथी' नस में समाई हुई है। कर्ण के चरित्र पर आधारित- दिनकर ने जाति व्यवस्था पर प्रहार किया है। कर्ण उन तमाम व्यक्तियों का प्रतीक है जो अमानवीय जाति व्यवस्था आका शिकार हैं। कहने का अर्थ है कि वह तमाम उपेक्षित वर्गों का का 'रश्मिरथी' प्रतीक है। कर्ण कहता है -

मैं उनका आदर्श, कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे
पूछेगा जग, किंतु, पिता का नाम न बोल सकेंगे;
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं न अपना होगा,
मन में लिए उमंग जिन्हें चिर-काल कल्पना होगा।

की भूमिका में स्वयं दिनकर ने इस बात 'रश्मिरथी'की पुष्टि की कि -

"कर्ण- चरित्र के उद्धार की चिंता इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज में मानवीय गुणों की पहचान बढ़ने वाली है। कुल और जाति का अहंकार विदा हो रहा है। आगे, मनुष्य केवल उसी पद का अधिकारी होगा जो उसके अपने सामर्थ्य से सूचित होता है, उस पद का नहीं, जो उसके माता-पिता या वंश की देन है। इसी प्रकार, व्यक्ति अपने निजी गुणों के कारण जिस पद का अधिकारी है, वह उसे मिलकर रहेगा, यहाँ तक कि उसके माता-पिता के दोष भी इसमें कोई बाधा नहीं डाल सकेंगे। कर्ण-चरित का उद्धार एक तरह से, नई मानवता की स्थापना का यही प्रयास है और मुझे संतोष है कि इस प्रयास में मैं अकेला नहीं, अपने अनेक सुयोग्य सहधर्मियों के साथ हूँ।"

बोध प्रश्न

- लोगों के नस ?है नस में क्या समाई हुई-
- कर्ण किसके प्रतिनिधि हैं?
- कर्ण के चरित्र से दिनकर ने क्या निरूपित किया?
- दिनकर के काव्य में किस प्रवृत्ति को प्रमुख रूप से देखा अजय सकता है ?

6.4 पाठ सार

दिनकर को राष्ट्रकवि का सम्मान प्राप्त है। उनका प्रसिद्ध काव्य 'रश्मिरथी' महाभारत के महारथी, योद्धा कर्ण के जीवन और आत्मसंघर्ष पर आधारित है। रश्मिरथी का अर्थ है किरणों के रथ का सवार अर्थात सूर्य, जो यहाँ सूर्यपुत्र कर्ण का प्रतीक है। किरणों का यह रथ कर्ण के कालजयी उज्ज्वल यश का भी सूचक है। इस खंड काव्य का प्रकाशन 1952 में हुआ था। इसमें 7 सर्ग हैं। इसमें कर्ण के चरित्र के सभी पक्षों का सजीव चित्रण किया गया है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने कर्ण को महाभारतीय कथानक से ऊपर उठाकर, नैतिकता और विश्वसनीयता की नई भूमि को खड़ा कर उसे गौरव से विभूषित कर दिया है। 'रश्मिरथी' में दिनकर ने सारे सामाजिक और पारिवारिक संबंधों को नए सिरे से जाँचा है। चाहे गुरु-शिष्य संबंधों के बहाने हो, चाहे अविवाहित मातृत्व और विवाहित मातृत्व हो, चाहे धर्म के बहाने हो, चाहे छल-प्रपंच के बहाने हो। 'रश्मिरथी' यह भी संदेश देता है कि जन्म-अवैधता से कर्म की वैधता नहीं होती।

समाज में संस्थागत हो चुके अन्याय के प्रति आक्रोश की अभिव्यक्ति के लिए दिनकर को ऐसे नायक की तलाश थी जो उदात्त चरित्र-संपन्न होने के अतिरिक्त अनिवार्यतः पराक्रमी हो। 'रश्मिरथी' में कर्ण को नायक बनाकर दिनकर ने अपने इसी लक्ष्य को पूरा किया है। महाभारत के कर्ण में उन्हें मानस परिकल्पित नायक का समरूप मिल गया।

ओजस्वी कविता की रचना में रमने वाले दिनकर का मन तेजस्वी कर्ण के व्यक्तित्व से सहज ही अभिभूत हो गया। युयुत्सा और संघर्ष कर्ण के व्यक्तित्व के अभिन्न अंग थे। कर्ण का दलित आत्मगौरव युवावस्था में अर्जुन को चुनौती देने के बहाने पूरी व्यवस्था के जड़ प्रतिमानों को चुनौती देता है-

'तूने जो-जो किया, उसे मैं भी दिखला सकता हूँ।
चाहे तो कुछ नई कलाएँ भी सिखला सकता हूँ'।

'रश्मिरथी' एक ऐसी रचना है जिसके पौरुष के पुनीत अनल में जातिवाद, संप्रदायवाद जलकर खाक हो जाते हैं। यह काव्य दैववाद के खंडन की जगह मानवतावाद की स्थापना का पुण्य प्रयास है। इसमें नियतिवाद का विरोध और कर्मवाद का जयघोष है। मानव चाहे तो अपनी कर्मशक्ति के द्वारा पृथ्वी पर स्वर्ग उतार सकता है। मानवशक्ति का निवासस्थान वंश, कुल नहीं अपितु वीर पुरुषों का वक्षस्थल है। इस काव्य में उन्होनें संदेश दिया है कि 'चाहे धर्म धोखा दे या पुण्य ज्वाला बन जाए, लेकिन मनुष्य तब भी न कभी सुपथ से टल सकता है। विजय मानव का

लक्ष्य है लेकिन विजय तिलक लिए कुपथ पर चलना पाप है'। 'रश्मिरथी' में भाग्यवाद की जगह कर्मवाद का शंखनाद है। देवराज इंद्र को चुनौती देते हुए कर्ण ने कहा-

'विधि ने क्या लिखा भाग्य में यह खूब जानता हूँ मैं,
बाहों को कहीं भाग्य से बलि मानता हूँ मैं,
महाराज, उद्यम से विधि का अंक उलट जाता है,
किस्मत का पासा पौरुष से हार पलट जाता है'।

'रश्मिरथी' समता और मानवता के धरातल पर खड़ा महाकवि दिनकर का युगधर्मी शंखनाद है जिसकी गूंज से विषमताओं और रूढ़ियों की बेड़ियाँ खुल जाती है और वसुंधरा पर कर्ण के सपनों के अनुसार एक नए समाज के सूर्योदय की संभावना बढ़ जाती है। आपने प्रस्तुत खंडकाव्य को पढ़ते समय पाया कि दिनकर ने कर्ण के जन्म की कथा पर तो प्रकाश डाला ही है, साथ ही इस विषय पर भी प्रकाश डाला है कि सृष्टि के मूल में है तेजोबल। जिस व्यक्ति को अपने तेजोबल का ज्ञान प्राप्त हो जाता है फिर वह संसार के संकीर्ण मानसिकता के जाल में नहीं फँसता वह अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करता है। कर्ण जो कि वीरों का वीर था, स्वभाव से दानी था। उसे अपने जन्म परिचय से कोई मतलब नहीं था। उसे अपने पौरुष का अभिमान था। अपने परिश्रम के द्वारा उसने अपने चरित्र का निर्माण किया था। कर्ण की छवि आज भी भारतीय जनमानस में एक ऐसे महायोद्धा की है जो प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ता है। उसे जीवन में वह सब नहीं मिला जिसे पाने का वह अधिकारी था। उसे उसका अधिकार नहीं मिल सका क्योंकि समाज अपने नियमों को बदलने को तैयार नहीं था। कर्ण के बहाने दिनकर ने समाज को यही संदेश दिया है कि समाज को यह ध्यान में रखना चाहिए कि उसके नियमों के कारण कोई अपने अधिकार से वंचित न रह जाए। लेकिन कर्ण ने वह सब प्राप्त किया जो एक योद्धा को मिलना चाहिए। ज्ञानी की पहचान उसके सहिष्णुता, पूज्य प्राणी की पहचान उसके दया-धर्म, क्षत्रिय की पहचान उसकी निर्भयता और ब्राह्मण की पहचान उसकी तप-त्याग से ही बनती है। 'रश्मिरथी' के नायक कर्ण का जीवन इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. महाभारत के महायोद्धा कर्ण का उज्ज्वल यश कालजयी है।
2. कर्ण को दिनकर ने ऐसे काव्य नायक के रूप में चित्रित किया है जो तेज और बल के पुनीत अनल से प्रज्वलित है।
3. कर्ण भारतीय वर्ण व्यवस्था के रूढ़ हो जाने से उत्पन्न विसंगतियों को ढोने वाले के एक निष्कलुष व्यक्ति के रूप में भी दिखाई देते हैं।

4. कर्ण का जीवन जाति और कर्म के संघर्ष में कर्म की विजय का प्रतीक है, लेकिन तत्कालीन सामाजिक रूढ़ियों ने उन्हें वैध अधिकारों से वंचित कर दिया।
5. कर्ण का व्यक्तित्व जाति और गोत्र से नहीं अपने शील और पौरुष से निर्मित व्यक्तित्व है।

6.6 शब्द संपदा

1. अभिभूत	=	आकर्षित
2. आक्रोश	=	क्रोध
3. उद्यम	=	कठिन परिश्रम
4. गौरव	=	सम्मान
5. प्रतिकूल	=	विपरीत परिस्थिति
6. युगधर्मी	=	समय के अनुसार
7. युयुत्सा	=	युद्ध की प्रबल इच्छा
8. लांछन	=	अपमान
9. वक्षस्थल	=	छाती
10.सुपथ	=	अच्छा रास्ता

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'रश्मिरथी' का मूल विषयवस्तु क्या है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'रश्मिरथी' के काव्यगत सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।
3. 'रश्मिरथी' समता और मानवता के धरातल पर खड़ा महाकवि दिनकर का युगधर्मी शंखनाद है। इस कथन को पुष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. ऊँच-नीच का भेद न माने, ...जिसमें तप-त्याग। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।
2. किसी वृंत पर खिले विपिन में, ... शक्ति का मूल। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

3. जिसके पिता सूर्य थे, ... धार पर बहती हुई पिटारी। इन पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. दिनकर के अनुसार 'रश्मिरथी' शब्द का मुख्य अर्थ क्या है?

A. पुण्य अथवा प्रकाश के रथ को खींचने वाला B. युद्ध के मैदान में सबसे तेज रथ चलाने वाला

C. महाभारत का सबसे शक्तिशाली योद्धा D. सूर्य की किरणों के समान तेज दौड़ने वाला अश्व

2. गेटे के अनुसार एक 'राष्ट्रकवि' में कौन सा गुण होना अनिवार्य है?

A. विदेशी भाषाओं का प्रकांड विद्वान होना

B. शासकों की प्रशंसा में काव्य रचना करना

C. केवल अतीत की गाथाओं का वर्णन करना

D. देशवासियों की निहित शक्तियों को जगाने का प्रयास करना

3. रश्मिरथी काव्य के अनुसार, कौन सा व्यक्ति 'श्रेष्ठ ज्ञानी' कहलाने का अधिकारी है?

A. जो ऊँचनीच का भेद नहीं मानता-

B. जिसने सभी वेदों और शास्त्रों को कंठस्थ कर लिया हो

C. जो केवल कुलीन वर्ग के लोगों को शिक्षा देता हो

D. जो समाज के कठोर नियमों का पालन करता हो

4. कविता में 'ब्राह्मण' होने की कसौटी किसे माना गया है?

A. तप और त्याग को B. राजदरबार में उच्च पद प्राप्त करने को

C. उच्च गोत्र में जन्म लेने को D. केवल धार्मिक अनुष्ठान करने को

5. तेजस्वी पुरुष अपनी पहचान बनाने के लिए क्या करते हैं?

A. समाज के नियमों के आगे आत्मसमर्पण कर देते हैं

B. अपना पराक्रम और करतब दिखाते हैं

C. भाग्य के भरोसे रहकर सही समय का इंतज़ार करते हैं

D. अपने ऊंचे वंश और गोत्र का बखान करते हैं

6. कर्ण के संदर्भ में 'पिटारी' का उल्लेख किस घटना की ओर संकेत करता है?

A. द्रोणाचार्य द्वारा दिए गए उपहार की ओर

B. नदी की धारा में उनके बहते हुए पालने की ओर

C. सूर्य देव द्वारा दिए गए कवच की ओर

D. उनके युद्ध के शस्त्रों को रखने के स्थान की ओर

7. दिनकर के अनुसार कर्ण किसका प्रतीक है?

A. अमानवीय जाति व्यवस्था के शिकार उपेक्षित वर्ग का

B. अंधविश्वास और भाग्यवादी सोच का

C. पांडवों के प्रति घृणा और प्रतिशोध का

D. कौरवों की अजेय सैन्य शक्ति का

8. रश्मिरथी काव्य में 'भाग्य' के विरुद्ध किसे श्रेष्ठ माना गया है?

A. देवताओं के आशीर्वाद को

B. पुरानी परंपराओं के पालन को

C. पौरुष और उद्यम को

D. शांतिपूर्ण समझौते के प्रस्ताव को

9. प्रथम सर्ग के अंत में जब कर्ण अर्जुन को ललकारता है, तो कृपाचार्य उसे कैसे हतोत्साहित करते हैं?

A. उसे गुरु द्रोण का आदेश मानने को कहकर

B. उसकी जाति पूछकर

C. उसके शस्त्रों की गुणवत्ता पर प्रश्न उठाकर

D. उसकी कम आयु का उपहास करके

10. सप्तम सर्ग में भगवान कृष्ण ने कर्ण की जीत के विषय में क्या कहा है?

A. कर्ण एक अधर्मी शत्रु था जिसका अंत अनिवार्य था

B. विजय चरित्र खोकर हुई है, असल जीत कर्ण की हुई

C. युद्ध में केवल बल की ही जीत होती है

D.पांडवों ने धर्म की मर्यादा रखकर युद्ध जीता

6.8 पठनीय पुस्तकें

1. रश्मिरथी : रामधारी सिंह दिनकर

इकाई 7 : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 मूल पाठ : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

7.3.1 जीवन परिचय

7.3.2 रचना यात्रा

7.3.3 रचनाओं का परिचय

7.3.4 हिंदी साहित्य में केदारनाथ अग्रवाल का स्थान एवं महत्व

7.4 पाठ सार

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

7.6 शब्द संपदा

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो !केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक हिंदी कविता के प्रमुख (2000-1911) हस्ताक्षरों में से एक हैं। उनका रचनाकाल किसी भी दूसरे कवि के मुक़ाबले बहुत विस्तृत और विविधतापूर्ण है। अनेककाव्यांदोलनों के बीच उनका आनाजाना रहा है। छायावाद से शुरू - करके वे प्रगतिवाद, नई कविता, अकविता और समकालीन कविता तक आए। आधुनिक युग के कवियों को प्रायः अनेक वादों के खाँचों में रखकर देखा जाता है। प्रयोगवाद और प्रगतिवाद ऐसे ही दो वाद हैं। केदारनाथ अग्रवाल को बहुधा प्रगतिवाद से जोड़कर देखा जाता है और उनके प्रगतिशील होने को कई विद्वानों द्वारा बड़ा महत्व दिया जाता था, किंतु आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी सरीखे इतिहासकारों ने मत दिया है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली उपलब्धि है। छात्रो !हम इस विचारधारा को अवश्य देखेंगे किंतु पहले केदार जी का जीवन परिचय और उनके विपुल कृतित्व के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। पृष्ठभूमि में उनका युग और मान्यताएँ भी रहेंगी। इतने बड़े कवि को देखने, परिचय प्राप्त करने और फिर परखने का काम आसान नहीं होगा। वे जितने सहज हैं उतने ही कठिन भी हैं। तो आइए, 'निश्छल कवि की सहज कविता का संसार जो अपनी सादगी में भी रहस्यपूर्ण है तो सहजता में भी असाधारण'ज्योतिष) उसे देखें (जोशी के शब्द, समझें और गुनें।

7.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- केदारनाथ अग्रवाल के जीवन, साहित्यिक व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- केदारनाथ अग्रवाल की युगीन पृष्ठभूमि को जान सकेंगे।
- यह भी जान लेंगे कि वे प्रगतिशील कवि के साथ साथ और किस प्रकार के कवि हैं।
- यह भी बता सकेंगे कि केदारनाथ अग्रवाल कवि और रचनाकार के रूप में भाषा, शैली और संवेदना के उच्च पद और स्तर पर हैं।
- केदारनाथ अग्रवाल के लेखन पर तर्कपूर्ण और विशेषाधिकार से अपना मत व्यक्त कर सकेंगे।

7.3 मूल पाठ : केदारनाथ अग्रवाल : एक परिचय

73.1. जीवन परिचय

केदारनाथ अग्रवाल का जन्म 1 अप्रैल, 1911 को बांदा जिले के बबेरू तहसील के कमासिन नामक गाँव में हुआ था। उनकी माँ का नाम घसिट्टो और पिता का नाम हनुमान प्रसाद था। पिता कला प्रेमी और कवि-हृदय थे तथा उपनाम से कविता भी लिखते थे। उनका एक काव्य संग्रह 'मधुरिमा' के नाम से प्रकाशित भी हुआ था। कविता उनके घर में पहले सी थी। चौपाल में आल्हा, मैदान में रामलीला, स्कूल में पद्माकर और जयदेव पढ़कर बालक केदार की कवि-मानसिकता बनी। कविता उनके मन में पैठ गई। केदार बाबू का बचपन इसी छोटे से गाँव में बीता और प्राथमिक शिक्षा का प्रारंभ भी कमासिन गाँव में ही हुआ। कक्षा तीन तक गाँव में पढ़ने का बाद वे रायबरेली आ गए। फिर पिता के कटनी जाने पर कक्षा छह की पढ़ाई कटनी में हुई। कटनी में एक साल रहने के बाद ये अपने पिता के साथ जबलपुर चले गए और 1927 में इलाहाबाद। इलाहाबाद में रह कर उन्होंने पहले बी.ए. किया और फिर कानून पढ़ने के लिए कानपुर आ गए। 1938 में लॉ की डिग्री ले कर बांदा लौटे और वकालत करने लगे।

केदार जी का विवाह बहुत छोटी उम्र में ही हो गया था ('गया ब्याह में युवती लाने/प्रेम ब्याहकर संग में लाया।) वे जब कक्षा 7 में थे तब विवाह हुआ और इंटर में आते आते वे एक कन्या के पिता भी बन चुके थे। केदार जी का अगाध पत्नी-प्रेम उनकी कविताओं में भी व्याप्त है। पत्नी पार्वती देवी के काम में तो वे सदा हाथ बंटाते ही थे, उनके लिए कविता भी लिखते रहे। 'हे मेरी तुम' और 'जमुन जल तुम' शृंखला की कविताएँ इसका प्रमाण हैं। कहा जाता रहा है कि केदारनाथ अग्रवाल ने हिंदी में परकीया प्रेम के स्थान पर दाम्पत्य प्रेम की प्रतिष्ठा की। गृहस्थ जीवन में रोमांस के सूक्ष्म अनुभव को कविता के शिल्प में प्रस्तुत किया।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल ने हिंदी में परकीया प्रेम के स्थान पर किसकी प्रतिष्ठा की?

केदार बाबू के घर का वातावरण पूर्ण रूप से ग्रामीण परिवेश का था। केदार जी का परिचय इस परिवेश से बालपन में ही प्रगाढ़ हो गया और अपने चारों ओर फैली गरीबी को देखकर वे बहुत क्षुब्ध होते थे। "इस परिचय का उनके बालपन पर ऐसा अमिट प्रभाव पड़ा कि बाद में जब उनका कवि प्रकट हुआ तब यह दुख-दर्द और संघर्ष, हाड़ तोड़ मेहनत, अमीरी की ओढ़ी हुई ठसक की तुलना में गरीबी की सहजता, निर्मलता आदि उनकी कविता में हज़ार-हज़ार कंठों से फूट पड़ी" (केदारनाथ अग्रवाल, सं. अजय तिवारी)।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल पर बचपन में चारों ओर फैली गरीबी का क्या प्रभाव पड़ा?

केदार बाबू अपने परिवेश से जीवन भर चिपटे रहे। बाहर शिक्षा ग्रहण की और फिर बांदा आ गए। कभी यश या धन कमाने के लिए शहर या सत्ता की ओर मुड़कर नहीं देखा। अपने कस्बाई मिज़ाज पर आंच न आने दी। प्रगतिशीलता का दम भरा और बार बार यही कहा कि वे कतई प्रयोगवादी नहीं है। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपने कवि मित्र के लिए कीट्स, वड्र्सवर्थ, शैले आदि अंग्रेजी कवियों को रेखांकित किया और कालिदास और विशेष रूप से वाल्मीकि की ओर उन्मुख किया। विशेष रूप से प्रकृति चित्रण में पश्चिम के कुछ आधुनिक कवियों से भी उन्होंने अपना कुछहै। केदार बाबू ने नेरुदा और कीट्स की कुछ कविताओं का कुछ संबंध रखा-न-अनुवाद भी किया था। रामविलास शर्मा ने अपनी पुस्तक 'प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल' में इस बात पर बहुत बल दिया है कि प्रगतिशील साहित्य और वाम पंथी विचारधारा युक्त साहित्य के लिए केदार बाबू का योगदान महत्वपूर्ण है। महत्वपूर्ण अवश्य है किंतु आपको यह कभी न भूलना चाहिए कि विचारधारा का आग्रह केदार के कविव्यक्तित्व को - उतनी दूर तक निर्मित कर सका जितना कि रचनात्मक संवेदनशीलता ने उसे बनाया और एक स्पृहणीय पहचान दी।

केदार बाबू पेशे से वकील थे, पर वकालत उतनी न चलती थी। यह बात वे अपने अभिन्न मित्र डॉ .रामविलास शर्मा को एक पत्र में लिखते हैं," वकालत बिगड़ रही है, पेशे से बेपेशा हो - रहा हूँ। देखो ये खर्चे कब तक चलते रहेंगे। इधर खर्चे ही खर्चे हैं। नाती की शादी में बहुत कुछ लगेगा1975 ।(संवाद-मित्र) " में लिखी एक कविता में वे कहते हैं - कुछ नहीं किया मैंने अदालत में"/सिवाय बकवास के / वे वकालत को अपने लिए 'बेपेशा-' मानते रहे। हाँ, वकालत ने उन्हें व्यवस्था को करीब से देखने का मौका दिया और वे भी 'रागदरबारी-' उपन्यास के लेखक श्रीलाल शुक्ल के समान व्यवस्था पर व्यंग्य करने में निपुण हो गए।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल व्यवस्था पर व्यंग्य करने में निपुण कैसे हुए?

साहित्यकार बाबू केदारनाथ अग्रवाल का व्यक्तित्व बहुत ही सहज, सरल व सादगी भरा था। घमंड या अहंकार उन्हें छू तक न गया था। पढ़ा लिखा हो या बे-पढ़ा-लिखा हो सबको वह

समान स्नेह और आदर देते थे। किसी को भी वह अपने 'छोटेपन' का अहसास नहीं होने देते थे। उम्र का बुजुर्गियत का, विद्वत्ता का, कविताई का और आभिजात्य का कोई अहं उनमें लेश मात्र भी नहीं था। क्योंकि उन्होंने अपना बड़प्पन उतार कर धर दिया था" -वहाँ उस /मुरदा अजायब घर में,/ जहाँ) "बड़ों के बड़प्पन की उतारने।-बड़े /मरणोपरांत धार दी जाती है /के .ना . अग्रवाल'प्रतिनिधि कविताएँ' पृ110 ., सं. अशोक त्रिपाठी)। समग्रतः अशोक त्रिपाठी ही के शब्दों में कहा जा सकता है कि केदारजी का पूरा जीवन लगभग सीधी पगडंडीसा था। इस - पगडंडी में कहींकहीं दूब की कोमल हरियाली थी-, कहीं-कहीं कुछ छोटेमोटे गड्ढे और कहीं - निचाट मैदान। वह न तो राजमार्ग था, न ही पेंचदार घुमावदार गली और न नदी नालों वाला बीहड़ रास्ता। दो28 चढ़ाव नहीं था।-चार घटनाओं को छोड़कर उनके जीवन में बहुत उतार- जनवरी,1996 को पत्नी का देहावसान ही शायद कवि के जीवन का सबसे दुखपूर्ण समय रहा और अपनी जीवन - शक्ति से उन्होंने ऐसे कठिन समय में खुद को संभाला-

दुख ने मुझको जब जब तोड़ा
मैंने अपने टूटेपन को कविता की ममता से जोड़ा
जहाँ गिरा मैं कविताओं ने मुझे उठाया,
हम दोनों ने वहाँ प्रात का सूर्य उगाया।

इस प्रकार घर के साहित्यिक माहौल, गाँव के श्रमशील जीवन, प्रकृति से अदम्य प्रेम और समाज के प्रति अटूट संवेदना के द्वारा केदार बाबू का व्यक्तित्व और कृतित्व निर्मित होता चला गया। मार्क्सवाद से परिचय होने पर उनका जनकवि रूप और अधिक पर-वान चढ़ा। उनकी कविता में जनगान के साथ-साथ जनसंघर्षों की अनुगूँज भी सुनाई दी। उनकी एक काव्य पंक्ति है- यह जन मारे नहीं मरेगा। नामवर सिंह ने केदार बाबू के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए लिखा है," केदार जी का व्यक्तित्व जूझना जानता था, झुकना नहीं; इनके सम्पूर्ण साहित्य में जीवन की आस्था सुदृढ रूप से परिलक्षित होती है। आधुनिकता के हल्लाबोल के आगे कवि - "केदार की प्रगतिवादी विचारधारा कभी नहीं डिगी। वह कविता में जीवन बोते रहे।

मृत्यु तो शरीर की होती ही है नहीं जनता कोई कैसे/ मरना होगा यह निश्चित है)? -'फूल नहीं रंग बोलते हैं'। अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से अलंकृत कवि केदारनाथ अग्रवाल अपनी (90 काया को छोड़कर-यश वर्ष की परिपक्व आयु में 22 जून,2000 को चल बसे। आज जब आप उनके किसी छाया चित्र को देखेंगे तो उनका छोटा कद, लंबी नाक, गोरा रंग, दाढ़ीमूँछ विहीन - मुख, आँखों में स्नेह तथा पैनापन एवं बच्चों की निश्छलता वाला व्यक्तित्व मनमुकुर में फिर से - कौंध जाएगा।

बोध प्रश्न

- केदार बाबू अपने लिए वकालत को 'बेपेशा' क्यों कहते हैं?
- केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व की सादगी से क्या तात्पर्य है?
- मार्क्स और प्रगतिवाद का कवि केदारनाथ पर क्या प्रभाव पड़ा?

73.2. रचना यात्रा

केदारनाथ अग्रवाल की करीब ढाई दर्जन कृतियों में 23 कवितासंग्रह-, एक अनूदित कविताओं का संकलन, तीन निबंध संग्रह, एक उपन्यास, एक यात्रा-वृत्तांत, एक साक्षात्कार संकलन और एक पत्र संकलन हैं। उनका पहला काव्य संग्रह-'युग की गंगा' देश की आजादी से पहले मार्च 1947 में प्रकाशित हुआ। उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया था।

केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक हिंदी कविता के मूर्धन्य कवियों में से एक हैं। 1933 से 1997 तक का उनका सुदीर्घ रचनाकाल किसी को भी मंत्रमुग्ध कर सकता है। उन्होंने छायावाद के समय से कविता लिखना शुरू किया और उनकी रचना यात्रा में प्रगतिवाद, नई कविता, अकविता तथा समकालीन कविता जैसे अनेक काव्यांदोलन आए गए हुए। प्रयोगवाद को भी वे छूकर अछूते निकले। केदार बाबू ने अपनी लेखन यात्रा का आरंभ बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में किया। प्रारंभ में इन्होंने प्रेम और सौंदर्य की कविताएँ लिखीं लेकिन धीरे धीरे युग के यथार्थ से जुड़ कर उनके प्रेम ने व्यापकता ग्रहण कर ली और वे श्रमशील जनता से जुड़े। किसान और मजदूर, प्रकृति और मनुष्य उनकी कविता के प्रमुख आधार बनते चले गए। कवि केदार की रचना यात्रा का यदि कोई गहराई से अध्ययन करे तो वह भारत के साहित्यिक जगत में प्रगतिशील कविता के विकास का अध्ययन भी करता चला जाएगा। यद्यपि केदार की कविता का एक निश्चित भूगोल और स्थानीयता के रूप में बांदा जनपद के इर्दगिर्द की केन नदी के किनारे की - जमीन है, पर कविता देशकाल की सीमाओं का अतिक्रमण करके सार्वभौम और सार्वजनीन हो - ' गई है।किसानी संवेदना का कवि' कहकर डॉ. शिवकुमार मिश्र इनके कविकर्म को सराहत-े हैं और विश्वनाथ प्रसाद मिश्र केदार की कविता को 'प्रकृति के साहचर्य में मुक्ति की तलाश' कहकर रेखांकित करते हैं।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में क्या देखा जा सकता है?
- विश्वनाथ प्रसाद मिश्र केदार की कविता को क्या कहकर रेखांकित करते हैं?

यह सही है कि वे ग्राम्यप्रकृति और श्रमिक उनकी कविता में बार बार जीवन के कवि हैं।- साम्राज्य है। वे जीवन के हर कोने को कविता में -आते हैं। पर इसके अतिरिक्त भी उनका कवि छूते हैं। साधारण और आम लोगों को असाधारण और खास बनाकर वे अपनी काव्य क्षमता का परिचय देते है◌ं। परिवार और उसकी संवेदना कवि की रगसमाई है। प्रकृति और रग में- - परिवार का एक साथ चित्रण करती कुछ पंक्तियाँ देखें

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है।

अग्रवाल जी की भाषा यथार्थ और छायावाद की भाषा से मिलती जुलती है। वे अपने आपको चाहे छायावाद से मुक्त पाते थे, उनकी भाषा उतनी मुक्त नहीं दिखाई देती। उनके काव्य

में छायावाद की तरह प्रकृति और मनुष्य का समीकरण नहीं साहचर्य है। प्रकृति की विराटता के स्थान पर यहाँ विलक्षणता है। क्योंकि यहाँ 'फूल नहीं रंग बोलते हैं'।

केदारनाथ अग्रवाल जितने सहज हैं उतने ही कठिन कवि भी हैं। सहजता उन्हें लग सकती है जो भारतीय ग्राम्य जीवन, कृषि संस्कृति और सचमुच के भारत से वास्ता रखते हैं। गाँव और गाँव के जीवन से जिनका संबंध पुस्तकों और रजतपटों तक सीमित है, उनके लिए वे कठिन कवि हैं, तथा आक्रामक भी; क्योंकि वे किसानों के प्रतिनिधि हैं और ठेठ ग्राम्य-जीवन से लेकर श्रमिक संसार की समग्रता ही उनकी मुख्य काव्यवस्तु है। इसका मतलब यह नहीं है कि इस कवि से जीवन का कोई कोना छूट गया हो। सच तो यह है कि इस कवि से जीवन का कोई कोना छूट गया हो। सच तो यह है कि इस कवि ने जीवन के उन सभी पक्षों को अभिव्यक्ति दी है जो हम सभी से साथ अनुस्यूत हैं। क्या प्रेम, क्या शृंगार, क्या वियोग, क्या दुख, क्या सुख, क्या दैन्य, क्या श्रम से पस्त जीवन, क्या टूटती आकांक्षाओं में दम तोड़ते सपने, क्या क्रूर व्यवस्था के पाखंड, क्या प्रजातंत्र का खोखला खेल और इन सबसे अलग प्रकृति के समग्र उपादानों पर न्योछावर कवि की अनुभूति की वह अप्रतिम मानवी संसक्ति; जो जीवन को नई चेतना से अनुप्राणित कर देती है। - भूमिका से : (2014) केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन) ज्योतिष जोशी (

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल एक साथ ही सहज और कठिन कवि कैसे हैं?

केदार बाबू की कविता में कल-कल बहती नदियों का प्रवाह है। उनकी कविता में सारी धरती और सारा आकाश है। खेत है, खलिहान है और है किसान। कारखाने, कचहरी, कुदाल और दराँती के कवि केदार का मन प्रकृति, चिड़िया, नदी और पर्वत में भी खूब रमता रहा है। वे त्रिलोचन और नागार्जुन के समान इस धरती के कवि हैं। वे मनुष्य और मानवता के कवि हैं। केदार बाबू ने एक बार कहा था कि वे नई कविता के विरोधी नहीं, उसके उन सब तत्वों के विरोधी हैं जो उसे कविता नहीं, 'मस्तिष्क की विकृति' और 'युगविशेष की एकांगी आकृति' बना देते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने अपने एक निबंध 'कविता संवेदनशील वस्तुवत्ता है' में अपने काव्यचिंतन की ओर संकेत करते हुए लिखा है," अलंकारों की सजावट कविता को पूरी तरह कृत्रिम और हृदयहीन बना देती है। कवि की आत्मपरकता विलुप्त हो जाती है। कविता ममताविहीन होकर केवल जड़ाऊ कंगन बन जाती है। न स्पर्श करती है, न इंद्रियबोध जगाती है। जीवन की जीवंतता से रहित वह जीवन का अंश नहीं बनती।"

आचार्य रामस्वरुप चतुर्वेदी का मत है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली उपलब्धि है। केदारनाथ अग्रवाल को बहुधा प्रगतिवाद से जोड़कर देखा जाता है और उनके प्रगतिशील होने को कई विद्वानों द्वारा बड़ा महत्व दिया जाता था। इसको भी यहाँ आपको विचारकर देखना चाहिए। 'प्रगतिवाद' शब्द प्रगतिवाद+, दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका

शाब्दिक अर्थ उन्नति या विकास है। इसी से 'प्रगतिशील' बना और इस विचारधारा को 'प्रगतिवाद' कहा गया। प्रगतिवाद उस 'वाद' को कह सकते हैं जिसमें मानव को उसकी वास्तविक स्थिति से परिचित कराकर उसके उत्थान का मार्ग सुझाया जाता है। 1936 के आसपास 'प्रगतिशील' आंदोलन ने देश में वही प्रभाव डाला जैसा मध्यकाल में भक्ति आंदोलन ने किया था।

हिंदी साहित्य में प्रगतिवाद का विकास दलितों, शोषितों, किसानों और मजदूरों की पीड़ा की गाथा को लेकर हुआ। मार्क्सवादी विचारधारा ने इसे सैद्धांतिक आधार दिया। प्रगतिवाद और मार्क्सवाद को एक ही सिक्के के दो पहलू कह सकते हैं। केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवादी काव्य चेतना के सशक्त कवि हैं। वे जीवन का साहित्य रचकर ख्याति प्राप्त कर सके और उनको जीवन की पहचान मार्क्सवाद ने कराई। केदार जी के साहित्यिक जीवन का प्रारंभ ऐसे युग में हुआ जब अंग्रेजों की गुलामी से देश को आज़ाद कराने के लिए गांधी जी और अन्य नेताओं के नेतृत्व में देश आंदोलित था। आर्थिक रूप से देश की स्थिति ठीक न थी। साहित्य में छायावादी कविता की जगह प्रगतिशील कविता लेने लगी थी। देश की आज़ादी के बाद देश को राजनीतिक आज़ादी तो मिली किंतु आर्थिक और सामाजिक बदलाव ने गति न पकड़ी। जनता के दुख दूर न हो सके। 1962,1965 ,1971 के युद्धों ने देश की अर्थ व्यवस्था को बहुत अधिक प्रभावित किया। साहित्य में प्रगतिवादी आंदोलन के बाद व्यक्तिवादी कविता लिखने का दौर चला जिसे 'प्रयोगवाद' नाम मिला।

बहुत से कवि प्रयोगवादी हो गए। किंतु नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिशील बने रहे। केदार बाबू प्रगतिवादी रहे अवश्य किंतु वे रूढ़िवादी और कट्टर प्रगतिशीलता के पक्ष में कभी न रहे। उनकी कविता में केवल संघर्ष नहीं बल्कि वे जीवन और प्रकृति के कवि हैं। उनकी ऐतिहासिक चेतना और राजनीतिक कविताएँ 'कहें केदार खरी खरी' आदि संग्रहों में है। सामाजिक यथार्थ और श्रम सौंदर्य का चित्रण कवि ने 'छोटे हाथ' जैसी मार्मिक कविताओं में किया है। कवि इस कविता में कहता है कि सुंदर मुख, सुंदर हाथों से कम करने वाले किसान लाल कमल के समान हैं। हाथ का काम में लगना जैसे कमल का खिलना है -

छोटे हाथ
सवेरा होते
लाल कमल से खिल उठते हैं
करनी करने को खिल उठते हैं
करनी करने को उत्सुक हो
धूप हवा में हिल सकते हैं।

बोध प्रश्न

- किसानी संवेदना का क्या अर्थ है?
- प्रयोगवाद और प्रगतिवाद में क्या अंतर है?

73.3. रचनाओं का परिचय

प्रारंभ में केदार बाबू की रचनाएँ माधुरी, हंस, नया साहित्य एवं पारिजात आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं।1930 से कविता लिखना शुरू किया पर पहला काव्य संग्रह 1947 में आया। 'युग की गंगा52 काव्य संग्रह की कुल (1947) ' कविताओं में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ का चित्रण है। इसी में 'चंद्रगहना से लौटती बेर' तथा 'बसंती हवा' जैसी क्लासिक कविताएँ भी हैं। उसी वर्ष 1947 में एक दूसरा काव्य संग्रह 'नींद के बादल' भी आया था जिसमें नींद के बादल रात के जादू के बाद दिन के लाल सवेरे के साथ ओझल हो जाते हैं। छायावादी रुझान की इन कविताओं में प्रकृति प्रेम सर्वोपरि है। प्रकृति कवि के लिए आत्मीया-जैसी है।'मैं घूमूँगा केन किनारे, मैं बैठा हूँ केन किनारे' और 'हँसकर कहा सुमन ने उससे' आदि कुछ उदाहरण हैं। कवि की कविता में बच्चे हैं, चिड़िया है, वृक्ष हैं, माँ है और मित्र हैं। 'लोक और आलोक'(1957) कविता संग्रह में कवि कह उठता है," हम मानवतावादीहम कवि हैं जनवादी। / कवि प्रकृति चित्रण में भी जन को ले आता है और जन में प्रकृति रहती ही है। इस संग्रह का एक गीत आपको आज भी गाने के लिए मजबूर कर देगा," माँझी न बजाओ बंशी मेरा तन झूमता है। "

पुरस्कृत और प्रतिनिधि कविता संग्रह 'फूल नहीं रंग बोलते हैं(1965) ' में 237कविताएँ हैं और कवि की मार्क्सवादी मान्यताएँ और सुदृढ़ होकर नियमों से अनुशासित होकर व्यक्त हुई हैं," मुक्त देश के नवोन्मेष के जनमा-नस की हो कर धारा "।...'आग का आईना'160 (1970) कविताओं को लेकर आया और इसकी कविताएँ सामाजिक क्रांति का अस्त्र बनकर प्रस्तुत हुईं। गुलमेहंदी संग्रह की (1978)कविताएँ आदमी को आदमी से जोड़ने के लिए हैं और कवि की अनुभूति और चिंतन की परिचायक हैं। निराला जी पर लिखी कविता यहाँ है - मरण में भी हृदय झंकृत, शीश उन्नत किए अपने ...। "'पंख और पतवार' (में केदार की कुछ (1979कविताएँ फिल्म जगत पर भी हैं।-'मार प्यार की थापें'(1981) की 66कविताएँ कवि की साम्यवादी दृष्टि को रेखांकित करती हैं।

1977 में देश ने एक नई पार्टी का शासन देखा, पर कवि ने कोई खास बदलाव आया न देखकर कहा," नाच रहे पहले के प्रगतिशील कवि ने नेताओं के इस आचरण .../ वही वही भालू / के प्रति जनता को सचेत करने के लिए अपनी भर कुछ किया।'बंबई का रक्त स्नान' में जन भाषा और जन' शैली का समागम है।-हे मेरी तुम'(1981) की 61कविताएँ पत्नी के प्रति प्रेम का उद्गार हैं। 'कहे केदार खरी खरी' (1983) की 101 रचनाएँ मजदूरों, गरीबों, शोषितों, दीनहीन - 1947 दलितों की गहरी पीड़ा को शब्द बद्ध करती हैं। इनमें से 1977 का युग बोलता हैमुझे - ' "।...वह स्वर मेरी कविता का स्वर /प्राप्त है जनता का स्वरअपूर्वा' (1984), 'बोले बोलअबोल' (1985), 'जो शिलाएँ तोड़ते हैं'(1986) , 'आत्म गंध' (1988), 'अनहारी हरियाली' (1990), 'खुली आँखें कुले डैने' (1993), 'वसंत में प्रसन्न हुई पृथ्वी' (1996) और 'छोटे हाथ'आदि (2007) अनेक संकलनों की अनेककविताएँ कवि केदारनाथ अग्रवाल का जो कविचित्र आपके सामने - अंकित करती हैं वह आपको जीवनभर के लिए मंत्र मुग्ध कर देगा।कविताएँ अनेक हैं, पर एक

कविता है जो आपको यहाँ दी जा रही है। इस कविता में क्या है, जरा विचारेंजब / मैंने उसको-तपते देख/ लोहा जैसा /लोहा देखा /जब देखाागोली /मैंने उसको /ढलते देखा/गलते देखा / "चलते देखा।/जैसा

कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता ही इतना प्रभावित कर देती है कि उनके कथा साहित्य और अन्य लेखन पर आपका भी ध्यान कम ही जाएगा। पर यहाँ इसका उल्लेख अवश्य करेंगे। कवि केदार का भारतीय नारी जीवन पर आधारित 'पतिया' (1985) नामक उपन्यास पढ़कर आपको लगेगा कि उनके अंदर एक कवि और समालोचक से साथ साथ सहृदय प्रगतिशील कथाकार भी बैठा है। अपने रूस के संस्मरण में कवि रूस के बाहरी जीवन से अति प्रभावित दिखते हैं। अपने निबंधों। पुस्तकों की भूमिकाओं और साक्षात्कारों आदि में कवि केदार विचारशील साहित्यकार के रूप में आपको दिखाई देंगे। एक निबंध में कवि ने भाषा पर जो कहा है वह आपको उनके गद्य का गहराई से परिचय करा देगा - कोई भी भाषा जीवन से दूर रहकर, सौदामिनी की तरह चमक कर मनुष्यों की भाषा नहीं हो सकती, भले ही वह कवियों की भाषा हो जाए और कुछेक उसे सँवारते रहें। "

केदारनाथ अग्रवाल और उनके अभिन्न मित्र डॉ. रामविलास शर्मा से बीच वर्षों जो पत्र व्यवहार होता रहा उसको भी आपको देखना चाहिए। 'मित्र संवाद' के नाम से प्रकाशित इन पत्रों में आपको दुनिया जहान की बातें मिलेंगी। ये पत्र सच्ची मित्रता, निष्ठा, निश्छलता, सहजता और परस्पर विश्वास की जीती जागती मिसाल हैं।

देश की आजादी के दो दिन बाद (1947-7-17) भी देश की आजादी के बारे में जिक्र न करते हुए केदार जी अपनी पत्नी के बारे में अपने मित्र को लिखते हैं," मेरा रौब तो मेरी बीबी भी नहीं मानती तब तुम और दूसरे लोग क्यों मानेंगे। कहती हैं इन किताबों को बाहर रख कर आया करो। आँखें बहुत फालतू नहीं हैं। भैया चुप रह जाता हूँ। घर की आग बड़ी बुरी हो सकती है।"

शमशेर बहादुर सिंह केदार की प्रतिभा की सबसे बड़ी विशेषता उनकी 'सहज सजगता' को मानते हुए कहते हैं कि प्रकृति और समाज के आईने में जब वह सौंदर्य के दर्शन करते हैं तो वह उसमें उसी तरह मगन हो जाते हैं जैसे तैराक नदी में कूदकर या परिंदे हवा में नाचकर। कवि के इस उत्साह और आनंद में पाठक सदैव एक सहज अनारोपित मर्यादा का अनुभव करता है । शमशेर बहादुर सिंह के शब्दों में," उनके छंद में एक ठेठपन मिलेगा, जो ठोस अनुभवों का तेवर लिए हुए होता है।उसकी वाणी में एक कसबल है जो बुंदेलखंड का ही नहीं-, उसका तो है ही; हर स्वस्थ मेहनतकश नौजवान का भी है।"

बोध प्रश्न

- 'मित्र संवाद' क्या है?
- 'साम्यवादी दृष्टि' से आप क्या समझते हैं?
- 'पतिया' उपन्यास की मुख्य विशेषता क्या है?

7 3.4.हिंदी साहित्य में केदारनाथ अग्रवाल का स्थान एवं महत्व

केदारनाथ अग्रवाल हिंदी साहित्य की प्रगतिवादी विचारधारा के श्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। उनकी कविता ने जनसाधारण के जीवन को प्रतिबिंबित ही नहीं किया बल्कि नई जिंदगी के लिए उनको मार्ग भी दिखाया। कवि नागार्जुन ने केदार नाथ अग्रवाल के योगदान पर अपनी कविता में लिखा है -

जन-गण-मन के जाग्रत शिल्पी
तुम धरती के पुत्र, गगन के तुम जामाता
नक्षत्र के स्वजन कुटुंबी, सगे बंधु तुम, नद नदियों के ।
वास्तव में केदार जन जाग्रत मन के-गण-

वे प्रगतिवादी कवि हैं पर अपने रास्ते पर चलकर। कवि केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मूल स्वर संघर्ष का है। प्रगतिशीलता का संबंध विचारों से है। इन विचारों में मुख्य तत्व साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का विरोध और मजदूरकिसान का समर-्थन रहा है। कवि ने स्वयं कहा है," मैं कविता मार्क्सवादी जीवनदर्शन से प्रभावित होकर लिखता हूँ और इसलिए लिखता- "दर्शन आदमी बनाता है। -हूँ कि मुझे वह जीवनकवि प्रयोग के क्षेत्र में भी रुचि लेता है पर एक सीमा तक। 'मैंने उसको जब जब देखा' कविता इसी कारण प्रयोगवादी के साथ साथ प्रगतिशील भी है। वे मार्क्स के अनुसार नया समाज, नई अर्थ व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था बनाने की खातिर लिखते हैं -

मगन मस्त चोला-बनाओ /बनाओ
दियों की दिवाला हियों में जलाओ। /

वे हिंदी कविता के प्रमुख व्यंग्यकार हैं। व्यंग्य की विभिन्न शैलियों को अपनाकर उन्होंने सामाजिक एवं आर्थिक पाठ, भृष्ट नेताओं आदि पर करारा व्यंग्य किया है।केदारजनकवि हैं। आम जन की कविता करने वाले आम जन हैं। वे साधनहीन, सुखहीन, पदहीन और दिशाहीन जनसामान्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।

बोध प्रश्न

- केदारनाथ अग्रवाल कैसा समाज बनाना चाहते हैं?
- 'मस्त मगन चोला' जैसी काव्य पंक्तियों में कवि क्या संकेत करते हैं?

74. पाठ सार

आपने इस विस्तृत और गंभीर पाठ में केदारनाथ अग्रवाल के विशद लेखन और काव्यात्मक प्रतिभा के बारे में पढ़ा। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व निश्चय ही आपको भी प्रभावित करेगा।

केदारनाथ अग्रवाल हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि हैं जिन्हें प्रायः प्रगतिशील काव्यांदोलन से जोड़कर देखा जाता है। यह सही है कि वे आजादी के पूर्व से लेकर बीसवीं शताब्दी के अंत तक

लेखन कार्य करते रहे और छायावाद से लेकर कई वादों से होकर गुजरे। उनकी राजनीतिक दृष्टि मार्क्सवाद से प्रभावित है।

नागार्जुन, त्रिलोचन और केदारनाथ अग्रवाल की एक कवि त्रयी बनती है। एक दूसरे मार्क्सवादी आलोचक और प्रयोगवादी कवि डॉ रामविलास शर्मा के अभिन्न मित्र केदार नाथ जी ने देश की दयनीय दशा को देखकर राजनीतिक कविताएँ खूब लिखीं। किंतु उनका मन प्रकृति में ही लगता है। प्रकृति, प्रेम और श्रम पर आपने जमकर लिखा है। केदारनाथ अग्रवाल की कविता का मुख्य भाव प्रेम है। इस प्रेम में प्रकृति। मनुष्य, पशु, पक्षी, नदी, नाला, पोखर, पहाड़, खेत, खलिहान, बागबगीचे आदि सब आते हैं। आपकी काव्य भाषा सरल-, सहज, और संप्रेषणीय है।

'जन' और 'जनता' को केंद्र में रखकर कविता रचने वाले केदार मानव जगत के बिंबों और प्रतीकों से रचना बनाते हैं। उनकी कविता में एक विशेष प्रकार की स्थानीयता और आंचलिकता है। बुंदेलखंड और वहाँ की धरती और लोग उनकी रचनाओं में एक विशेष ताजगी और आत्मीयता भरते हैं। मार्क्सवाद और प्रगतिवाद से प्रभावित लेखन करने वालों के नगण्य हो जाने के बाद आज भी यह कहा जा सकता है कि केदार बाबू का काव्य प्रगतिवाद की अकेली उपलब्धि है।

हिंदी के यशस्वी कवि-साहित्यकार केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी कविताओं, निबंध, कहानी, संस्मरण, उपन्यास आदि से एक ऐसा मानवतावादी और प्रगतिवादी दर्शन प्रस्तुत किया है। वे समाज में समता और समानता लाने वालों के साथ है। वे शोषण विहीन समाज की स्थापना का स्वप्न साकार करना चाहते हैं और उन्हें विश्वास है कि परिस्थितियाँ अवश्य बदलेगी। कविता में प्रसन्न होने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अशोक वाजपेयी ने लिखा है कि केदारनाथ अग्रवाल एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने अपनी कविता में प्रसन्न होने का साहस दिखाया है और आदमी की प्रसन्नता को भी बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में कविता का एक मूल विषय मानने का जोखिम उठाया है।

7.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं -

1. केदारनाथ अग्रवाल को आम तौर पर प्रगतिशील या प्रगतिवादी कवि माना जाता है।
2. उनका रचना काल छायावाद से शुरू होकर प्रगतिवादअकविता और ,नई कविता , समकालीन कविता तक को भेदता है।
3. केदारनाथ अग्रवाल को सहजता में असाधारणता का उदाहरण माना जाता है।
4. उन्हें किसानी संवेदना का कवि कहा जाता है।
5. उनकी कविता को प्रकृति के साहचर्य में मुक्ति की तलाश का पर्याय माना जाता है।
6. पत्नी प्रेम की कविताओं के लिए केदारनाथ अग्रवाल को विशेष सम्मान प्राप्त है।

7.6 शब्द संपदा

1. आंचलिकता = आंचलिक होने की अवस्था या भाव, किसी अंचल या क्षेत्र की रहन-सहन और सांस्कृतिक विशेषताएँ, जो मूल सामासिक संस्कृति का हिस्सा होते हुए भी अलग दिखती हैं; क्षेत्रीयता।

2. आभिजात्य = ऊँचे कुल का, कुलीनता, उच्च कुल में पैदा होने का घमंड

3. दाम्पत्य = पति-पत्नी और उनका आपसी संबंध

4. परकीया = अपने पति की उपेक्षा कर परपुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री

5. प्रतिबिंबित = जिसका प्रतिबिंब पड़ता हो, जिसकी परछाईं पड़ती हो, जिसका आभास मिलता हो ।

6. बेपेशा-पेशा = जीविकोपार्जन का साधन, धंधा, काम (जैसे-वह किस पेशे में लगा है) । 'बे' उपसर्ग से इसका विपरीत अर्थ होगा - जो किसी ढंग के पेशे में न लगा हो। (देखें - रोजगार-बेरोजगार)

7. स्पृहणीय = प्राप्त करने योग्य, वांछनीय

77. परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग50 0 शब्दों में दीजिए।

1. केदारनाथ अग्रवाल के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
2."केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवाद की एकमात्र उपलब्धि हैं।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
3.उदाहरण देकर इस वक्तव्य "के काव्य में प्रकृति और प्रेम का साम्राज्य है। केदारनाथ अग्रवाल" की व्याख्या कीजिए।
4. खेत खलिहानों का कवि कहने से क्या तात्पर्य है? क्या केदारनाथ अग्रवाल को खेत खलिहानों का कवि कहा जा सकता है?

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न (आ)

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. केदारनाथ अग्रवाल के जीवन और कृतित्व पर उनके ग्रामीण परिवेश का प्रभाव कहाँ तक पड़ा?
2. 'मित्र संवाद' का उल्लेख करते हुए केदारनाथ अग्रवाल के जीवन में उसके महत्व को प्रतिपादित कीजिए।
3. 'दाम्पत्य प्रेम' से आप क्या समझते हैं? किस प्रकार से केदारनाथ अग्रवाल दाम्पत्य प्रेम के कवि हैं, समझाकर लिखिए।
4. किसानी संवेदना के कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल का परिचय प्रस्तुत कीजिए।
5. प्रगतिशील कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल के योगदान का आकलन कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए –

1. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म उत्तर प्रदेश के किस जिले के एक गाँव में हुआ था?

A. जबलपुर B. इलाहाबाद C. रायबरेली **D. बांदा**

2. केदारनाथ अग्रवाल के पिता हनुमान प्रसाद किस उपनाम से कविताएँ लिखते थे?

A. केदार **B. मधुरिमा** C. हर्ष D. प्रसाद

3. केदारनाथ अग्रवाल ने हिंदी कविता में किस प्रकार के प्रेम की प्रतिष्ठा की, जिसे पारंपरिक 'परकीया प्रेम' से भिन्न माना जाता है?

A. अलौकिक प्रेम **B. दाम्पत्य प्रेम** C. शृंगारिक विरह D. रहस्यवादी प्रेम

4. आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार केदारनाथ अग्रवाल का काव्य किस साहित्यिक 'वाद' की अकेली उपलब्धि है?

A. प्रगतिवाद B. नई कविता C. प्रयोगवाद D. छायावाद

5. केदारनाथ अग्रवाल अपनी वकालत के पेशे को क्या कहकर संबोधित करते थे?

A. राजमार्ग B. जीवन की जीवंतता C. मुरदा अजायबघर **D. बेपेशा-**

6. केदारनाथ अग्रवाल का पहला काव्य-संग्रह कौन सा था जो मार्च 1947 में प्रकाशित हुआ?

A. नींद के बादल **B. युग की गंगा**

C. लोक और आलोक D. फूल नहीं रंग बोलते हैं

7. डॉ. रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के बीच हुए पत्र-व्यवहार को किस शीर्षक से प्रकाशित किया गया है?

A. केदार के पत्र **B. मित्र संवाद** C. युग की बातें D. प्रगतिशील पत्र

8. डॉ. शिवकुमार मिश्र ने केदारनाथ अग्रवाल को किस प्रकार की संवेदना का कवि कहकर सराहा है?

A. किसानी संवेदना B. क्रांतिकारी संवेदना C. औद्योगिक संवेदना D. शहरी संवेदना

9. केदारनाथ अग्रवाल ने अपनी प्रसिद्ध पंक्तियों में किसके चलने की तुलना 'गोली' से की है?

A. लोहे को B. समय को C. हवा को D. नदी को

10. केदारनाथ अग्रवाल के एकमात्र उपन्यास का नाम क्या है, जो भारतीय नारी जीवन पर आधारित है?

A. अपराजिता **B. पतिया** C. बसंती D. कालिदास

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. आधुनिक कवि केदार नाथ अग्रवाल
2. केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन : सं. ज्योतिष जोशी
3. के. ना. अग्रवाल 'प्रतिनिधि कविताएँ': सं. अशोक त्रिपाठी
4. संचयिता - केदारनाथ अग्रवाल : सं. अशोक त्रिपाठी
5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई 8 : बसंती हवा

रूपरेखा

8.1प्रस्तावना
8.2 उद्देश्य
8.3 मूल पाठ :बसंती हवा
8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय
8.3.2 अध्येता कविता
8.3.3 विस्तृत व्याख्या
8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन
8.4 पाठ सार
8.5 पाठ की उपलब्धियाँ
8.6 शब्द संपदा
8.7 परीक्षार्थ प्रश्न
8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1प्रस्तावना

प्रिय छात्रो !केदारनाथ अग्रवाल आधुनिक कवि हैं। उनका परिचय आप इससे पहली इकाई में प्राप्त कर चुके हैं। वे जीवन और प्रकृति के कवि हैं। उनकी कविताओं में धूप, नदी, बादल, पेड़पौधे-, चना, गेहूँ, अलसी, बाजरा, पत्थर, पहाड़ और हवा सब कुछ हैं और बिलकुल नई तरह से हैं। जीवंत प्रकृति चित्रण करते हुए कवि केदार अपने पाठकों को अपने साथ हवा की तरह बहा ले जाते हैं। इस इकाई में आप उनकी वह कविता पढ़ने जा रहें हैं जो उनके नाम से जुड़ गई है। आपने पिछली इकाई में भी ध्यान दिया होगा कि केदारनाथ अग्रवाल को समूची धरती से प्रेम है। वे अपनी प्रकृतिपरक कविताओं में बुंदेलखंड की धरती की सौंधी महक भरकर लाते हैं। कवि प्रकृति को अनेक रूपों में प्रस्तुत करता है। एक कविता में केन नदी एक नौजवान ढीठ लड़की बन जाती है तो दूसरी कविता में वह गति और वेग का पर्याय बन जाती है। 'बसंती हवा' गति और वेग की कविता है। कवि वसंती हवा का मानवीकरण करके ऐसे प्रस्तुत करता है, जैसे वह कोई नटखट कन्या हो। यह भी आप देखेंगे कि बसंती हवा अपना परिचय स्वयं दे रही है और वह भी बड़ी बेबाकी और चतुराई से। भाषा इतनी सरल, सहज और प्रभावशाली है कि 10 वर्ष का बालक भी इसे पढ़े तो सस्वर गायन करने लग जाए। बसंती हवा के रूप में यह जो उछलती कूदती मुग्धा सी अल्हड़ नायिका है, वह छायावादी स्वच्छंदता और प्रगतिवादी स्वाधीनता के बीच से कैसे सर्र से सरपट हो जाती है, यह भी आपको ध्यान में रखना होगा।

8.2 उद्देश्य

छात्रो - इस इकाई के अध्ययन के बाद आप !

- प्रकृति का मानवीकरण और उसके सौंदर्य को अनुभव और अभिव्यक्त कर सकेंगे।
- भाव, विचार, छंद, लय, शब्द और अर्थ की दृष्टि से कविता का पाठ कर सकेंगे।
- जीवन और लोक से कविता को जोड़कर देख सकेंगे।
- बसंती हवा कविता के पदों की संदर्भ, प्रसंग सहित व्याख्या कर सकेंगे।

8.3 मूल पाठ : बसंती हवा

8.3.1 अध्येय कविता का सामान्य परिचय

कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रेम और प्रकृति के प्रगतिवादी कवि कहे जाते हैं। उनकी कविताएँ सरल किंतु अर्थगर्भित होती हैं। बसंती हवा उनका एक लंबा प्रगीत है। इस कविता में बसंती हवा का अपनी मस्त गति से बहना ऊपरी तौर पर है लेकिन जैसे ही आप इस कविता को पढ़ते जाएँगे हवा बदलती चली जाती है। वह एक अल्हड़ बाला का रूप धारण कर लेती है। बसंती हवा का झूमना, खेलना, नाचना, गाना धीरेधीरे एक चंचल लड़की का आकार ले लेता - है। वह आँखों के सामने नाचने लगती है। बसंती हवा के माध्यम से कवि ने जिस कृषि चेतना और ग्राम्य संस्कार केसौंदर्य का चित्रण किया है, वह हिंदी में अब कम दिखाई देता है। इस कविता का स्वर और अंदाज़ बहुत आत्मीयतापूर्ण है। इस गीत में अनेक फसलों, फूलों और अनाजों का उल्लेख हुआ है, उसका भी आपको कविता पाठ के समय ध्यान रखना होगा। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि धीरे धीरे ये शब्द प्रयोग में कम होते जा रहे हैं। यहाँ यह भी आपको ध्यान रखना होगा कि 'ऋतु' या 'मौसम' छह माने जाते हैं। ये हैं - वसंत/बसंत)अंग्रेजी में इसे 'स्प्रिंग सीजन' कहते हैं।(, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर। मार्च से शुरू होकर प्रत्येक ऋतु लगभग दो महीने तक होती है। वसंती या बसंती हवा इस प्रकार से मार्च से अप्रैल महीने तक बहने वाली हवा हुई।

8.3.2 अध्येता कविता

हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी - अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ, बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है, बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ, उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ।
न घर-बार मेरा, न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की, न आशा किसी की,
न प्रेमी न दुश्मन, जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ।

हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ!

जहाँ से चली मैं जहाँ को गई मैं -
शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर, झुलाती चली मैं।
झुमाती चली मैं!
हवा हूँ, हवा मैं बसंती हवा हूँ।

चढ़ी पेड़ महुआ, थपाथप मचाया;
गिरी धम्म से फिर, चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा, किया कान में 'कू',
उतरकर भगी मैं, हरे खेत पहुँची -
वहाँ, गेंहुँओं में लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या, अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी -
हिलाया-झुलाया गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा, हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

मुझे देखते ही अरहरी लजाई,
मनाया-बनाया, न मानी, न मानी,
उसे भी न छोड़ा -
पथिक आ रहा था, उसी पर ढकेला;
हँसी ज़ोर से मैं, हँसी सब दिशाएँ,

हँसे लहलहाते हरे खेत सारे,

हँसी चमचमाती, भरी धूप प्यारी;

बसंती हवा में, हँसी सृष्टि सारी!

हवा हूँ, हवा मैं

बसंती हवा हूँ!

निर्देश : 1. इस कविता का सस्वर वाचन कीजिए।
2. इस कविता का मौन वाचन कीजिए।

8.3.3 विस्तृत व्याख्या

हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ।
सुनो बात मेरी -
अनोखी हवा हूँ।
बड़ी बावली हूँ,
बड़ी मस्तमौला।
नहीं कुछ फिकर है,
बड़ी ही निडर हूँ।
जिधर चाहती हूँ,
उधर घूमती हूँ,
मुसाफिर अजब हूँ।
न घरबार मेरा-,
न उद्देश्य मेरा,
न इच्छा किसी की,
न आशा किसी की,
न प्रेमी न दुश्मन,
जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ।
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : मस्तमौला बेफिक्र =, अपने मन की करने वाला।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : इन पंक्तियों में बसंती हवा के इधर उधर अपने मन के अनुसार घूमते फिरते रहने का वर्णन है।

व्याख्या : कवि बसंती हवा के बारे में बताता है। वह अपने मन से जो चाहता है वह करती है। जहाँ चाहती है वहाँ घूमती फिरती है। उसका कोई घरबार नहीं-, न कोई इस तरह घूमने फिरने के पीछे मकसद ही है। कोई काम नहीं है और न ही उसे कोई उम्मीद और चाहत है। उसका कोई दुश्मन और कोई दोस्त भी नहीं। वह अपनी मर्जी की मालिक है। बेफिक्र है। वह अपने नाम की तरह ही हवा हो जाती है। यहाँ बसंत के मौसम में बेफिक्री से बहने वाली हवा को किसी जवान लड़की की तरह बेफिक्र दिखाया गया है।

काव्यगत विशेषता :इन पंक्तियों के छोटेबार-हैं। घर (गाकर सुनाने के लिए) छोटे पद गेय-, आशाइच्छा-, प्रेमीदुश्मन आदि शब्दों के जोड़े बड़े प्रभावशाली और सुंदर हैं। मानवीकरण - अलंकार है।

बोध प्रश्न

- अपनी किन विशेषताओं के कारण वसंती हवा स्वयं को 'अजब मुसाफिर' बताती है?
- बसंती हवा के लिए यहाँ कितने विशेषणों का प्रयोग किया गया है?

जहाँ से चली मैं
जहाँ को गई मैं -
शहर, गाँव, बस्ती,
नदी, रेत, निर्जन,
हरे खेत, पोखर,
झुलाती चली मैं।
झुमाती चली मैं!
हवा हूँ, हवा मै
बसंती हवा हूँ।

शब्दार्थ : पोखर जन रहित = छोटा तालाब निर्जन =, जहाँ कोई इंसान नहीं रहता।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : यहाँ कवि बसंती हवा के घर से निकलते ही उसके बेफिक्री से आगे बढ़ते जाने का शब्द- चित्र प्रस्तुत करता है।

व्याख्या: बसंती हवा बह रही है। कवि अपने शब्दों के द्वारा उस हवा का वर्णन कर रहा है। इस वर्णन की विशेषता यह है कि यह बसंती हवा खुद अपनी कहानी कह रही लगती है। वह कह रही है कि मैं जहाँ से चलकर जहाँ तक गई उसका कोई ओरपार नहीं है। वह -छोर या आर-

झूमते हुए मस्ती से ऐसे चली जा रही है जैसे झूल रही हो और वह एक ही जगह ठहरती भी नहीं है। वह तो शहर, गाँव और बस्ती से निकलकर ऐसे स्थान पर भी पहुँच जाती है जहाँ कोई आदमी या इंसान नहीं दिखाई देता। नदी और उसके रेत को छूते हुए आगे बढ़कर वह हरेभरे - तलैया या तालाबों को खुश करते हुए खुशी खुशी आगे बढ़ती चली -खेतों और छोटे छोटे ताल जाती है। बार बार बसंती हवा का अपने को 'हवा' कहना ध्यान देने लायक है। इससे उसके 'वेग' या तेजी का पता चलता है।

काव्यगत विशेषता : इस पद में कवि ने गाँव के खेतों में तालाबों और नदियों को पार करती बसंती हवा का अच्छा चित्र पेश किया है। मानवीकरण अलंकार है।

बोध प्रश्न

- बसंती हवा कहाँ कहाँ जाती है?
- "हवा हूँ, हवा मैंबार बार कहने का क्या तात्पर्य है "?

चढ़ी पेड़ महुआ,
थपाथप मचाया;
गिरी धम्म से फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोरा,
किया कान में 'कू',
उतरकर भगी मैं,
हरे खेत पहुँची -
वहाँ, गेंहुँओं में
लहर खूब मारी।
पहर दो पहर क्या,
अनेकों पहर तक
इसी में रही मैं!
खड़ी देख अलसी
लिए शीश कलसी,
मुझे खूब सूझी -
हिलायाझुलाया-
गिरी पर न कलसी!
इसी हार को पा,
हिलाई न सरसों,
झुलाई न सरसों,
हवा हूँ, हवा मैं

बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : झकोरा हवा का झोंका =। अलसी एक प्रकार का पौधा =। कलसी = छोटा कलसा)कलश (या घड़ा। पहर =प्रहर, कुछ समय।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : यहाँ बसंती हवा का बेफिक्र और बेलौस स्वभाव का सुंदर चित्रण है। उसकी हरकतें ऐसी हैं कि लगता है यह हवा नहीं कोई अल्हड़ लड़की है जो शैतानी किए जा रही है।

व्याख्या : बसंती हवा बेरोकटोक आगे बढ़ती जा रही है। वह खेतों से होती हुई अब महुआ के पेड़ पर चढ़ जाती है। पेड़ पर धपाधप धमाचौकड़ी मचाकर वह धम से नीचे गिर पड़ती है। फिर आम के पेड़ पर चढ़ जाती है। उसे अपने झोंके से खूब हिलाती है। जैसे शैतान बच्चे कान में 'कूं' की आवाज करके भाग जाते हैं। फिर वह आम की पकड़ में न आते हुए आगे लहलहाते खेतों की तरफ भाग खड़ी होती है। पहले गेहूं की खेतों में खूब उछलकूद करती है। वहाँ उसका मन लगता- है इसलिए एक दो पहर या थोड़े बहुत वक्त में ही वहाँ से नहीं निकल आती। वहवहाँ कुछ देर ठहरती है। उसके बाद उसे पास ही अलसी का खेत दिखाई देता है।

अलसी के पौधे इस प्रकार लहराते दिखाई देते हैं मानो वे अपने सिर पर कलसी या घड़ा रख कर खड़े हों। उन्हें इस तरह खड़ा देखकर हवा को शैतानी सूझती है, वह उसे अपनी तेज हवा के झोंके से अस्तव्यस्त कर देती है। उसके सिर से वह कलसी जैसे गिरने को ही हो जाती - है। पर वह गिरती नहीं बस खूब हिलती है। बसंती हवा को अलसी की कलसी को गिरा न सकने का बहुत मलाल होता है। वह दुखी होकर आगे बढ़ती है और फिर आगे सरसों के खेत मेंं जाकर उसे ज़ोर से हिलाती डुलाती नहीं। मन मारकर आगे बढ़ जाती है। बसंती हवा का झोंका अपनी मस्त चाल से आगे बढ़ जाता है।

काव्यगत विशेषता : यहाँ कवि ने बंसती हवा को एक बेफिक्र लड़की की तरह पेश किया है, इसलिए मानवीकरण अलंकार है। यहाँ उसका मस्ती करना और अलसी से हार कर निराश हो जाने का वर्णन खूब अच्छा लगता है।

बोध प्रश्न

- किस चीज से हारकर बसंती हवा ने सरसों को नहीं हिलाया डुलाया?
- कवि ने बसंती हवा की किन किन अटखेलियों का वर्णन किया है?

मुझे देखते ही
अरहरी लजाई,
मनायाबनाया-,
न मानी, न मानी,

उसे भी न छोड़ा -
पथिक आ रहा था,
उसी पर ढकेला;
हँसी ज़ोर से मैं,
हँसी सब दिशाएँ,
हँसे लहलहाते
हरे खेत सारे,
हँसी चमचमाती
भरी धूप प्यारी;
बसंती हवा में
हँसी सृष्टि सारी!
हवा हूँ, हवा मैं
बसंती हवा हूँ!

शब्दार्थ : पथिक = राहगीर, पथ या रास्ते पर चलने वाला। सृष्टि = निर्माण, रचना, उत्पत्ति, पैदाइश, कायनात।

संदर्भ : प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल द्वारा रचित 'बसंती हवा' शीर्षक कविता का अंश हैं।

प्रसंग : इस कवितांश में दूसरे अंशों की तरह ही केवल बसंती हवा ही 'लड़की' की तरह दिखाई नहीं देती, दूसरी फसलें भी वैसी ही हैं। फसलें तो क्या धूप और सारी सृष्टि ही खुश है।

व्याख्या : बसंती हवा के इस तरह बेफिक्र होकर उछल कूद मचाने की वजह से चारो ओर खुशी का माहौल है। खेत में खड़ी अरहर अपनी तरफ बसंती हवा को आते देखकर शर्म से निगाह नीची कर लेती है। आंखे झुका लेती है। पर बसंती हवा ने उसे भी न छोड़ा। कोई राहगीर उस वक्त वहाँ से गुजर रहा था। बसंती हवा ने अरहर को अपने जबर्दस्त वेग से ऐसा धक्का दिया कि वह बेचारी उस पर जा गिरी। अरहर की मासूमियत और मजबूरी देखकर बसंती हवा को बहुत हँसी आई।उसके ज़ोर से हँसने से चारो तरफ खुशियाँ बिखर गईं। सारी कायनात खुशी से झूम उठी। खेत खलिहान खुश हो गए। चमचमाती धूप चहकने लगी। चारों तरफ बसंती हवा ने खुशियाँ ही खुशियाँ बिखेर कर रख दी।

काव्यगत विशेषता: बसंती हवा के साथ साथ ही खेतखलिहान-, धूप, फसल और सब कुछ खुशी से झूम उठे। मानवीकरण अलंकार का यहाँ भी प्रयोग करके कवि ने अपनी कविता में चार चाँद लगा दिए हैं।

बोध प्रश्न

- वसंती हवा ने ऐसा क्या कर दिखाया कि सारी सृष्टि ही हँस पड़ी?

- बसंती हवा के चलने पर कौन कौन हँसने लगे?

8.3.4 समीक्षात्मक अध्ययन

आपको यह पता है कि छह ऋतुओं में से एक वसंत या बसंत में बहने वाली हवा 'बसंती हवा' अपने आप में बहुत अनोखी है। वसंत को ऋतुओं का राजा कहा जाता है। बसंती हवा इसी कारण से सबको प्रिय है ही। कवि की इस कविता में शब्दों के स्तर पर भी यही तो कहा गया है कि बसंती हवा बावली, निडर और मस्त है। उसे किसी बात की चिंता या फिक्र नहीं। वह एक मुसाफिर की तरह जहाँ चाहे वहाँ घूमती है और जिससे चाहे छेड़खानी करती चलती है। उसकी बेलौस हरकतों को देखकर सारे खेत, चमचमाती धूप और पूरी सृष्टि हँसने लग जाती है। पर अर्थ के स्तर पर इस कविता में कुछ और भी विशेषताएँ हैं जो इसे बार बार पढ़ने के लिए आकर्षित करती हैं।

प्रकृति चित्रण की दृष्टि से जब आप इस कविता को देखते हैं तो सबसे पहले यह पाते हैं कि यहाँ कवि के द्वारा बसंती हवा का मानवीकरण किया गया है। यह बात बिलकुल स्पष्ट है। पर इसके अतिरिक्त और क्या है जो इस कविता को एक क्लासिक कविता के रूप में स्थापित कर देती है।ऐसी सरलता कि कक्षा छह के विद्यार्थी भी पढ़ते हैं। इतनी अर्थवत्ता कि बी.ए. और एम.ए. के विद्यार्थी ही नहीं बड़े बड़े विद्वान भी कविता को बार बार पढ़ते हैं और इसके काव्य सौंदर्य पर मुग्ध हो जाते हैं। 'बसंती हवा' कविता में प्रकृति और परिवेश का आपसी संबंध और संवाद है। कवि केदार यहाँ छायावादी कवि के समान आत्मविभोर होकर अपने आवेग को शब्द बद्ध नहीं कर रहा। उसके लिए 'बसंत' केवल सौंदर्य नहीं है।

केदारनाथ अग्रवाल के द्वारा रचित यह गीत वास्तव में उनके नाम का पर्याय बन गया है। बसंती हवा केवल वसंत ऋतु में बहने वाली शीतल मंद सुगंध मलय समीर नहीं है, वह मानो कोई अल्हड़ बाला है जो मस्त-मौला तो है ही खिलंदड़ी भी कम नहीं है। बसंती हवा में जिस संसार और ग्रामीण पृष्ठभूमि और ग्राम्य संस्कार का चित्रण है वह हिंदी कविता में इस तरह पहले कभी नहीं देखा गया था। प्रकृति के साथ ऐसा तादात्म्य और साहचर्य स्थापित करना अपने आप में अभूतपूर्व है। कविता के माध्यम से पाठकों को उस उल्लास और उत्साह का अनुभव कराना किसी कालिदास के बस की ही बात थी।

केदारनाथ अग्रवाल की कविता में यह वर्णन परोक्ष है। इसका आभास होता है। लगता है वसंत कुमारी का एक रूप-स्वरूप पाठक के मानस-पटल पर उभर रहा है। वह किसी चंचल हिरनी की तरह मस्ती भरी चली जा रही है। लगेगा आप कोई हिंदी फिल्म देख रहें हैं और नायिका पंजाब के खेतों में घूम रही है और पाठक के रूप में आप किसी नायक के समान मंत्रमुग्ध होकर रह गए हैं। जहाँ जहाँ वसंती हवा जाती है आपके नयन भी उसका पीछा करते हैं। यह कमाल है कवि की लेखनी का कि मानवीकारण 'अलंकार' मात्र रहकर नहीं बैठ जाता

वह साकार हो जाता है। आपको तो याद न होगा पर अपने दादा जी की सहायता से "पतली कमर है" (गीतकार : शैलेंद्र, फिल्म : बरसात) गाने का पूरा अंतरा आप आज भी सुन सकते हैं-

मैं चंचल मदमस्त पवन हूँ, झूम झूम हर कली को चूमूँ।

बिछड़ गई मैं घायल हिरनी, तुमको ढूँढूँ बन बन घूमूँ।

केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति को सैलानी की नहीं, किसान की नजर से देखते हैं। वे अपने लिए नहीं बल्कि 'जन' के लिए लिखते हैं। प्रकृति चित्रण करती कविताएँ प्रायः सभी कवि लिखते हैं। लेकिन उनका प्रकृति से संबंध अलग-अलग होता है। स्वतंत्रता और स्वच्छंदता जन जीवन में दिखाई न देने के कारण छायावादी कवि उसे प्रकृति की उन्मुक्तता में खोजते थे। किंतु स्वतंत्र भारत के स्वतंत्र कवि मानव को प्रकृति के और अधिक पास ले आते हैं।

छायावादी कवि के समान केदार नाथ अग्रवाल प्रगतिवादी कवि के समान समाज को हर समय साधते रहे हैं। छायावादी कविता और प्रगतिवादी कविता दोनों में "प्रकृति" है। किन्तु छायावाद में उसका समाज से कोई विशेष लेना देना नहीं, प्रगतिवादी कवि उसे सामाजिक संबंधों से ओतप्रोत करता है। बसंती हवा में 'हवा' मामूली हवा नहीं है। वह तो फागुन के महीने में हुडदंग मचाती, कर्मठ और बेलौस मानवी बन जाती है। इसी कारण तो केदारनाथ अग्रवाल लोक-कवि और लोक के कवि हैं। इसी कारण वे प्रगतिशील कवियों में भी अलग पहचाने जाते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने बसंती हवा को जीवंत करने के लिए जीवन से जोड़ा है क्योंकि कवि की आस्था और कवि का विश्वास बाह्य जगत से प्रकृति को एकाकार करने का रहा है। कवि ने "फूल नहीं रंग बोलते हैं" में लिखा है, "मैंने प्रकृति को चित्र रूप में देखा है, उसके संपर्क में जीने के लिए मुझे संघर्ष नहीं करना पड़ा। अतएव प्रकृति का मेरा निरूपण चित्रोपम निरूपण है। उसमें कलाकारिता है। शब्दों का सौंदर्य है। ध्वनियों की धारा है। कहीं कहीं क्लासकीय अभिव्यक्ति है। 'बसंती हवा' में अवश्य गति और वेग है।"

बसंत की प्रकृति एक ऐसे मदमस्त संत या औघड़ की है जो राग-विराग, सुख-दुख, जय-पराजय आदि जीवन के द्वंद से प्रभावित नहीं होता। अपना रास्ता खुद बनाता है और उस पर चलते हुए बाधाओं को अलमस्त होकर पार करता चला जाता है। बसंती हवा भी बस कुछ ऐसी ही है।

84. पाठ सार

'बसंती हवा' शीर्षक से लिखी गई केदारनाथ अग्रवाल की इस कविता में प्रकृति का सुंदर चित्रण है। छह ऋतुओं में से एक 'वसंत' में बसंत की हवा का बहना एक सामान्य बात है। पर इस कविता में यह हवा एक बावली, निडर, मस्तमौला, बेफिक्र बाला के समान घूम रही (कन्या)

है। वह घूमते घूमते शहर, गाँव, बस्ती, नदी, रेत, निर्जन, हरे खेत, पोखर आदि को लांघते हुए चलती चली जाती है। कभी वह महुआ के पेड़ पर चढ़तीगिरती है और कभी वह आम -उतरती- के पेड़ पर चढ़कर बच्चों की तरह उसके कानों में'कू' की आवाज करके भाग जाती है। वह गेहूँ के खेत में जाती है और देर तक अपने आपको लहराती है। अलसी की खड़ी फसल को हिलाती है पर हार कर आगे बढ़ खेत में से निकलते हुए अरहर को एक पथिक पर ही अपने ज़ोर से ढकेल देती है। इस चंचल हवा की शैतानियों को देखकर लहलहाते खेत, चमकती धूप और सारी धरती खिलखिला उठती है। बसंती हवा से सारा संसार आनंदित हो जाता है। केदारनाथ अग्रवाल की यह कविता प्रकृति चित्रण के लिहाज से अनमोल और बेजोड़ है।

85. पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति को सैलानी की नहीं किसान की नजर से देखते हैं।
2. में मानवी 'बसंती हवा'कारण के माध्यम से कवि ने सांकेतिक अर्थ का चमत्कार दिखाया है।
3. इस कविता में प्रकृति और परिवेश का आपसी संबंध और संवाद प्रकट हुआ है।
4. केदारनाथ अग्रवाल की वस्तुतः कर्मठ और बेलौस किशोरी है। 'बसंती हवा'
5. गति और वेग इस कविता की मुख्य आकर्षण शक्ति है।

86. शब्द संपदा

1. अर्थवत्ता = पदों, वाक्यों, शब्दों आदि की वह अवस्था जिसमें वे विशिष्ट अर्थ या आशय से युक्त होते हैं।
2. आत्मविभोर =जो अपनी ही सुंदरता या गुणों से अभिभूत हो; आत्ममुग्ध।
3. उन्मुक्तता =खुलापन, स्वतंत्रता, आज़ादी।
4. क्लासकीय =आदर्श और संतुलित, श्रेष्ठ
5. तादात्म्य = दो चीज़ों का परस्पर अभिन्न होने का भाव; अभेद मिश्रण या संबंध; अभिन्नता।
6. परोक्ष =प्रत्यक्ष का विलोम परोक्ष है। परोक्ष का मतलब है जो सीधे से न हो या न किया जाए।
7. मानवीकरण प्रकृति या जड़ पदार्थों में मनुष्य के गुणों का आरोप करके चेतन के = समान उनकी चेष्टाओं का चित्रण मानवीकरण कहलाता है।
8. मुग्धा अल्हड़ औ =र सदा खुश रहने वाली कन्या।
9. साहचर्य = साथ साथ रहने का भाव

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. बंसती हवा का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
2. अपना परिचय देती हुई 'बसंती हवा' अपनी किन-किन विशेषताओं का उल्लेख करती है?
3. प्रकृति के मानवीकरण की दृष्टि से 'बसंती हवा' कविता की व्याख्या कीजिए।
4. "बसंती हवा में 'हवा' मामूली हवा नहीं है।" इस कथन का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. बसंत ऋतु की किन किन फसलों की ओर कवि ने संकेत किया है?
2. बसंती हवा एक चित्र-कविता है। क्यों? और कैसे?
3. बसंती हवा कविता के आधार पर गाँव और खेत खलिहानों का वर्णन कीजिए।
4. केदारनाथ अग्रवाल "बसंती हवा" कविता के द्वारा क्या संदेश देना चाहते हैं?

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए -

1. केदारनाथ अग्रवाल को किस प्रकार का कवि माना जाता है?

A. केवल छायावादी कवि B. धार्मिक और आध्यात्मिक कवि

C. दरबारी कवि **D. प्रगतिवादी और प्रकृति के कवि**

2. कविता में बसंती हवा ने स्वयं को कैसा मुसाफिर बताया है?

A. साधारण मुसाफिर B. थका हुआ मुसाफिर

C. दुखी मुसाफिर **D. अजब मुसाफिर**

3. हवा ने महुआ के पेड़ पर चढ़कर क्या शोर मचाया?

A. थपाथप B. धम्म C. कलकल- D. सरसर-

4. आम के पेड़ के कान में क्या कहकर हवा भाग खड़ी हुई?

A. कू B. जाओ C. सुनो D. चूँ

5. अलसी के पौधे के सिर पर क्या रखा हुआ बताया गया है?

A. मुकुट B. फूल **C. कलसी (छोटा घड़ा)** D. टोपी

6. हवा ने सरसों को क्यों नहीं हिलाया-डुलाया?

A. उसे सरसों पसंद नहीं थी **B. अलसी से हार जाने के कारण**

C. वह थक गई थी D. सरसों बहुत भारी थी

7. हवा ने अरहरी (अरहर) को किसके ऊपर ढकेला?

A. पथिक पर (राहगीर) B. किसान पर C. आम के पेड़ पर D. नदी में

8. कविता में 'निर्जन' शब्द का क्या अर्थ है?

A. हराभरा जंगल- B. पानी से भरा हुआ

C. बहुत भीड़ वाला स्थान **D. जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो**

9. हवा किस खेत में 'अनेकों पहर' तक रुकी रही?

A. महुआ के पेड़ पर B. शहर की गलियों में C. सरसों के खेत में **D. गेहूँ के खेत में**

10. बसंती हवा के चलने पर पूरी सृष्टि को कैसा दिखाया गया है?

A. हँसती हुई और आनंदित B. शांत और गंभीर C. धूल से भरी हुई D. डरी हुई

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. केदारनाथ अग्रवाल रचना संचयन : सं. ज्योतिष जोशी

2. केदारनाथ अग्रवाल संचयिता : सं. अशोक त्रिपाठी

परीक्षा प्रश्नपत्र नमूना

MAULANA AZAD NATIONAL URDU UNIVERSITY

PROGRAMME: B.A - HINDI (ILH-2)

IV – SEMESTER EXAMINATION –

TITLE & PAPER CODE : आधुनिक हिंदी काव्य (BNHN401AET)

TIME: 2 HOURS TOTAL MARKS: 35

यह प्रश्न पत्र तीन भागों में विभाजित हैं- भाग -1, भाग -2 और भाग - 3 प्रत्येक प्रश्न के उत्तर निर्धारित शब्दों में दीजिए।

भाग – 1

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए।** **5X1=5**

i. केदारनाथ अग्रवाल को मुख्यतः किस वाद से जोड़ा जा सकता है –

A. प्रयोगवाद B. छायावाद C. प्रगतिवाद D. समाजवाद

ii. सुभद्रा कुमारी चौहान की कौन सी रचना 'कहानी संग्रह' की श्रेणी में आती है?

A. सभा का खेल B. मुकुल C. त्रिधारा D. बिखरे मोती

iii. जलियाँवाला बाग में 13 अप्रैल, 1919 को लोग किस त्योहार के दिन एकत्रित हुए थे?

A. लोहड़ी B. दीपावली C. बैसाखी D. होली

iv. दिनकर जी ने अपनी उच्च शिक्षा (B.A. Honors) किस विषय में पूरी की थी?

A. राजनीति विज्ञान B. दर्शनशास्त्र C. हिंदी D. इतिहास

v. आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार केदारनाथ अग्रवाल का काव्य किस साहित्यिक 'वाद' की अकेली उपलब्धि है?

A. प्रगतिवाद B. नई कविता C. प्रयोगवाद D. छायावाद

भाग – 2

निम्नलिखित आठ प्रश्नों में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 200 शब्दों में देना अनिवार्य है । **5X4 =20**

2. जलियाँवाला बाग़ में पेड़ों कि स्थिति का वर्णन कीजिए।
3. सुभद्रा कुमारी चौहान का परिचय संक्षिप्त में बताएं।
4. हालावादी काव्य का क्या अर्थ है?
5. महादेवी वर्मा के काव्य के अतिरिक्त और किन विधाओं में निपुण थी ?
6. 'बंसंती हवा' कविता की रचना का क्या उद्देश्य है?
7. दिनकर के काव्य में निहित राष्ट्रीय भावना पर प्रकाश डालिए।
8. 'रशिम रथी' का मूल उद्देश्य क्या है ?
9. किसानी संवेदना के कवि के रूप में केदारनाथ अग्रवाल का परिचय पस्तुत कीजिए।

भाग- 3

निम्नलिखित दो प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर दीजिए । प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों में देना अनिवार्य है । **1X10=10**

10. आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि और उसके नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
11. 'सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना की सबसे प्रबल संवाहिका रही हैं।' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

*****